विशद
संध्या वन्दन

(श्री भक्तामर जी, कल्याण मंदिर जी, श्री सम्मेद शिखर जी चौंसठ ऋद्धी विधान, णमोकार मंत्र विधान दीपार्चना)

रचयिता :

प. पू. क्षमामूर्ति 108 आचार्य श्री विशदसागर जी

कृति – **विशद संध्या वन्दन विधान**

रचयिता – प. पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति
आचार्य श्री 108 विशद सागर जी महाराज

संस्करण – प्रथम–2018, प्रतियाँ – 1000

सम्पादन . मुनि 108 श्री विशाल सागर जी महाराज

सहयोग – आर्यिका श्री भक्तिभारती माताजी
क्षुल्लिका श्री वात्सल्य भारती माताजी

संकलन – ज्योति दीदी–9829076085, आस्था दीदी–9660996425
सपना दीदी–9829127533, आरती दीदी–8700876822

कम्पोजिंग – आरती दीदी–8700876822

प्राप्ति स्थल – 1. सुरेश जैन सेठी, शांति नगर, जयपुर – 9413336017
2. हरीश जैन, दिल्ली – 9136248971
3. महेन्द्र कुमार जैन, सैक्टर–3 रोहिणी – 09810570747
4. पदम जैन, रेवाड़ी – 09416888879
5. श्री सरस्वती पेपर स्टोर, चांदी की टकसाल, जयपुर
मो.: 8114417253

पुण्यार्जक :

मुद्रक – बसन्त जैन, श्री सरस्वती प्रिन्टिंग इण्स्ट्रीज, SBI के नीचे,
चांदी की टकसाल, जयपुर – मो.: 8114417253
ईमेल : jainbasant02@gmail.com

मूल्य – 70/– रु. मात्र

''दीप से दीप जलाते चलो
आतम की ज्योती जगाते चलो''

वीरसेन स्वामी ने ध्वला पुस्तक मे लिखा है कि वज्र के आघात से जैसे पर्वत सैकड़ो टुकड़ो में बिखर जाता है। वैसे ही जिनेन्द्र देव के दर्शन से ''निध्ती और निकाचित'' मिथ्यात्व तक का नाश हो जाता है।

भक्त भगवान की भक्ति करते समय भगवान के गुणस्मरण के साथ-साथ स्वयं के आत्म गुणों को जानने, पहचानने और प्राप्त करने का प्रयास करता है। इसलिए वह अपने मन से प्रभु की श्रद्धा वचन से गुणस्तवन और काय से उसी रुप में क्रिया करता है।

भक्ति भक्त को क्रम क्रम से भगवान बनाने की प्रक्रिया है। भक्ति की सरिता मे गोते लगाने वाला ही अपने परमात्मा का दर्शन कर पाता है।

भक्ति करने वाला शब्दों पर छन्दों पर ध्यान नही देता। कभी-कभी तो वह इतना आनंद विभोर हो जाता है कि स्वयं को भी भूल जाता है। और इसी आनन्द का नाम है भक्ति इसी भक्ति रस मे विभोर होकर वर्तमान के सर्वाधिक 215 विधानों के रचियता आचार्य श्री विशद सागर जी महाराज ने प्रस्तुत सांध्य वंदना के साथ भक्तामर कल्याण मंदिर, स्तोत्र श्री सम्मेद शिखर की टोंक वंदना, चौंसठ ऋद्धी विधान, णमोकार मंत्र विधान आदि की पद्यानुवाद रूप मे रचना की है प्रत्येक काव्य के समापन पर प्रत्येक मंत्र के साथ दीप प्रज्ज्वलन कर प्रभु भक्ति मे समर्पित करना है।

दीप प्रज्ज्वलन के साथ अपनी आत्म ज्ञान की ज्योति भी प्रकट हो केवलज्ञान लक्ष्मी की प्राप्ति हो आदि भावना के साथ अज्ञानान्धकार हेतू क्रम-क्रम से दीप की क्रमबद्ध। श्रृंखला तैय्यार करनी चाहिए। संध्या आरती कर संध्या वन्दना करनी चाहिए। संघस्थ आरती दीदी ने पुस्तक कम्पोज करने मे महत्त्वपूर्ण सहयोग दिया। उन्हें इस कार्य के लिए शुभाशीष गुरुदेव की लेखनी आगे भी इसी तरह अनवरत नई-नई रचनाओं द्वारा प्रभु भक्ति मे अनवरत चलती रहे इसी भावना के साथ नमोस्तु-3।

मुनि विशाल सागर जी (संघस्थ)
वर्षायोग 2018 उस्मानपुर-दिल्ली

संध्या वंदन

कर्मों की 6 अवस्थायें हैं मंद, मंदतर, मंदतम, तीव्र, तीव्रतर और तीव्रतम। मंद, मंदतर कर्म को भक्ति पूजा जाप स्तुति स्तोत्र आदि भावपूर्वक किये गये अनुष्ठान से टाला जा सकता है। सावधानी वरत कर दूर कर सकते है जैसे चौराहे पर दीपक रखा है और मंद-मंद हवा चल रही है। दीपक को बुझने से बचाने के लिए हाथ की आड़ लगा दें तो दीपक बुझेगा नहीं। इसी तरह मंद, मंदतर कर्म को भक्ति जाप से खपाया जाता है। किन्तु जब तीव्र तीव्रतर कर्म का उदय हो तो दीपक बुझने से कोई बचा नहीं सकता। तीव्र कर्मों के फल को भोगना ही पड़ता है उसे धर्म के साथ शान्ति पूर्वक भोगने में ही भलाई है। पूर्व में बांधे हुए कर्म तो उदय मे आऐंगे ही।

अब उसे रोकर भोगे या हंसकर यह हमारे ऊपर निर्भर करता है। यदि कर्मोदय में फिर क्रोधादि किया तो सोचना पुराना तो भोग ही रहे है नया और बंध कर लिया।

परम पूज्य आचार्य श्री विशद सागर जी महाराज ने अपने उपयोग को प्रभु भक्ति में लगाते हुए भक्तों के कल्याणार्थ प्रस्तुत संध्या वन्दना पुस्तक तैयार की है भक्तामर कल्याण मंदिर स्तोत्र सम्मेद शिखर वन्दना आदि बोलते समय प्रत्येक काव्य के अन्त में प्रभु के समक्ष द्वीप प्रज्ज्वलन कर भक्ति प्रदर्शित की गई है।

जिनालय में 25, 44 या 48 दिन तक लगातार शाम के समय काव्य बोलते हुए भक्ति भाव से दीप प्रज्ज्वलित कर प्रभु भक्ति में समर्पित करना चाहिए। यहाँ सम्मेद शिखर के 25, कल्याण मंदिर के 44, भक्तामर के 48 काव्य दिए है जो पाठ करना हो उसी काव्य की संख्या के अनुसार दिनों की संख्या निर्धारित कर समापन पर भक्तिभाव से उन्हीं काव्यों का भव्य संगीतमय विधान भी सम्पन्न करना चाहिए।

लगातार नही करना हो तो कभी भी किसी भी दिन कही पर भी अपने आराध्य का चित्र आदि लगाकर उनके समक्ष भी विशुद्ध भावों से द्वीप प्रज्ज्वलित कर अथाह पुण्य का अर्जन कर सकते है।

आशा है अधिकाधिक संख्या में प्रस्तुत पुस्तक का प्रयोग संध्या वंदन के समय कर भक्तजन अधिकाधिक पुण्यार्जन करें। पुनश्चः दीक्षा गुरु श्री विशद सागर जी के श्री चरणों में नमोस्तु-3।

ब्र. आरती दीदी (संघस्थ)

संध्या वंदन

दोहा - संध्या वन्दन हम करें, भक्ति भाव के साथ।
विशद योग से जिन चरण, झुका रहे हम माथ।।

(चौपाई)

हे सर्वज्ञ! जगत हितकारी, तुम हो जन-जन के उपकारी।
देवों के प्रभु देव कहाते, इस जग में प्रभु पूजे जाते।।
भव्य जीव तव चरणों आवें, संध्या वन्दन कर हर्षावें।
घृत के पावन दीप जलावें, विशद भाव से आरति गावें।।1।।
भाव से गावें भजनावलियाँ, सुनके खिलें हृदय की कलियाँ।
श्री जिनवर का ध्यान लगावें, अतिशयकारी महिमा गावें।।
श्रावक घर से मंदिर आवें, ईर्यापथ से चलते जावें।
मन ही मन स्तुतियाँ गावें, जिन भक्ती के भाव जगावें।।2।।
पग धोवें जिनगृह के द्वारें, अपने जो निज भाव सवारें।
ॐजय-जय-जय बोलें भाई, निःसहि निःसहि निःसहि गाई।।
श्रद्धा से फिर शीश झुकाएँ, आगे दांया कदम बढ़ाएँ।
कर प्रवेश जिनगृह में जाएँ, हाथ जोड़कर दर्शन पाएँ।।3।।
त्रय प्रदक्षिणा करके आवें, बैठ गवासन शीश झुकावें।
कायोत्सर्ग करें शुभकारी, 'विशद भाव' से मंगलकारी।।
कोई स्वाध्याय करें करावें, कोई जप सामायिक पावें।
कोई प्रभु का ध्यान लगावें, कोई भाव से महिमा गावें।।4।।
तीन लोक तिहुँ जग के ज्ञाता, अर्हत् हैं जन-जन के त्राता।
सिद्ध अष्ट कर्मों के नाशी, होते सिद्ध शिला के वासी।।
पंचाचार के धारी गाए, परमेष्ठी आचार्य कहाए।
अंग पूर्व के धारी जानो, उपाध्याय परमेष्ठी मानो।।5।।
विषयाशा त्यागी कहलाए, रहित परिग्रह साधु कहाए।
रत्नत्रय शुभ धर्म कहाए, दश सोपान धर्म के गाए।।
जैनागम जिनवर की वाणी, जो है जन-जन की कल्याणी।
कृत्रिमा-कृत्रिम चैत्य कहाएँ, वीतरागता जो दर्शाएँ।।6।।

चैत्यालय जिनगृह कहलाएँ, जिनबिम्बों युत शोभा पाएँ।
यह नवदेव पूज्य कहलाते, जिन पद में हम शीश झुकाते।।
जिनके हम अतिशय गुण गाएँ, भक्ती करके पुण्य कमाएँ।
जिसके फल से शिव पद पाएँ, सिद्ध शिला पर धाम बनाएँ।।7।।

दोहा - जिन अर्चा कर भाव से, करते जो विश्राम।
विशद प्राप्त करते सभी, प्राणी वे शिव धाम।।

।। इत्याशीर्वादः।।

श्री सिद्ध अर्चा

समस्तघातिमर्दनं, सुरेन्द्रवृन्दमुज्ज्वलं।।
नवीनमालतीदलैर्-, यजामि मुक्तिसिद्धये।। 1।।
गुणाष्टकाद्यलंकृतं, समस्तसिद्धनायकम्।
नमेरुपारिजातकैर्-यजामि मुक्तिसिद्धये।। 2।।
अलंघ्यमुत्तमाधिपं, दयालुसूरिवृन्दकम्।
प्रफुल्लमल्लिपुष्पकैर्-यजामि मुक्तिसिद्धये।। 3।।
समस्त शास्त्रदेशकं, चरित्रपात्रदेशकम्।
विकासि केतकीदलैर्-यजामि मुक्तिसिद्धये।। 4।।
चिदर्थभावनापरं, सुसाधुसाधुवन्दकं।
सुवर्णवर्णचम्पकैर्-यजामि मुक्तिसिद्धये।। 5।।
धर्म सौख्यदायकं, अभीष्टफल प्रदायकं।
कनेर पुष्पसद्यकैर्-यजामि मुक्तिसिद्धये।। 6।।
अरिष्ट कर्म नाशकम्-ज्ञान विशद भाषकम्।
कदम्बकुन्द पुष्पकैर्-यजामि मुक्तिसिद्धये।। 7।।
जिनेन्द्र बिम्ब लायकं, विशिष्ट सिद्धिदायकम्।
गुलाब पद्म पुष्पकैर्-यजामि मुक्तिसिद्धये।। 8।।
विशद जैन मंदिरं,-मुक्ति निलय सुन्दरं।
मुनीन्द्र वृन्द्र सेवतैर्:-यजामि मुक्तिसिद्धये।। 9।।

श्री आदिनाथ स्तोत्र

ऋषभ जिनेन्द्र शतेन्द्र सुपूजित, अतिशय कारी पुण्य जगाए।
आदि जिनेश सुरेश कहे, सुर इन्द्र विशद जयकार लगाए।।
धर्म प्रवर्तन आप किए, षट् कर्मों का सन्देश सुनाए।
आदि प्रभो! जय आदि प्रभो!, ग्रह शांति करें गुरु दोष नशाए।।1।।
पुण्य सुयोग से पूरव भव में, वज्रजंघ चक्री पद पाए।
ऋद्धि धनी मुनि को प्रभु जी, वन में अतिशय आहार कराए।।
वानर सूकर शेर नकुल यह, अनुमोदन कर हर्ष मनाए।
आदि प्रभो!.....।। 2।।
भोग भूमिज यह जीव बने सब, स्वर्ग लोक को आप सिधाए।
स्वर्गों के सुख भोग किए फिर, मर्त्य लोक में जन्म सुपाए।।
तीर्थेश बने वृषभेष सभी, पशु सुत बन के तिन गृह उपजाए।
आदि प्रभो!.....।। 3।।
चक्री से मुनिराज बने फिर, सोलह कारण भाव विचारे।
कल्पातीत अतीत रहा प्रभु, सर्वार्थ सिद्धी में भव धारे।।
तेंतीस सागर आप रहे फिर, चयकर अंतिम गर्भ में आए।
आदि प्रभो!.....।। 4।।
श्री गज बैल मृगेन्द्र रमा द्वय, माल दिवाकर चन्द्र प्रकाशी।
मीन कलश ह्रद सिन्धु सिंहासन, देव विमान फणीद्र निवासी।।
रत्न-राशि निर्धूम अग्नी शुभ, सोलह सपने मात को आए।
आदि प्रभो!.....।। 5।।
नगर अयोध्या जन्म लिए तब, हस्ति सजा हँसते मुस्कराए।
चाले सनसन, नाचे छमाछम, गद्गद् हो मद छोड़ के आए।।
भव्य महा अभिषेक किए सुर, महिमा को जिसकी कह पाए।
आदि प्रभो!.....।। 6।।
कंकण कुण्डल आदिक ले जिन, बालक को सचि ने पहराए।
इन्द्र स्वयं ही बालक बन प्रभु, के संग क्रीड़ा करने आए।।
युवराज बने, जिनराज महा, मण्डलेश्वर के पद को प्रभु पाए।
आदि प्रभो!.....।। 7।।
यह संसार असार विचार, सुकेशलुंच कर संयम पाए।
भेद विज्ञान जगाए प्रभु! तब, छैः महिने का ध्यान लगाए।।
कर्म किए चउ घात विशद! फिर, पावन केवल ज्ञान जगाए।
आदि प्रभो!.....।। 8।।
कर विहार दिग्देश देशान्तर, अष्टापद गिरि पे प्रभु आए।
योग निरोध किए चौदह दिन, कर्म अघाति आप नशाए।।
नित्य निरंजन ज्ञान शरीरी, सिद्ध शिला पे धाम बनाए।
आदि प्रभो!.....।। 9।।

श्री भक्तामर विधान

"माण्डला"

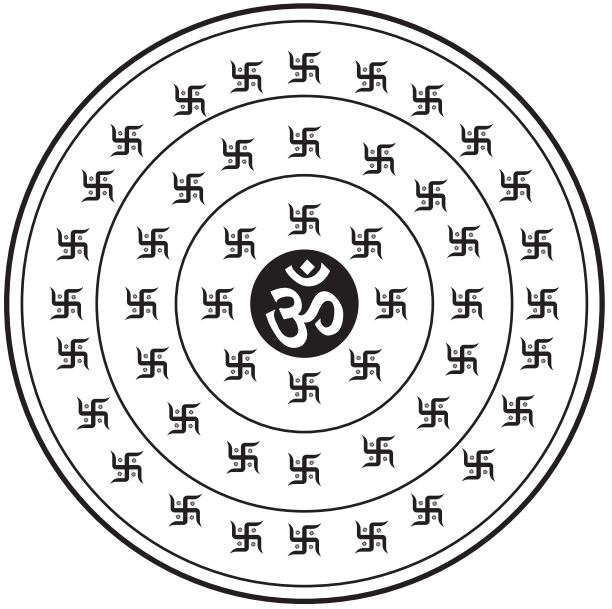

मध्य में - ॐ
प्रथम वलय - 8
द्वितीय वलय - 16
तृतीय वलय - 24
कुल वलय - 48 अर्घ्य

रचयिता :
प. पू. आचार्य विशदसागर जी महाराज

भक्तामर विधान पूजा

(स्थापना) (दोहा)

भक्तामर स्तोत्र का, करते हम गुणगान।
आह्वानन करते हृदय, पाने पद निर्वाण।।

ॐ ह्रीं सर्व कर्म बंधन विमुक्त, सर्व मंगलकारी धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं, अत्र मम् सन्निहितौ भव वषट् सन्निधिकरणं।

(मोतियादाम छन्द)

भराया झारी में शुचि नीर, मिटाने को लाए भव पीर।
जिनेश्वर आदिनाथ महाराज, पूजते पाने शिव साम्राज्य।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्र जलं निर्वपामीति स्वाहा।

घिसाया चंदन यह गोसीर, मिले अब मुझको भव का तीर।
जिनेश्वर आदिनाथ महाराज, पूजते पाने शिव साम्राज्य।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्र चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

शशि सम तन्दुल लाए जीर, मिले अक्षय पद की तासीर।
जिनेश्वर आदिनाथ महाराज, पूजते पाने शिव साम्राज्य।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्र अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

सुगन्धित पुष्पित लाए फूल, काम का रोग होय निर्मूल।
जिनेश्वर आदिनाथ महाराज, पूजते पाने शिव साम्राज्य।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्र पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

बनाये ताजे यह पकवान, मुझे हो समता का रस पान।
जिनेश्वर आदिनाथ महाराज, पूजते पाने शिव साम्राज्य।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्र नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

किया दीपक से यहाँ प्रकाश, मोह तम का हो सारा नाश।
जिनेश्वर आदिनाथ महाराज, पूजते पाने शिव साम्राज्य।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्र दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

जलाते धूप अग्नि में आज, नशे कर्मों का सकल समाज।
जिनेश्वर आदिनाथ महाराज, पूजते पाने शिव साम्राज्य।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्र धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

चढ़ाते ताजे फल भगवान, मोक्षफल हमको मिले महान।
जिनेश्वर आदिनाथ महाराज, पूजते पाने शिव साम्राज्य।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्र फलं निर्वपामीति स्वाहा।

बनाकर अर्घ्य भराया थाल, चढ़ाते भक्ति से नत भाल।
जिनेश्वर आदिनाथ महाराज, पूजते पाने शिव साम्राज्य।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्र अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- शांती धारा दे रहे, हो शांती भगवान।
पूजा का फल प्राप्त हो, हो आतम कल्याण।।

शान्तये शांतिधारा...

दोहा- पुष्पांजलि करते विशद, लेकर सुरभित फूल।
सुख शांति सौभाग्य हो, कर्म होंय निर्मूल।।

पुष्पांजलि क्षिपेत...

श्री भक्तामर पाठ

सर्व विघ्न विनाशक

भक्तामर-प्रणत मौलि-मणि-प्रभाणा-
मुद्योतकं-दलित-पाप-तमो वितानम्।
सम्यक्-प्रणम्य-जिन-पाद-युगं-युगादा-
वालम्बनं-भवजले-पततां-जनानाम्।।1।।

सर्वोपद्रवनाशक मन्त्र – ॐ ह्रां, ह्रीं, ह्रूं श्रीं क्लीं ब्लूँ, क्रौं ॐ ह्रीं नमः स्वाहा।

भक्त चरण में झुकते आके, मुकुट सुमणि की कांति प्रधान।
पाप तिमिर सब नाशनहारी, दिव्य दिवाकर ज्ञान महान।।
भव समुद्र में पतित जनों को, देते हैं जो आलम्बन।
आदिनाथ के चरण कमल में, करते हम शत् शत् वन्दन।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं अवधिज्ञान बुद्धि-ऋद्धये अवधिज्ञान बुद्धि ऋद्धि प्राप्तेभ्यो नमो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / दीप प्रज्ज्वलनम् करोमि।।1।।

सकल रोग नाशक

यः संस्तुतः सकल-वाङ्मय-तत्त्व-बोधा-
दुद्भूत-बुद्धि-पटुभिः सुर-लोक-नाथैः।

स्तोत्रैर् जगत्-त्रितय-चित्त-हरै-रुदारैः
स्तोष्ये किलाह-मपि तं प्रथमं जिनेन्द्रम्।।2।।

मस्तक-पीड़ा-नाशक-मन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं नमः स्वाहा।

सकल तत्त्व के ज्ञाता अनुपम, सकल बुद्धि पटु धी धारी।
इन्द्रराज भी स्तुति करता, नत होकर जन मन हारी।।
हैं स्तुत्य प्रथम जिन स्वामी, महिमा हम भी गाते हैं।
जयकारा करते हैं चरणों, सादर शीश झुकाते हैं।

ॐ ह्रीं अर्हं मनःपर्ययज्ञान बुद्धि-ऋद्धये मनःपर्ययज्ञान बुद्धि ऋद्धि प्राप्तेभ्यो नमो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / दीप प्रज्ज्वलनम् करोमि।।2।।

विशद सर्व सिद्धि दायक

बुद्ध्या विनाऽपि विबुधार्चित-पाद-पीठ,
स्तोतुं समुद्यत-मतिर्-विगत-त्रपोऽहम्।
बालं विहाय जल-संस्थित-मिन्दु-बिम्ब-
मन्यः क इच्छति जनः सहसा ग्रहीतुम।।3।।

शत्रु-दृष्टि-बन्धक-मन्त्र– ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं सिद्धेभ्यो बुद्धेभ्यः सर्वसिद्धिदायकेभ्यः नमः स्व.।

मन्द बुद्धि हम स्तुति करते, नहीं जरा भी शर्माते।
विज्ञ जनों से अर्चित हैं प्रभु, ज्ञानी आप कहे जाते।।
जल में चन्द्र बिम्ब की छाया, पाने बालक जिद् करता।
सत्य स्वरूप जानने वाला, ज्ञानी कर्मों से डरता।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं केवलज्ञान बुद्धि-ऋद्धये केवलज्ञान बुद्धि ऋद्धि प्राप्तेभ्यो नमो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / दीप प्रज्ज्वलनम् करोमि।।3।।

जल जंतु भय मोचक

वक्तुं गुणान् गुण-समुद्र! शशाँक-कान्तान्,
कस्ते क्षमः सुरगुरु-प्रतिमोऽपि बुद्ध्या।
कल्पान्त - काल - पवनोद्धत - नक्र - चक्रं
को वा तरीतु-मल-मम्बु-निधिं भुजाभ्याम्।।4।।

जलचर अभय प्रदायक-मन्त्र – ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं सागरसिद्ध देवताभ्यो नमः स्वाहा।

चन्द्र कांति से बढ़कर हे जिन!, आप धवल कांती पाए।
हे गुण सागर! महिमा गाने, में सुर गुरु भी थक जाए।।

नक्र चक्र मगरादि होवें, प्रलय काल की चले बयार।
कौन भुजाओं से सागर को, कर सकता है बोलो पार?।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं बीज बुद्धि-ऋद्धये बीज बुद्धि ऋद्धि प्राप्तेभ्यो नमो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / दीप प्रज्ज्वलनम् करोमि।।4।।

नेत्र रोग संहारक

सोऽहं तथापि तव भक्ति-वशान्मुनीश,
कर्तुं स्तवं विगत-शक्ति-रपि प्रवृत्तः।
प्रीत्यात्म-वीर्य-मवि-चार्य मुगी मृगेन्द्रं
नाभ्येति किं निज-शिशोः परि-पाल-नार्थम्।।5।।

नेत्र रोग निवारक-मन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं क्रौं सर्व-सर्व-संकट निवारणेभ्यः सुपार्श्व यक्षेभ्यो सहिताय नमो नमः स्वाहा।

शक्ति नहीं भक्ती से प्रेरित, हो स्तुति करने आए।
नाथ! आपके दर्शन करके, मन ही मन में हर्षाए।।
निज शिशु की रक्षा हेतू मृगि, अहो विचार कहाँ करती।
जाकर मृगपति के सम्मुख वह, रक्षा कर संकट हरती।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं कोष्ठज्ञान बुद्धि-ऋद्धये कोष्ठज्ञान बुद्धि ऋद्धि प्राप्तेभ्यो नमो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / दीप प्रज्ज्वलनम् करोमि।।5।।

सरस्वती भगवती विद्या प्रसारक

अल्पश्रुतं श्रुत-वतां परि-हास-धाम,
त्वद्-भक्ति-रेव मुखरी-कुरुते बलान्माम्।
यत्कोकिलः किल-मधौ मधुरं विरौति,
तच्चाम्र-चारु-कलिका-निक-रैक-हेतु।।6।।

विद्यादायक-मन्त्र-ॐ ह्रीं श्राँ श्रीं श्रूँ श्रः हं सं थ थ थः ठः ठः सरस्वती भगवती विद्याप्रसादं कुरु कुरु स्वाहा।

अल्प ज्ञानी हम ज्ञानी जन से, हास्य कराते हैं इक मात्र।
भक्ति आपकी प्रेरित करती, अतः भक्ति के हैं हम पात्र।।
आम्र वृक्ष पर वौर आए तब, कोयल करे मधुर शुभगान।
नाथ! आपकी भक्ति करती, प्रेरित करने को गुणगान।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं पादानुसारि बुद्धि-ऋद्धये अवधिज्ञान पादानुसारि प्राप्तेभ्यो नमो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / दीप प्रज्ज्वलनम् करोमि।।6।।

सर्व दुरित संकट क्षुद्रोपद्रव निवारक

त्वत्संस्तवेन भव-सन्तति सन्निबद्धं,
पापं क्षणात्-क्षय-मुपैति शरीर-भाजाम्।
आक्रान्त-लोक-मलि-नील-मशेष-माशु,
सूर्यांशु-भिन्न-मिव शार्वर-मन्ध कारम्।।7।।

सर्पविष-विनाशक-मन्त्र - ॐ ह्रीं हं सं श्राँ श्रीं क्रौं क्लीं सर्व दुरित-संकट-क्षुदोपद्रवकष्ट निवारणं कुरु कुरु स्वाहा।

स्तुति से हे नाथ! आपकी, कट जाते चिर संचित पाप।
शीघ्र भाग जाते हैं क्षण में, जरा नहीं रहता संताप।।
तीन लोक में भ्रमर सरीखा, तम छाया भारी घन घोर।
पूर्ण नाश हो जाता क्षण में, सूर्योदय होते ही भोर।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं संभिन्न संश्रोतृत्व बुद्धि-ऋद्धये संभिन्न संश्रोतृत्व बुद्धि ऋद्धि प्राप्तेभ्यो नमो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / दीप प्रज्ज्वलनम् करोमि।।7।।

सर्वारिष्ट योग निवारक

मत्वेति नाथ! तव संस्तवनं मयेद-
मारभ्यते तनु-धियापि तव प्रभावात्।
चेतो हरिष्यति सतां नलिनी-दलेषु
मुक्ता-फल-द्युति-मुपैति ननूद-बिन्दुः।।8।।

सर्वारिष्ट-संहारक-मन्त्र - ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रों झ्रों नमः स्वाहा।

हूँ मतिमान आपकी फिर भी, शुभ स्तुति आरम्भ करी।
चित्त हरण करती जन-जन का, भक्ति आपकी शांति भरी।।
कमल पत्र पर जल कण जैसे, मोती की उपमा पाए।
नाथ! आपकी स्तुति जग में, सज्जन का मन हर्षाए।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं दूरास्वादित्व बुद्धि-ऋद्धये दूरास्वादित्व बुद्धि ऋद्धि प्राप्तेभ्यो नमो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / दीप प्रज्ज्वलनम् करोमि।।8।।

सप्तभय संहारक अभीप्सित फलदायक

आस्तां तव स्तवन-मस्त-समस्त-दोषं,
त्वत्-संकथाऽपि जगतां दुरि-तानि हन्ति।

दूरे सहस्त्र-किरणः कुरुते प्रभैव,
पद्मा-करेषु जलजानि विकास-भांजि।।9।।

सप्तभय निवारक मन्त्र-ॐ ह्रीं नमो भगवते जय यक्षाय ह्रीं हूँ नमः स्वाहा।

प्रभु स्तोत्र आपका क्षण में, सारे दोष विनाश करे।
पुण्य कथा भी प्रभू आपकी, जन्म जन्म के पाप हरे।।
सहस रश्मि वाला सूरज ज्यों, गगन में रहता है अतिदूर।
सागर में कमलों को देता, सूर्य प्रभा अपनी भरपूर।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं दूरस्पर्शत्व बुद्धि-ऋद्धये दूरस्पर्शत्व बुद्धि ऋद्धि प्राप्तेभ्यो नमो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / दीप प्रज्ज्वलनम् करोमि।।9।।

उन्मत्त कूकर विष निवारक

नात्यद्-भुतं भुवन-भूषण भूतनाथ!,
भूतैर्-गुणैर्-भुवि भवन्त-मभिष्टु-वन्तः।
तुल्या भवन्ति भवतो ननु तेन किं वा,
भूत्या-श्रितं य इह नात्म समं करोति।।10।।

श्वान विष निवारक-मन्त्र - ॐ ह्राँ ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः श्रां श्रीं श्रों श्रः सिद्ध-बुद्ध कृतार्थे भव-भव वषट् संपूर्ण नमः स्वाहा।

त्रिभुवन तिलक आप हो स्वामी, सब जीवों के नाथ! कहे।
सद्भक्तों को निज सम करते, इसमें क्या आश्चर्य रहे।।
धनी लोग स्वाश्रित को धन दे, कर लेते हैं स्वयं समान।
नहीं करे तो कौन कहेगा, स्वामी को हे नाथ! महान्।।10।।

ॐ ह्रीं अर्हं दूरघ्राणत्व बुद्धि-ऋद्धये दूरघ्राणत्व बुद्धि ऋद्धि प्राप्तेभ्यो नमो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / दीप प्रज्ज्वलनम् करोमि।।10।।

आकर्षक एवं वांछा पूरक

दृष्ट्वा भवन्त-मनि-मेष-विलोक-नीयम्,
नान्यत्र तोष-मुपयाति जनस्य चक्षुः।
पीत्त्वा पयः शशिकर-द्युति-दुग्ध-सिन्धोः
क्षारं जलं जल-निधे-रसितुं क इच्छेत्।।11।।

इष्टव्यक्ति आमन्त्रक-मन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं श्राँ श्रीं कुमति-निवारिण्यै महामायायै नमः स्वाहा।

नाथ! आपका दर्शन करके, भक्त हृदय में होता हर्ष।
और नहीं सन्तोष कहीं है, बिना आपके करके दर्श।।
क्षीर सिन्धु का चन्द्र किरण सम, जो मानव करता जलपान।
कालोदधि का खारा पानी, कौन पियेगा हो अज्ञान?।।11।

ॐ ह्रीं अर्हं दूरश्रृवणत्व बुद्धि-ऋद्धये दूरश्रृवणत्व बुद्धि ऋद्धि प्राप्तेभ्यो नमो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / दीप प्रज्ज्वलनम् करोमि।।11।।

हस्तिमद विदारक वांछित रूप प्रदायक

यैः शान्त-राग-रुचिभिः परमाणु-भिस्त्वं,
निर्मापितस्-त्रिभुवनैक-ललामभूत!।
तावन्त एव खलु तेऽप्यणवः पृथिव्याम्,
यत्ते समान-मपरं न हि रूप-मस्ति।।12।।

हस्ति-मद मारक-मन्त्र - ॐ आं आं अं अः सर्वराजा प्रजा मोहिनी सर्वजनवयं कुरु कुरु स्वाहा।

हुआ आपके तन का स्वामी, जितने अणुओं से निर्माण।
उतने ही अणु थे धरती पर, शांत रागमय श्रेष्ठ महान।।
हे अद्वितीय शिरोमणि प्रभु!, तीन लोक के आभूषण।
नहीं आपसा सुन्दर कोई, नहीं आपसा आकर्षण।।12।।

ॐ ह्रीं अर्हं दूरदर्शनत्व बुद्धि-ऋद्धये दूरदर्शनत्व बुद्धि ऋद्धि प्राप्तेभ्यो नमो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / दीप प्रज्ज्वलनम् करोमि।।12।।

लक्ष्मी सुख प्रदायक स्व शरीर रक्षक

वक्त्रं क्व ते सुर-नरो-रग-नेत्र-हारि,
निःशेष-निर्जित-जगत्-त्रितयोप-मानम्।
बिम्बं कलंक-मलिनं क्व निशा-करस्य,
यद्-वासरे भवति पाण्डु-पलाश-कल्पम्।।13।।

संपत्तिदायक, देह-रक्षक-मन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं ह्रँ सः ह्रौं ह्रौं ह्रीं द्रौं द्रीं द्रौं द्रः मोहिनी सर्व जन वयं कुरु कुरु स्वाहा।

सुन्दर अनुपम मुख वाले जिन, सुर नर नाग नेत्रहारी।
तीन लोक की उपमा जीते, हे निर्ग्रन्थ! भेष धारी।।

है कलंक से युक्त चंद्रमा, उस से तुलना कौन करे।
हो पलास सा फीका दिन में, वही चन्द्रमा दीन अरे।।13।।

ॐ ह्रीं अर्हं दशपूर्वित्व बुद्धि-ऋद्धये दशपूर्वित्व बुद्धि ऋद्धि प्राप्तेभ्यो नमो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / दीप प्रज्ज्वलनम् करोमि।।13।।

आधि-व्याधि नाशक

सम्पूर्ण-मण्डल-शशांक-कला-कलाप,
शुभ्रा गुणास्-त्रिभुवनं तव लंघयन्ति।
ये संश्रितास्-त्रिजग-दीश्वर नाथ!-मेकम्,
कस्तान् निवार-यति संचरतो यथेष्टम्।।14।।

आधि-व्याधि-नाशक-मन्त्र - ॐ नमो भगवती गुणवती महामानसी नमः स्वाहा।

कला कलाओं से बढ़के है, पूर्ण चन्द्रमा कांतीमान।
तीन लोक में व्याप रहे हैं, प्रभु के गुण भी पूर्ण महान।।
जिन गुण विचरें तीन लोक में, जगन्नाथ का पा आधार।
कौन रोक सकता है उनको, किसको है इतना अधिकार।।14।।

ॐ ह्रीं अर्हं चतुर्दशपूर्वित्व बुद्धि-ऋद्धये चतुर्दशपूर्वित्व बुद्धि ऋद्धि प्राप्तेभ्यो नमो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / दीप प्रज्ज्वलनम् करोमि।।14।।

सम्मान सौभाग्य संवर्द्धक

चित्रं कि-मत्र यदि ते त्रिदशांग-नाभिर्
नीतं मना-गपि मनो न विकार-मार्गम्।
कल्पान्त-काल-मरुता चलिता-चलेन,
किं मन्द-राद्रि-शिखरं चलितं कदाचित्।।15।।

सम्मान-सौभाग्य-वर्धक-मन्त्र - ॐ नमो भगवती गुणवती महामानसी नमः स्वाहा।

नहीं डिगा पाईं प्रभु का मन, हुई देवियाँ भी लाचार।
इसमें क्या आश्चर्य है कोई, कामदेव ने मानी हार।।
प्रलय काल की वायू चलती, पर्वत भी गिर-गिर जाते।
हिलता नहीं सुमेरू फिर भी, ऐसी अचल शक्ति पाते।।15।।

ॐ ह्रीं अर्हं अष्टांगमहानिमित्त बुद्धि-ऋद्धये अष्टांगमहानिमित्त बुद्धि ऋद्धि प्राप्तेभ्यो नमो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / दीप प्रज्ज्वलनम् करोमि।।15।।

सर्व विजय दायक

निर्धूम - वर्ति - रप - वर्जित - तैल - पूरः
कृत्स्नं जगत्-त्रय-मिदं प्रकटी-करोषि।

गम्यो न जातु मरुतां चलिता-चलानाम्,
दीपोऽपरस्तव-मसि नाथ! जगत्-प्रकाशः।।16।।

सर्वविजय-दायक-मन्त्र - ॐ नमः सुमंगला, सुसीमा, नामदेवी, सर्वसमीहितार्थ वज्रश्रृंखलां कुरु कुरु नमः स्वाहा।

धुँआ तेल बाती बिन दीपक, नाथ! आप कहलाते हो।
तीनों लोक प्रकाशित करते, शिव पथ आप दिखाते हो।।
वायू ऐसी तेज चले कि, सुगिरि शिखर उड़-उड़ जाए।
एक अलौकिक दीप आप हो, कोई नहीं बुझा पाए।।16।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रज्ञाश्रमणत्व बुद्धि-ऋद्धये प्रज्ञाश्रमणत्व बुद्धि ऋद्धि प्राप्तेभ्यो नमो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / दीप प्रज्ज्वलनम् करोमि।।16।।

सर्व रोग निरोधक

नास्तं कदाचि-दुप-यासि न राहु-गम्यः
स्पष्टी-करोषि सहसा युगपज्जगन्ति।
नाम्भो - धरो - दर - निरुद्ध - महा - प्रभावः
सूर्याति-शायि-महि-मासि मुनीन्द्र! लोके।।17।।

सर्व-रोग निरोधक-मन्त्र - ॐ णमो णमिऊण अट्ठे मट्ठे क्षुद्र विघट्ठे क्षुद्रपीड़ां जठरपीड़ां भंजय भंजय सर्वपीड़ां, सर्वरोग-निवारयं कुरु कुरु नमः स्वाहा।

उदय अस्त न होता जिसको, और न राहू ग्रस पाए।
तीनों लोक का ज्ञान आपका, एक साथ सब दिखलाए।।
घने मेघ ढक सकें कभी ना, ना प्रभाव कम हो पाता।
महिमाशाली दिनकर चरणों, स्वयं आपके झुक जाता।।17।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रत्येक बुद्धि-ऋद्धये प्रत्येक बुद्धि ऋद्धि प्राप्तेभ्यो नमो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / दीप प्रज्ज्वलनम् करोमि।।17।।

शत्रु शैन्य स्तम्भक

नित्यो-दयं दलित-मोह-महान्ध-कारं,
गम्यं न राहु-वदनस्य न वारि-दानाम्।
विभ्राजते तव मुखाब्ज - मनल्प - कान्ति,
विद्यो-तयज्-जग-दपूर्व-शशाँक-बिम्बम्।।18।।

शत्रु-सैन्य-स्तंभक-मन्त्र - ॐ नमो भगवते शत्रुसैन्यनिवारणाय यं यं यं क्षुर विध्वंसनाय नमः क्लीं ह्रीं नमः।

मोहमहातम के नाशक प्रभु, सदा उदित रहते स्वामी।
राहु गम्य न मेघ से ढकते, हे शिव पथ! के अनुगामी।।
अतुल कांतिमय रूप आपका, मुख मण्डल भी दमक रहा।
जगत शिरोमणि हे शशांक जिन!, तुमसे जग ये चमक रहा।।18।।

ॐ ह्रीं अर्हं वादित्व बुद्धि-ऋद्धये वादित्व बुद्धि ऋद्धि प्राप्तेभ्यो नमो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / दीप प्रज्ज्वलनम् करोमि।।18।।

उच्चाटनादि रोधक

किं शर्वरीषु शशि-नाह्नि विवस्वता वा,
युष्मन्-मुखेन्दु-दलितेषु तमःसु नाथ!।
निष्पन्न-शालि-वन-शालिनि जीव-लोके,
कार्यं कियज्-जलधरैर्-जलभार-नम्रैः।।19।।

उच्चाटनादि रोधक-मन्त्र - ॐ ह्राँ ह्रीं ह्रूँ ह्रः य क्ष ह्रीं वषट् नमः स्वाहा।

मुख मण्डल जिन दिव्य तेजमय, अन्धकार का करे विनाश।
दिन में सूर्य और रात्री में, चन्द्र बिम्ब की फिर क्या आस।।
धान्य खेत में पके हुए शुभ, लहराएँ अतिशय अभिराम।
जल से भरे सघन मेघों का, रहा बताओ फिर क्या काम।।19।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वविक्रिया बुद्धि-ऋद्धये सर्वविक्रिया बुद्धि ऋद्धि प्राप्तेभ्यो नमो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / दीप प्रज्ज्वलनम् करोमि।।19।।

संतान संपत्ति सौभाग्य प्रसाधक

ज्ञानं यथा त्वयि विभाति कृताव-काशं,
नैवं तथा हरि-हरादिषु नायकेषु।
तेजः महामणिषु याति यथा महत्त्वं,
नैवं तु काच-शकले किरणा-कुलेऽपि।।20।।

संतान-संपत्ति-सौभाग्य-प्रदायक मन्त्र - ॐ नमो भगवते पुत्रार्थ सौख्यं कुरु कुरु ह्रीं नमः स्वाहा।

शोभित होता प्रभो! आपका, स्वपर प्रकाशी केवल ज्ञान।
हरिहरादि देवों में वैसा, प्रकट नहीं हो सके प्रधान।।
महारत्न ज्योतिर्मय किरणों, वाला शुभ देखा जाता।
किरणाकुलित काँच क्या वैसी, उत्तम आभा को पाता।।20।।

ॐ ह्रीं अर्हं नभस्तलगामिचारण क्रिया ऋद्धये नभस्तलगामिचारण क्रिया ऋद्धि प्राप्तेभ्यो नमो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / दीप प्रज्ज्वलनम् करोमि।।20।।

सर्व सौख्य सौभाग्य साधक

मन्ये वरं हरि-हरादय एव दृष्टा
दृष्टेषु येषु हृदयं त्वयि तोष-मेति।
किं वीक्षितेन भवता भुवि येन नान्यः,
कश्चिन् मनो हरति नाथ! भवान्तरेऽपि।।21।।

सर्वसुख, सौभाग्य साधक - मन्त्र-ॐ नमो भगवते शत्रुभ्य निवारकाय नमः स्वाहा।

हरिहरादि देवों का हमनें, माना उत्तम अवलोकन।
नहिं सन्तोष प्राप्त करता है, बिना आपको देखे मन।।
तुम्हें देखने से हे स्वामी!, लाभ हुआ मुझको भारी।
भूला भटका चंचल मेरा, चित्त हुआ है अविकारी।।21।।

ॐ ह्रीं अर्हं जलचारणक्रिया-ऋद्धिये जलचारणक्रिया ऋद्धि प्राप्तेभ्यो नमो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / दीप प्रज्ज्वलनम् करोमि।।21।।

भूत पिशाचादि बाधा निरोधक

स्त्रीणां शतानि शतशो जनयन्ति पुत्रान्,
नान्या सुतं त्व-दुपमं जननी प्रसूता।
सर्वा दिशो दधति भानि सहस्त्र-रश्मिम्,
प्राच्येव दिग्जनयति स्फुर-दंशु-जालम्।।22।।

भूतपिशाच बाधा निरोधक-मन्त्र - ॐ नमो श्री वीरेहिं जृम्भय जृम्भय मोहय मोहय स्तम्भय स्तम्भय अवधारणं कुरु कुरु स्वाहा।

जहाँ सैकड़ों सुत को जनने, वाली सौ-सौ माताएँ।
मगर आपको जनने का, सौभाग्य श्रेष्ठ जननी पाएँ।।
सर्व दिशाएँ नक्षत्रों को, पाती ना कोई खाली।
पूर्ण प्रतापी सूरज को बस, पूर्व दिशा जनने वाली।।22।।

ॐ ह्रीं अर्हं जंघाचारणक्रिया -ऋद्धये जंघाचारणक्रिया ऋद्धि प्राप्तेभ्यो नमो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / दीप प्रज्ज्वलनम् करोमि।।22।।

प्रेत-बाधा निवारक

त्वा-मा-मनन्ति मुनयः परमं पुमांस-
मादित्य-वर्ण-ममलं तमसः पुरस्तात्।

त्वा-मेव सम्य-गुप-लभ्य जयन्ति मृत्युम्,
नान्यः शिवः शिव-पदस्य मुनीन्द्र! पन्थाः।।23।।

प्रेतबाधा निवारक-मन्त्र - ॐ नमो भगवती जयावती मम समीहितार्थ मोक्षसौख्यं कुरु कुरु स्वाहा।

हे मुनियों के नाथ आपका, परम पुरुष करते गुणगान।
सूर्यकान्त सम तेज वंत हो, मृत्युंजय मेरे भगवान।।
नाथ! आपको छोड़ कोई ना, शिवमारग दिखलाता है।
'विशद' आपको ध्याने वाला, मृत्युंजय हो जाता है।।23।।

ॐ ह्रीं अर्हं फलपुष्प पत्रचारण क्रिया -ऋद्धये फलचारण क्रिया ऋद्धि प्राप्तेभ्यो नमो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / दीप प्रज्ज्वलनम् करोमि।।23।।

शिरोरोग नाशक

त्वा-मव्ययं विभु-मचिन्तय-मसंख्य-माद्यं,
ब्रह्माणमीश्वर - मनन्त - मनंग - केतुम्।
योगीश्वरं विदित - योग - मनेक - मेकं
ज्ञान-स्वरूप-ममलं प्रवदन्ति सन्तः।।24।।

शिरो रोग नाशक-मन्त्र-ॐ ह्राँ ह्रीं ह्रूँ ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा झौं झौं नमः स्वाहा।

आदिब्रह्म ईश्वर जगदीश्वर, एकानेक अनन्त मुनीश।
विजित योग अक्षय मकरध्वज, विमलज्ञान मय हे जगदीश!।।
जगन्नाथ जगतीपति आदिक, कहलाते हो हे वागीश!।
इत्यादिक नामों के द्वारा, जाने जाते हे योगीश!।।24।।

ॐ ह्रीं अर्हं अग्निधूम चारणक्रिया-ऋद्धये अग्निधूम चारणक्रिया ऋद्धि प्राप्तेभ्यो नमो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / दीप प्रज्ज्वलनम् करोमि।।24।।

दृष्टिदोष निरोधक

बुद्धस्त्व-मेव विबुधार्चित-बुद्धि-बोधात्,
त्वं शंकरोऽसि भुवन-त्रय-शंकरत्वात्।
धातासि धीर! शिव-मार्ग-विधे-र्विधानाद्,
व्यक्तं त्वमेव भगवन्! पुरुषोत्तमोऽसि।।25।।

दृष्टि विष निवारक-मन्त्र - ॐ ह्राँ ह्रीं ह्रूँ ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः स्वाहा।

केवल ज्ञान बोधि को पाने, वाले आप कहाए बुद्ध।
त्रय लोकों के शोक हरणहर, शंकर आप कहाते शुद्ध।।
मोक्ष मार्ग दर्शाने वाले, आप विधाता कहे जिनेश!।
धर्म प्रवर्तक हे पुरुषोत्तम!, और कौन होंगे अखिलेश।।25।।

ॐ ह्रीं अर्हं मेघधारा चारणक्रिया मेघधारा चारणक्रिया ऋद्धि प्राप्तेभ्यो नमो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / दीप प्रज्ज्वलनम् करोमि।।25।।

अर्द्ध शिर पीड़ा विनाशक

तुभ्यं नमस्-त्रिभुव-नार्ति-हराय नाथ!
तुभ्यं नमः क्षिति-तलामल-भूषणाय।
तुभ्यं नमस्-त्रिजगतः परमेश्वराय,
तुभ्यं नमो जिन! भवोदधि-शोषणाय।।26।।

आधाशीशी पीड़ा निवारक-मन्त्र - ॐ नमो ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ह्रूँ ह्रूँ परजन-शान्ति व्यवहारे जयं कुरु कुरु स्वाहा।

तीन लोक के दुख हर्त्ता हे!, आदि जिनेश्वर्! तुम्हें नमन्।
भूमण्डल के आभूषण प्रभु, हे परमेश्वर! तुम्हें नमन्।।
अखिलेश्वर हे! तीन लोक के!, तव पद बारम्बार नमन्।
भव सिन्धू के शोसक अनुपम, भविजीवों का चरण नमन्।।26।।

ॐ ह्रीं अर्हं तन्तुचारणक्रिया-ऋद्धये तन्तुचारणक्रिया ऋद्धि प्राप्तेभ्यो नमो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / दीप प्रज्ज्वलनम् करोमि।।26।।

शत्रु उन्मूलक

को विस्मयोऽत्र यदि नाम गुणै-रशेषैस्,
त्वं संश्रितो निरवकाश-तया मुनीश।
दोषै - रुपात्त - विविधाश्रय - जात - गर्वैः,
स्वप्नान्तरेऽपि न कदाचि-दपी-क्षितोऽसि।।27।।

शत्रु निवारक-मन्त्र - ॐ नमो चक्रेश्वरीदेवी सहिताय चक्रधारिणी चक्रेणानुकूलं साधय साधय शत्रून् उन्मूलय उन्मूलय स्वाहा।

गुण सारे एकत्रित होकर, तुममें आन समाए हैं।
इसमें क्या आश्चर्य है कोई, आश्रय अन्य न पाए हैं।।
खोटे देवों के आश्रय से, गर्वित होकर रहते दोष।
नहीं आपकी ओर झाँकते, कभी स्वप्न में हे गुणकोष!।।27।।

ॐ ह्रीं अर्हं ज्योतिश्चारण क्रिया-ऋद्धये ज्योतिश्चारण क्रिया ऋद्धि प्राप्तेभ्यो नमो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / दीप प्रज्ज्वलनम् करोमि।।27।।

सर्व मनोरथ प्रपूरक

उच्चै - रशोक - तरु - संश्रित - मुन्मयूख
माभाति रूप - ममलं भवतो नितान्तम्।
स्पष्टोल्लसत्-किरण-मस्त-तमो-वितानं,
बिम्बं रवे-रिव पयोधर-पार्श्व-वर्ति।।28।।

सर्व मनोरथ पूरक-मन्त्र - ॐ नमो भगवते जय विजय, जृम्भय जृम्भय, मोहय-मोहय, सर्वसिद्धि-सम्पत्ति सौख्यं कुरु कुरु स्वाहा।

तरु अशोक उन्नत है निर्मल, रत्न रश्मियाँ बिखराए।
सुन्दर रूप आपका मनहर, तरुवर का आश्रय पाए।।
ऊर्ध्वमुखी किरणें अम्बर में, तम को दूर भगाती हैं।
नीलांचल पर्वत से मानो, भव्य आरती गाती हैं।।28।।

ॐ ह्रीं अर्हं मरूच्चारण क्रिया-ऋद्धये मरूच्चारणक्रिया ऋद्धि प्राप्तेभ्यो नमो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / दीप प्रज्ज्वलनम् करोमि।।28।।

नेत्र पीड़ा विनाशक

सिंहासने मणि-मयूख-शिखा-विचित्रे,
विभ्राजते तव वपुः कनका-वदातम्।
बिम्बं वियद्-विलस-दंशु-लता-वितानम्,
तुंगो-दयाद्रि-शिर-सीव सहस्र-रश्मेः।।29।।

नेत्रपीड़ा निवारक-मन्त्र - ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोर-तवाणं झौं झौं नमोः स्वाहा।

रंग बिरंगी किरणों वाला, सिंहासन अद्भुत छविमान।
उस पर कंचन काया वाले, शोभा पाते हैं भगवान।।
उच्च शिखर से उदयाचल के, सूर्य रश्मियाँ बिखराए।।
किरण जाल का श्रेष्ठ चँदोवा, मानो आभा फैलाए।।29।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वतपः-ऋद्धये सर्वतपःऋद्धि प्राप्तेभ्यो नमो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / दीप प्रज्ज्वलनम् करोमि।।29।।

शत्रु स्तंम्भक

कुन्दा - वदात - चल - चामर - चारु - शोभम्,
विभ्राजते तव वपुः कल-धौत-कान्तम्।

उद्यच्छशांक - शुचि - निर्झर - वारिधार
मुच्चैस्तटं-सुरगिरे-रिव शात-कौम्भम्।।30।।

मन्त्र - ॐ नमो

शुभ्र चँवर ढुरते हैं अनुपम, कुन्द पुष्प सम आभावान।
दिव्य देह शोभा पाती है, स्वर्णाभासी कांतीमान।।
कनकाचल के उच्च शिखर से, मानों झरना झरता है।।
अपनी शुभ्र प्रभा के द्वारा, मन मधुकर को हरता है।।30।।

ॐ ह्रीं अर्हं अघोर ब्रह्मचारिस्त्वतपः-ऋद्धये अघोर ब्रह्मचारिस्त्वतपःऋद्धि प्राप्तेभ्यो नमो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / दीप प्रज्ज्वलनम् करोमि।।30।।

राज्य सम्मान दायक

छत्र-त्रयं तव विभाति शशांक-कान्त-
मुच्चैः स्थितं स्थगित-भानुकर-प्रतापम्।
मुक्ताफल-प्रकर-जाल-विवृद्ध-शोभम्,
प्रख्या-पयत् त्रिजगतः परमेश्वरत्वम्।।31।।

राज सम्मान दायक-मन्त्र - ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोर गुण परक्कमाणं झौं झौं नमः स्वाहा।

चन्द्र कांति सम छत्र त्रय हैं, मणिमुक्ता वाले अभिराम।
सिर पर शोभित होते अनुपम, अतिशय दीप्तीमान ललाम।।
सूर्य रश्मियों का प्रताप जो, रोक रहे होके छविमान।
तीन लोक के ईश्वर अनुपम, कहे गये हो आप महान।।31।।

ॐ ह्रीं अर्हं मनोबल-ऋद्धये मनोबल ऋद्धि प्राप्तेभ्यो नमो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / दीप प्रज्ज्वलनम् करोमि।।31।।

संग्रहणी संहारक

गम्भीर - तार - रव - पूरित - दिग्विभागस्
त्रैलोक्य-लोक-शुभ-संगम-भूति-दक्षः।
सद्-धर्मराज-जय-घोषण-घोषकः सन्,
खे दुन्दुभि-र्ध्वनति ते यशसः प्रवादी।।32।।

संग्रहणी, उदरपीड़ानिवारक-मन्त्र-ॐ नमो ह्राँ ह्रीं ह्रूँ ह्रौं ह्रः सर्व-दोष-निवारणं कुरु कुरु स्वाहा।

उच्च स्वरों में बजने वाली, करती सर्व दिशा में नाद।
तीनों लोकवर्ति जीवों के, मन में लाती है आह्लाद।।

डंका पीट रही है अनुपम, हो सद्धर्म की जय-जयकार।
गगन मध्य भेरी बजती है, यश गाती है अपरम्पार।।32।।

ॐ ह्रीं अर्हं वचनबल-ऋद्धये वचनबल ऋद्धि प्राप्तेभ्यो नमो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / दीप प्रज्ज्वलनम् करोमि।।32।।

सर्व ज्वर संहारक

मन्दार - सुन्दर - नमेरु - सुपारि - जात
सन्तान-कादि-कुसुमोत्कर-वृष्टि-रुद्धा।
गन्धोद-बिन्दु-शुभ-मन्द-मरुत्-प्रपाता,
दिव्या दिवः पतति ते वचसां ततिर्वा।।33।।

सर्वज्वर-संहारक-मन्त्र-ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूँ ध्यान-सिद्धिं परमयोगिश्वराय नमो नमः स्वाहा।

गंधोदक की वृष्टी करते, देव चलाते मंद पवन।
संतानक मंदार नमेरू, कल्पतरू के श्रेष्ठ सुमन।।
सुन्दर पारिजात आदिक के, ऊर्ध्वमुखी होकर गिरते।
पंक्तीबद्ध आदि जिनके ही, मानो दिव्य वचन खिरते।।33।।

ॐ ह्रीं अर्हं कायबल-ऋद्धये कायबल ऋद्धि प्राप्तेभ्यो नमो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / दीप प्रज्ज्वलनम् करोमि।।33।।

गर्भ संरक्षक

शुम्भत्-प्रभा-वलय-भूरि-विभा-विभोस्ते,
लोक-त्राये द्युतिमतां द्युति-मा-क्षिपन्ती।
प्रोद्यद् - दिवाकर - निरन्तर - भूरि - संख्या,
दीप्त्या जयत्यपि निशा-मपि सोम-सौम्याम्।।34।।

गर्भ संरक्षक-मन्त्र-ॐ नमो ह्रीं श्रीं ऐं ह्रौं पद्मावति देव्यै सहिताय नमो नमः स्वाहा।

तीन लोकवर्ती उपमाएँ, जो कहने में आती हैं।
तन भामण्डल के आगे है, सब फीकी पड़ जाती हैं।।
कोटि सूर्य सम प्रखर दीप्ति है, फिर भी नहीं जरा आताप।
शीतल चन्द्र प्रभु के आगे, प्रभाहीन हों अपने आप।।34।।

ॐ ह्रीं अर्हं आमर्षोषधि-ऋद्धये आमर्षोषधि ऋद्धि प्राप्तेभ्यो नमो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / दीप प्रज्ज्वलनम् करोमि।।34।।

ईति भीति निवारक

स्वर्गा - पवर्ग - गम - मार्ग - विमार्गणेष्टः,
सद्धर्म - तत्त्व - कथनैक - पटुस् - त्रिलोक्याः।
दिव्यध्वनिर् - भवति ते विशदार्थ-सर्व-
भाषा-स्वभाव-परिणाम-गुणैः प्रयोज्यः।।35।।

ईति भीति विनाशक-मन्त्र-ॐ नमो जय विजय अपराजिते महालक्ष्मी अमृतवर्षिणी-अमृतवर्षिणी अमृतं भव भव वषट् सुधायै स्वाहा।

स्वर्ग मोक्ष के दिग्दर्शक हैं, हे जिनेन्द्र! तव दिव्य वचन।
तीन लोक में सत्य धर्म को, प्रगटाए सम्यक् दर्शन।।
दिव्य देशना सुनकर करते, भव्य जीव अपना उद्धार।
सुनकर विशद समझ लेते हैं, निज निज भाषा के अनुसार।।35।।

ॐ ह्रीं अर्हं क्ष्वेलौषधि-ऋद्धये क्ष्वेलौषधि ऋद्धि प्राप्तेभ्यो नमो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / दीप प्रज्ज्वलनम् करोमि।।35।।

विशद लक्ष्मी प्रदायक

उन्निद्र - हेमनव - पंकज - पुंज - कान्ति,
पर्युल् - लसन् - नख - मयूख शिखाभि -रामौ।
पादौ पदानि तव यत्र जिनेन्द्र! धत्तः,
पद्मानि तत्र विबुधाः परि - कल्प - यन्ति।।36।।

लक्ष्मी प्रदायक-मन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्डदण्ड स्वामिन् आगच्छ 2। आत्ममंत्रान् आकर्षय आकर्षय आत्म मंत्रान् रक्ष रक्ष परमंत्रान् छिन्दछिन्द मम हितं कुरु कुरु स्वाहा।

चरणाम्बुज नख शोभित होते, नभ में जैसे स्वर्ण कमल।
कुमुद मुदित होकर सागर में, शोभा पाते चरण युगल।।
अभिवन्दन के योग्य चरण शुभ, प्रभुवर जहाँ-जहाँ धरते।
उनके पग तल दिव्य कमल की, देव श्रेष्ठ रचना करते।।36।।

ॐ ह्रीं अर्हं जल्लौषधि-ऋद्धये जल्लौषधि ऋद्धि प्राप्तेभ्यो नमो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / दीप प्रज्ज्वलनम् करोमि।।36।।

दुष्टता प्रतिरोध

इत्थं यथा तव विभूति-रभूज्-जिनेन्द्र!
धर्मोप-देशन-विधौ न तथा परस्य।
यादृक् प्रभा दिनकृतः प्रहतान्धकारा,
तादृक् कुतो ग्रह-गणस्य विकासिनोऽपि।।37।।

दुष्टता प्रतिरोधक मन्त्र - ॐ नमो भगवते अप्रतिचक्रे ऐं क्लीं ब्लूँ ॐ ह्रीं मनोवाँछित सिद्धयै नमो नमः अप्रतिचक्रे ह्रीं ठः ठः स्वाहा।

धर्म देशना की बेला में, वैभव पाते जो तीर्थेश!।
अन्य कुदेवों में वैसा कुछ, देखा गया नहीं लवलेश।।
घोर तिमिर का नाशक रवि जो, दिव्य रोशनी को पाता।
वैसा दिव्य प्रकाश नक्षत्रों, में भी क्या देखा जाता।।37।।

ॐ ह्रीं अर्हं मलौषधि-ऋद्धये मलौषधि ऋद्धि प्राप्तेभ्यो नमो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / दीप प्रज्ज्वलनम् करोमि।।37।।

हस्तिमद-भंजक तथा वैभव वर्द्धक

श्च्योतन् - मदाविल - विलोल - कपोल - मूल-
मत्त - भ्रमद् - भ्रमर - नादविवृद्ध - कोपम्।
ऐरा - वताभ - मिभ - मुद्धत - मा - पतन्तं
दृष्ट्वा भयं भवति नो भव-दाश्रितानाम्।।38।।

हस्तिमद निवारक मन्त्र - ॐ ह्रीं शत्रुविजयारणारणाग्रे ग्रां ग्रीं ग्रूं ग्रः नमो नमः स्वाहा।

महामत्त गज के गालों से, बहे निरन्तर मद की धार।
जिस पर भौंरों का समूह भी, करता हो अतिशय गुंजार।।
क्रोधाशक्त दौड़ता हाथी, जिसका रूप दिखे विकराल।
कभी नहीं कर सकता है प्रभु, तव भक्तों को वह बेहाल।।38।।

ॐ ह्रीं अर्हं विप्रुषौषधि-ऋद्धये विप्रुषौषधि ऋद्धि प्राप्तेभ्यो नमो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / दीप प्रज्ज्वलनम् करोमि।।38।।

सिंह शक्ति संहारक

भिन्नेभ - कुम्भ - गल - दुज्ज्वल - शोणिताक्त,
मुक्ताफल - प्रकर - भूषित - भूमिभागः।
बद्ध - क्रम क्रम - गतं हरिणा - धिपोऽपि,
नाक्रामति क्रम - युगा - चल - संश्रितं ते।।39।।

सिंह शक्ति निवारक-मन्त्र - नमो एषु वृतेषु वर्द्धमान तव भयहरं वृत्ति वर्णायेषु मंत्रः पुनः स्मर्तव्या अतो नापरमंत्र निवेदनाय नमः स्वाहा।

तीक्ष्ण नखों से फाड़ दिए हैं, गज के उन्नत गण्डस्थल।
गज मुक्ताओं द्वारा जिसने, पाट दिया हो अवनीतल।।
ऐसा सिंह भयानक होकर, कभी नहीं कर सकता वार।
चरण कमल का प्रभो! आपके, जिसने बना लिया आधार।।39।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वौषधि-ऋद्धये सर्वौषधि ऋद्धि प्राप्तेभ्यो नमो
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / दीप प्रज्ज्वलनम् करोमि।।39।।

सर्वाग्नि शामक

कल्पान्त-काल-पवनोद्धत-वह्नि-कल्पम्,
दावानलं ज्वलित-मुज्ज्वल-मुत्स्फुलिंगम्।
विश्वं जिघत्सु-मिव सम्मुख-मापतन्तं,
त्वन्नाम-कीर्तन-जलं शमयत्यशेषम्।।40।।

अग्नि शामक मन्त्र – ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ह्राँ ह्रीं अग्निमुपशमनं शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।

प्रलयंकारी आँधी उठकर, फैल रही हो चारों ओर।
उठे फुलिंगें अंगारों की, वायू का भी होवे जोर।।
भुवनत्रय का भक्षण करले, आग सामने आती है।
प्रभू नाम के मंत्र नीर से, क्षण भर में बुझ जाती है।।40।।

ॐ ह्रीं अर्हं मुखनिर्विष-ऋद्धये मुखनिर्विष ऋद्धि प्राप्तेभ्यो नमो
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / दीप प्रज्ज्वलनम् करोमि।।40।।

भुजंग भय भंजक

रक्तेक्षणं समद-कोकिल-कण्ठ-नीलं,
क्रोधोद्धतं फणिन-मुत्फण-मा-पतन्तम्।
आक्रामति क्रमयुगेण निरस्त-शंकस्-
त्वन्नाम-नाग-दमनी-हृदि यस्य पुंसः।।41।।

भुजंग भय निवारक-मन्त्र – ॐ ह्रीं आदिदेवाय ह्रीं नमः स्वाहा।

क्रोधित कोकिल कण्ठ के जैसा, फण फैलाए काला नाग।
लाल नेत्र कर दौड़ रहा हो, मुख से निकल रहा हो झाग।।
ऐसे नाग के सिर पर चढ़कर, भी आगे बढ़ जाता है।
नाम जाप करने वाले का, नाग न कुछ कर पाता है।।41।।

ॐ ह्रीं अर्हं दृष्टिनिर्विष-ऋद्धये दृष्टिनिर्विष ऋद्धि प्राप्तेभ्यो नमो
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / दीप प्रज्ज्वलनम् करोमि।।41।।

युद्ध भय विनाशक

वल्गत्तुरंग – गज – गर्जित – भीमनाद-
माजौ बलं बलवता-मपि भूपतीनाम्।

उद्यद्-दिवाकर-मयूख-शिखा-पविद्धं,
त्वत्-कीर्तनात्तम इवाशु भिदा-मुपैति।।42।।

सर्व युद्धभयविनाशक मन्त्र – ॐ नमो णमिऊण विषधर विष प्रणाषन-रोग-शोक-
दोषग्रह कप्दुमच्च जायई सुहनाम ग्रहण सकल सुहृदे ॐ नमः स्वाहा।

जहाँ अश्व गज गर्वित होकर, गरज रहे हों चारों ओर।
बलशाली राजा की सेना, चीत्कार करती हो घोर।।
शक्तिहीन नर वहाँ अकेला, जपने वाला प्रभु का नाम।
बलशाली सेना को भी वह, नष्ट करे क्षण में अविराम।।42।।

ॐ ह्रीं अर्हं दृष्टिविष-ऋद्धये दृष्टिविष ऋद्धि प्राप्तेभ्यो नमो
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / दीप प्रज्ज्वलनम् करोमि।।42।।

सर्वशान्ति दायक

कुन्ताग्र-भिन्न-गज-शोणित-वारि-वाह-
वेगा – वतार – तरणा – तुर – योध – भीमे।
युद्धे जयं विजित-दुर्जय-जेय-पक्षास्-
त्वत्पाद-पंकज-वना-श्रयिणो लभन्ते।।43।।

सर्वशान्ति दायक मन्त्र-ॐ नमो चक्रेश्वरीदेवी चक्रधारीदेवी चक्रधारिणी जिन-शासन
सेवाकारिणी क्षुद्रोपद्रव विनाशिनी धर्मशान्तिकारिणी नमः शान्ति कुरु कुरु स्वाहा।

बर्छी भालों से आहत गज, तन से बहे रक्त की धार।
योद्धा लड़ने को तत्पर हों, लहू की सरिता करके पार।।
समरांगण में भक्त आपका, शत्रु सैन्य से पाए न हार।
आश्रय पाये जो तव पद का, पाए विजय श्री उपहार।।43।।

ॐ ह्रीं अर्हं क्षीरस्राविरस-ऋद्धये क्षीरस्राविरस ऋद्धि प्राप्तेभ्यो नमो
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / दीप प्रज्ज्वलनम् करोमि।।43।।

सर्वापत्ति विनाशक

अम्भो-निधौ क्षुभित-भीषण-नक्र-चक्र-
पाठीन-पीठ-भय-दोल्वण-वाड-वाग्नौ।
रंग-तरंग-शिखर-स्थित-यान-पात्रास्-
त्रासं विहाय भवतः स्मरणाद् व्रजन्ति।।44।।

सर्वविपत्ति निवारक-मन्त्र – ॐ नमो रावणाय विभीषणाय कुम्भकरणाय लंकाधिपतये
महाबल पराक्रमाय सहिताय मनश्चिन्तितं कुरु कुरु स्वाहा।

लहरें क्षोभित हों सिन्धू की, शिखर से जाकर टकराएँ।
नक्र चक्र धड़ियाल भयंकर, बड़वानल भी जल जाएँ।।
सागर में तूफान विकट हो, फँसा हुआ जिसमें जलयान।
छुटकारा पा जाए क्षण में, करे आपका जो भी ध्यान।।44।।

ॐ ह्रीं अर्हं मधुस्रावरिस-ऋद्धये मधुस्रावरिस ऋद्धि प्राप्तेभ्यो नमो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / दीप प्रज्ज्वलनम् करोमि।।44।।

जलोदरादि रोग एवं सर्वापत्ति विनाशक

उद्भूत - भीषण - जलोदर - भार - भुग्नाः,
शोच्यां दशा-मुप-गताश्च्युत-जीवि-ताशाः।
त्वत् - पाद - पंकज - रजोऽमृत - दिग्ध - देहा,
मर्त्या भवन्ति मकरध्वज-तुल्य-रूपाः।।45।।

जलोदर रोग निवारक - मन्त्र-ॐ नमो भगवती क्षुद्रोपद्रवशान्ति कारिणी सहिताय रोगकष्टज्वरोपशमनं शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।

भीषण रोगों से पीड़ित हो, और जलोदर का हो भार।
जीवन की आशा तज दी हो, भय से आकुल होय अपार।।
तव पद पंकज की रज पाकर, तन की मिट जाए सब पीर।
कामदेव के जैसा सुन्दर, भक्त आपका पाए शरीर।।45।।

ॐ ह्रीं अर्हं अमृतस्रावरिस-ऋद्धये अमृतस्रावरिस ऋद्धि प्राप्तेभ्यो नमो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / दीप प्रज्ज्वलनम् करोमि।।45।।

बंधन विमोचक

आपादकण्ठ - मुरु - श्रृंखल - वेष्टितांगा,
गाढ़ं बृहन्-निगड-कोटि-निघृष्ट-जंघाः।
त्वन्-नाम-मन्त्र-मनिशं मनुजाः स्मरन्तः,
सद्यः स्वयं विगत-बन्ध-भया भवन्ति।।46।।

कारागार मुक्तिदायक-मन्त्र-ॐ नमो ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः ठः ठः जः जः क्षाँ क्षीं क्षूँ क्षः क्षयः स्वाहा।

पग से सिर तक जंजीरों से, जकड़ी हुई है जिसकी देह।
छिले हुए घुटने जंघाएँ, पीड़ाकारी निःसन्देह।।
ऐसे दुस्तर बन्दीजन भी, करके प्रभू नाम का जाप।
कट जाते हैं बन्धन सारे, उनके क्षण में अपने आप।।46।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्पिः स्रावरिस-ऋद्धये सर्पिःस्रावरिस ऋद्धि प्राप्तेभ्यो नमो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / दीप प्रज्ज्वलनम् करोमि।।46।।

अस्त्र शस्त्रादि निरोधक

मत्त - द्विपेन्द्र - मृगराज - दवान - लाहि-
संग्राम - वारिधि - महोदर - बन्धनोत्थम्।
तस्याशु नाश - मुपयाति भयं भियेव,
यस्तावकं स्तव-मिमं मतिमा-नधीते।।47।।

अस्त्र शस्त्रादि निरोधक-मन्त्र - ॐ नमो ह्राँ ह्रीं ह्रूँ ह्रः य क्ष श्रीं ह्रीं फट् स्वाहा।

सिंह गजेन्द्र नाग रणस्थल, दावानल हो रोग अपार।
सिंधु भय अतिभीषण दुख से, क्षण भर में पा जाए पार।।
गुण स्तवन वन्दन करता है, विश्वेश्वर का जो धीमान।
भय भी भय से आकुल होकर, करता है उसका सम्मान।।

ॐ ह्रीं अर्हं अक्षीण महानस-ऋद्धये अक्षीण महानस ऋद्धि प्राप्तेभ्यो नमो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / दीप प्रज्ज्वलनम् करोमि।।47।।

विशद सर्व सिद्धि दायक

स्तो-त्रस्त्रजं तव जिनेन्द्र! गुणैर् निबद्धां,
भक्त्या मया विविध-वर्ण-विचित्र-पुष्पाम्।
धत्ते जनो य इह कण्ठ - गता - मजस्त्रं,
तं ''मानतुंग''-मवशा समुपैति लक्ष्मीः।।48।।

सर्वसिद्धिदायक-मन्त्र - ॐ ह्राँ ह्रीं ह्रूँ ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा झौं झौं नमः स्वाहा।

गुण उपवन से प्रभू आपके, भांति-भांति वर्णों के फूल।
चुनकर लाए भक्ति माल को, गूँथे हैं रुचि के अनुकूल।।
भव्य जीव जो सुमनावलि से, अपना कण्ठ सजाते हैं।
'मानतुंग' सम गुण के सागर, 'विशद' मुक्ति पद पाते हैं।।48।।

ॐ ह्रीं अर्हं अक्षीणमहालय-ऋद्धये अक्षीणमहालय ऋद्धि प्राप्तेभ्यो नमो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / दीप प्रज्ज्वलनम् करोमि।।48।।

जयमाला

दोहा- भक्तामर स्तोत्र की, महिमा अगम अपार।
जयमाला गाते यहाँ, पाने शिव का द्वार।।

चौपाई

प्रथम जिनेश्वर मंगलकारी, आदिनाथ की महिमा न्यारी।
धर्म प्रवर्तन करने वाले, तीर्थंकर जिन हुए निराले।।1।।
आप हुये संयम के धारी, विशद ज्ञान पाए अनगारी।
जग के प्राणी तुमको ध्याते, सुख शांती सौभाग्य जगाते।।2।।
भक्तामर स्तोत्र निराला, सुख शांती शुभ देने वाला।
पार नहीं महिमा का भाई, तीन लोक में है सुखदायी।।3।।
मानतुंग मुनिवर जी गाए, आदिनाथ को मन से ध्याये।
संकट दूर हुआ तब भाई, यह स्तोत्र की महिमा गाई।।4।।
भाव सहित जो भी जन ध्याते, उनके सब संकट कट जाते।
पूजा कोई करे शुभकारी, कोई पाठ पढ़े मनहारी।।5।।
जो भी श्रद्धा भाव से ध्याए, मन में उत्तम शांती पाए।
भक्त की भक्ति जाए न खाली, जो सौभाग्य बढ़ाने वाली।।6।।
अक्षर इक इक मंत्र बताया, कोई जान सके न माया।
बृहस्पति भी यदि गुण गावे, तो भी पूरा न कह पावे।।7।।
महिमा सुनकर हम भी आए, श्रद्धा सुमन साथ में लाए।
हम हैं प्रभु अज्ञानी प्राणी, प्रभू आप हो केवल ज्ञानी।।8।।
तुमने जीव जगत के तारे, तुमसे कर्म शत्रु भी हारे।
शिव पद दाता आप कहाए, शिवपुर में प्रभु धाम बनाए।।9।।
भक्त आपको मन से ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते।
इच्छित फल वह प्राणी पाते, अपने वह सौभाग्य जगाते।।10।।
तुम हो सर्व चराचर ज्ञाता, भवि जीवों के भाग्य विधाता।
पड़ी भँवर में मेरी नैय्या, उसके स्वामी आप खिवैय्या।।11।।
'विशद' भाव से तुमको ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते।
जग के सारे कष्ट मिटाते, शिव पद हमको शीघ्र दिलाते।।12।।

दोहा- आदिनाथ के पद युगल, झुका रहे हम साथ।
जब तक मुक्ती न मिले, देना भव-भव साथ।।

ॐ ह्रीं सर्वकर्म बन्धन विमुक्त सर्व लोकोत्तम जगत शरण श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- दास खड़ा है चरण में, सुन लो नाथ पुकार।
जैसा प्रभु निज का किया, करो मेरा उद्धार।।

इत्याशीर्वादः

भक्तामर महिमा

श्री भक्तामर का पाठ, कर्म का काठ।
जलावन कारी, भव व्याधी मैटनहारी।। टेक।।
अन्तर में मेरे मोह जगा, जन्मादि जरा का रोग लगा।
न कोई हमको मिला, जगत उपकारी।।
भव व्याधी मैटनहारी...1
भक्तामर भक्ति का कारण है, जो भव का रोग निवारण है।
यह तीन लोक में गाया, मंगलकारी।।
भव व्याधी मैटनहारी...2
श्री मानतुंग मुनिवर ज्ञानी, को कैद किए कुछ अज्ञानी।
तब आदिनाथ को ध्याए, गुरु अनगारी।।
भव व्याधी मैटनहारी...3
जो पाठ करे व्रत ध्यान करें, उसका संकट सब पूर्ण हरें।
सुखशांति पाता हैं, पावन व्रतधारी।।
भव व्याधी मैटनहारी...4
जो ''विशद'' ज्ञान का दाता है, जीवों को अभय प्रदाता है।
शाश्वत मुक्ति का, हेतू है शुभकारी।।
भव व्याधी मैटनहारी...5

श्री मानतुंग स्वामी का अर्घ्य

आदिनाथ की अर्चा पावन, भक्तामर में रही महान।
कैद कराए मुनि को राजा, अड़तालिस तालो में जान।।
भक्तामर स्तोत्र रचे मुनि, ऋद्धि सिद्धिकर अतिशयवान।
जिन मुनि के पद अर्घ्य चढ़ाते, विशद भाव से महति महान।।

ॐ ह्रीं भक्तामर स्तोत्र रचयिता श्री मानतुंगचार्य नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भक्तामर स्तोत्र के 48 ऋद्धि मंत्र

1. ॐ ह्रीं अर्हं णमो जिणाणं झ्रौं झ्रौं नमः।
2. ॐ ह्रीं अर्हं णमोओहिजिणाणं झ्रौं झ्रौं नमः।
3. ॐ ह्रीं अर्हं णमोपरमोहिजिणाणं झ्रौं झ्रौं नमः।
4. ॐ ह्रीं अर्हं णमोसव्वोहिजिणाणं झ्रौं झ्रौं नमः।
5. ॐ ह्रीं अर्हं णमोअणंतोहिजिणाणं झ्रौं झ्रौं नमः।
6. ॐ ह्रीं अर्हं णमो कोट्ठ बुद्धीणं झ्रौं झ्रौं नमः।
7. ॐ ह्रीं अर्हं णमो बीजबुद्धीणं झ्रौं झ्रौं नमः।
8. ॐ ह्रीं अर्हं णमो पादाणुसारीणं झ्रौं झ्रौं नमः।
9. ॐ ह्रीं अर्हं णमोसंभिण्णसोदारणं झ्रौं झ्रौं नमः।
10. ॐ ह्रीं अर्हं णमो सयंबुद्धीणं झ्रौं झ्रौं नमः।
11. ॐ ह्रीं अर्हं णमो पत्तेय बुद्धाणं झ्रौं झ्रौं नमः।
12. ॐ ह्रीं अर्हं णमो बोहिय बुद्धाणं झ्रौं झ्रौं नमः।
13. ॐ ह्रीं अर्हं णमो उजुमदीणं झ्रौं झ्रौं नमः।
14. ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउल मदीणं झ्रौं झ्रौं नमः।
15. ॐ ह्रीं अर्हं णमो दस पुव्वीणं झ्रौं झ्रौं नमः।
16. ॐ ह्रीं अर्हं णमो चउदस पुव्वीणं झ्रौं झ्रौं नमः।
17. ॐ ह्रीं अर्हं णमो अट्ठंगमहा णिमित कुसलाणं झ्रौं झ्रौं नमः।
18. ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउव्वइड्ढि पत्ताणं झ्रौं झ्रौं नमः।
19. ॐ ह्रीं अर्हं णमो विज्जाहराणं झ्रौं झ्रौं नमः।
20. ॐ ह्रीं अर्हं णमो चारणाणं झ्रौं झ्रौं नमः।
21. ॐ ह्रीं अर्हं णमो पण्ण समणाणं झ्रौं झ्रौं नमः।
22. ॐ ह्रीं अर्हं णमो आगास गामीणं झ्रौं झ्रौं नमः।
23. ॐ ह्रीं अर्हं णमो आसीविसाणं झ्रौं झ्रौं नमः।
24. ॐ ह्रीं अर्हं णमो दिट्ठिविसाणं झ्रौं झ्रौं नमः।
25. ॐ ह्रीं अर्हं णमो उग्ग तवाणं झ्रौं झ्रौं नमः।
26. ॐ ह्रीं अर्हं णमो दित्त तवाणं झ्रौं झ्रौं नमः।
27. ॐ ह्रीं अर्हं णमो तत्तं तवाणं झ्रौं झ्रौं नमः।
28. ॐ ह्रीं अर्हं णमो महा तवाणं झ्रौं झ्रौं नमः।
29. ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोर तवाणं झ्रौं झ्रौं नमः।
30. ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोर गुणाणं झ्रौं झ्रौं नमः।
31. ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोर परक्कमाणं झ्रौं झ्रौं नमः।
32. ॐ ह्रीं अर्हं णमोघोरगुणबंभयारीणं झ्रौं झ्रौं नमः।
33. ॐ ह्रीं अर्हं णमोआमोसहिपत्ताणं झ्रौं झ्रौं नमः।
34. ॐ ह्रीं अर्हं णमोखेल्लोसहिपत्ताणं झ्रौं झ्रौं नमः।
35. ॐ ह्रीं अर्हं णमोजल्लोसहिपत्ताणं झ्रौं झ्रौं नमः।
36. ॐ ह्रीं अर्हं णमोविप्पोसहिपत्ताणं झ्रौं झ्रौं नमः।
37. ॐ ह्रीं अर्हं णमोसव्वोसहिपत्ताणं झ्रौं झ्रौं नमः।
38. ॐ ह्रीं अर्हं णमो मणबलीणं झ्रौं झ्रौं नमः।
39. ॐ ह्रीं अर्हं णमो वचिबलीणं झ्रौं झ्रौं नमः।
40. ॐ ह्रीं अर्हं णमो कायबलीणं झ्रौं झ्रौं नमः।
41. ॐ ह्रीं अर्हं णमो खीरसवीणं झ्रौं झ्रौं नमः।
42. ॐ ह्रीं अर्हं णमो सप्पिसवीणं झ्रौं झ्रौं नमः।
43. ॐ ह्रीं अर्हं णमो महुरसवीणं झ्रौं झ्रौं नमः।
44. ॐ ह्रीं अर्हं णमो अमियसवीणं झ्रौं झ्रौं नमः।
45. ॐ ह्रीं अर्हं णमो अक्खीणमहाणसाणं झ्रौं झ्रौं नमः।
46. ॐ ह्रीं अर्हं णमो वड्ढमाणाणं झ्रौं झ्रौं नमः।
47. ॐ ह्रीं अर्हं णमो सिद्धायदणाणं झ्रौं झ्रौं नमः।
48. ॐ ह्रीं अर्हं णमो भयवदो-महदि-महावीर वड्ढमाण-बुद्ध-रिसीणो (चेदि) झ्रौं झ्रौं नमः।

जाप्य : ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं अर्हं श्री वृषभनाथ तीर्थंकराय नमः।

श्री भक्तामर अड़तालीसा

दोहा - भक्तामर स्तोत्र यह, आदिनाथ के नाम।
मानतुंग मुनि ने लिखा, करके चरण प्रणाम।।
सुख शांती सौभाग्य हो, पढ़ने से स्तोत्र।
बाधाएँ सब दूर हों, बहे धर्म का स्रोत।।

चौपाई

भक्तामर स्तोत्र निराला, सब कष्टों को हरने वाला।। 1।।
आदिनाथ को मन से ध्याए, सच्चे मन से ध्यान लगाए।। 2।।
भक्ती के रस में खो जाए, पढ़ने वाला पुण्य कमाए।। 3।।
मानतुंग की रचना प्यारी, कहलाए जो संकटहारी।। 4।।
पढ़े पढ़ाये पाठ कराये, प्राणी पुण्यवान हो जाए।। 5।।
ग्रह क्लेश सारा नश जाए, मन में अनुपम शांती पाए।। 6।।
हरेक काव्य है महिमाशाली, भक्ती कभी न जाए खाली।। 7।।
एक एक अक्षर मंत्र कहाये, पाठक सुख सम्पत्ती पाए।। 8।।
सदी ग्यारहवी जानो भाई, उज्जैनी नगरी सुखदायी।। 9।।
जिसका प्रान्त मालवा गाया, विद्वानों का केन्द्र बताया।। 10।।
राजा भोज वहाँ का जानो, नौ मंत्री जिसके पहिचानो।। 11।।
कालीदास प्रथम कहलाया, सेठ सुदत्त वहाँ जब आया।। 12।।
पुत्र मनोहर जिसका जानो, पुस्तक हाथ लिए था मानो।। 13।।
राजा ने पूछा हे भाई!, पुस्तक कौन सी तुमने पाई।। 14।।
नाम माला तब नाम बताए, लेखक कवि धनंजय गाए।। 15।।
कवि को राजा ने बुलवाया, खुश होके सम्मान कराया।। 16।।
कृति नाम माला है प्यारी, राजा किए प्रशंसा भारी।। 17।।
गुरु के आशिष से यह पाया, मानतुंग को गुरु बतलाया।। 18।।
कालीदास को नहीं सुहाया, मुनिवर को मूरख बतलाया।। 19।।
शास्त्रार्थ कर ले तो जानें, हम इसकी महिमा पहिचानें।। 20।।
दूत सुमुनि के पास भिजाया, मुनिवर को संदेश सुनाया।। 21।।
सभा बीच मुनिवर न आए, चार बार संदेश भिजाए।। 22।।
कालिदास को गुस्सा आया, उसने राजा को भड़काया।। 23।।
क्रोध नृपति के मन में आया, सैनिक को आदेश सुनाया।। 24।।

बन्दी बना यहाँ पर लाओ, राजसभा में पेश कराओ।।25।।
दूत उठाकर मुनि को लाए, मुनि उपसर्ग मानकर आए।।26।।
मौन धार लीन्हे तब स्वामी, जैन धर्म के शुभ अनुगामी।।27।।
मुनिवर को वह कैद कराए, अड़तालिस ताले लगवाए।।28।।
नर नारी तब शोक मनाए, दुख के आँसू खूब बहाए।।29।।
मुनिवर मन में समता लाए, तीन दिनों का समय बिताए।।30।।
आदिनाथ को मुनिवर ध्याये, भक्तामर स्तोत्र रचाये।।31।।
मुनि के तन में बंधनें वाले, टूट गयीं जंजीरें ताले।।32।।
आपों आप खुले सब द्वारे, द्वारपाल सब लगा के हारे।।33।।
पास में राजा के वह आए, जाकर सारा हाल सुनाए।।34।।
राजा तभी वहाँ पर आया, मुनिवर को फिर कैद कराया।।35।।
मुनिवर जी फिर ध्यान लगाए, ताले फिर से टूटे पाए।।36।।
राजा तब मन में घबराया, कालिदास को पास बुलाया।।37।।
कालिदास ने शक्ति लगाई, देवी कालिका भी प्रगटाई।।38।।
देवी चक्रेश्वरी तब आई, देख कालिका तब घबराई।।39।।
महिमा जैन धर्म की गाई, सबने तब जयकार लगाई।।40।।
जैन धर्म लोगों ने धारा, धर्म का है बस यही सहारा।।41।।
'विशद' भक्ति की है बलिहारी, पुण्यवान होवे शुभकारी।।42।।
भाव सहित भक्तामर गाएँ, मानतुंग सम भक्ति जगाएँ।।43।।
अतिशयकारी पुण्य कमाएँ, अनुक्रम से फिर मुक्ती पाएँ।।44।।
भक्तामर है महिमा शाली, भक्ती भक्त की जाय ना खाली।।45।।
कोई पूजन पाठ रचाते, अखण्ड पाठ करते करवाते।।46।।
कोई विधान करके हर्षाते, कोई प्रभु की महिमा गाते।।47।।
हम भी श्री जिनवर को ध्याएँ, पद में सादर शीश झुकाएँ।।48।।

दोहा-भक्तामर स्तोत्र से, भारी अतिशय होय।
नाना भाषा में रचा, पढ़े भाव से कोय।।
आधि व्याधि नाशक कहा, पावन शुभ स्तोत्र।
मंत्रों से परिपूर्ण है, 'विशद' धर्म का स्रोत।।

ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं ऐम् अर्हं श्री वृषभनाथ तीर्थंकराय नमः।

आरती भक्तामर की

तर्ज - माई रे माई मुंडेर....

गाएँ जी गाएँ भक्तामर की, आरती मंगल गाएँ।
घृत के दीप जलाकर प्रभु के, चरणों शीश झुकाएँ।।
जिनवर के चरणों में नमन्, प्रभुवर के चरणों में नमन्।
कृत युग के आदी में प्रभु जी, स्वर्ग से चयकर आए।। टेक।।
नाभिराय अरु मरुदेवी का, जीवन धन्य बनाए।
नगर अयोध्या जन्म लिए प्रभु, नर नारी हर्षाए।।
घृत के दीप जलाकर प्रभु के, चरणों शीश झुकाएँ।
जिनवर के चरणों में नमन्, प्रभुवर के चरणों में नमन्।।1।।
असि मसि कृषि वाणिज्य कला अरु, शिल्प का ज्ञान सिखाए।
नील परी की मृत्यू लखकर, प्रभु वैराग्य जगाए।।
विशद ज्ञान को पाए प्रभु जी, घाती कर्म नशाए।
घृत के दीप जलाकर प्रभु के, चरणों शीश झुकाएँ।।
जिनवर के चरणों में नमन्, प्रभुवर के चरणों में नमन्।।2।।
मानतुंग स्वामी के ऊपर, उपसर्ग भोज ने ढाया।
अड़तालिस तालों के अन्दर, मुनि को कैद कराया।।
टूट गईं जंजीरें ताले, आदि प्रभु को ध्याए।
घृत के दीप जलाकर प्रभु के, चरणों शीश झुकाएँ।।
जिनवर के चरणों में नमन्, प्रभुवर के चरणों में नमन्।।3।।
अतिशय देखा भोजराज ने, मुनि को शीश झुकाया।
जैन धर्म के जयकारों से, सारा गगन गुंजाया।।
आदिनाथ प्रभु का आराधन, भव से मुक्ति दिलाए।
घृत के दीप जलाकर प्रभु के, चरणों शीश झुकाएँ।।
जिनवर के चरणों में नमन्, प्रभुवर के चरणों में नमन्।।4।।
कोड़ा-कोड़ी वर्ष बाद भी, प्राणी तुमको ध्याते।
आदिनाथ जिन भक्तामर को, सादर शीश झुकाते।।
''विशद'' भक्ति की महिमा को यह, सारा ही जग गाए।
घृत के दीप जलाकर प्रभु के, चरणों शीश झुकाएँ।।
जिनवर के चरणों में नमन्, प्रभुवर के चरणों में नमन्।।5।।

कल्याण मंदिर स्तोत्र विधान

"माण्डला"

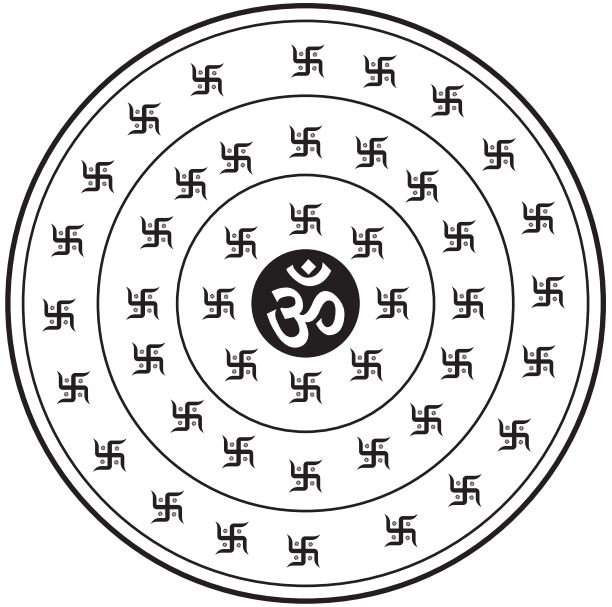

मध्य में - ॐ
प्रथम वलय - 8
द्वितीय वलय - 16
तृतीय वलय - 20
कुल वलय - 44 अर्घ्य

रचयिता :

प. पू. आचार्य विशदसागर जी महाराज

कल्याण मंदिर स्तोत्र पूजा

स्थापना

कुमुद चन्द्र आचार्य प्रवर जी, किए पार्श्व जिन का गुणगान।
हुआ प्रसिद्ध लोक में पावन, कल्याण मंदिर स्तोत्र महान।।
जिनकी अर्चा करने को हम, करते यह स्तोत्र विधान।
हृदय कमल में पार्श्व प्रभू का, विशद भाव से है आह्वान।।

ॐ ह्रीं कल्याण मंदिर स्तोत्र व्रताराध्य श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं, अत्र मम् सन्निहितौ भव वषट् सन्निधिकरणं।

(शम्भू छन्द)

भोगों में लीन रहे प्रभुवर, इसमें ही सदा लुभाए हैं।
भौतिक पदार्थ में सुख माना, वह पाकर के हर्षाए हैं।।
कल्याण मंदिर स्तोत्र के द्वारा, प्रभु के गुण हम गाते हैं।
पार्श्व प्रभु की अर्चा करके, पद में शीश झुकाते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं कल्याण मंदिर स्तोत्राराध्य श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सन्तप्त हृदय मेरा प्रभुवर, चन्दन से ना शीतल होता।
हम नित्य कषाए करते हैं, पछताते औ जीवन खोता।।
कल्याण मंदिर स्तोत्र के द्वारा, प्रभु के गुण हम गाते हैं।
पार्श्व प्रभु की अर्चा करके, पद में शीश झुकाते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं कल्याण मंदिर स्तोत्राराध्य श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु बाह्याभ्यान्तर शुद्ध रहें, अक्षत सम गुण प्रभु तेरे हैं।
हम भटक रहे चारों गति में, ना मिटे जगत के फेरे हैं।।
कल्याण मंदिर स्तोत्र के द्वारा, प्रभु के गुण हम गाते हैं।
पार्श्व प्रभु की अर्चा करके, पद में शीश झुकाते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं कल्याण मंदिर स्तोत्राराध्य श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

उपवन के पुष्प रहे अनुपम, ना पुष्प आपसा कोई है।
अफसोस है ज्ञानी यह आतम, फिर भी अनादि से सोई है।।
कल्याण मंदिर स्तोत्र के द्वारा, प्रभु के गुण हम गाते हैं।
पार्श्व प्रभु की अर्चा करके, पद में शीश झुकाते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं कल्याण मंदिर स्तोत्राराध्य श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नाना व्यंजन खाये हमने, फिर भी मन में ना शांति हुई।
चेतन को भोजन दिया नहीं, जिससे जीवन में भ्रान्ति हुई।।
कल्याण मंदिर स्तोत्र के द्वारा, प्रभु के गुण हम गाते हैं।
पार्श्व प्रभु की अर्चा करके, पद में शीश झुकाते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं कल्याण मंदिर स्तोत्राराध्य श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक जग का तम खोता है, आतम का तम ना मिटता है।
अन्तर में जले ज्ञान दीपक, कर्मों का राजा पिटता है।।
कल्याण मंदिर स्तोत्र के द्वारा, प्रभु के गुण हम गाते हैं।
पार्श्व प्रभु की अर्चा करके, पद में शीश झुकाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं कल्याण मंदिर स्तोत्राराध्य श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों की धूप सताती है, हे नाथ! कर्म वसु जल जायें।
हम धूप जलाते अग्नी में, तव गुण की छाया प्रभु पायें।।
कल्याण मंदिर स्तोत्र के द्वारा, प्रभु के गुण हम गाते हैं।
पार्श्व प्रभु की अर्चा करके, पद में शीश झुकाते हैं।।7।।

ॐ ह्रीं कल्याण मंदिर स्तोत्राराध्य श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

आँधी कर्मों की चले विशद, पुरुषार्थ हीन हो जाता है।
जो ध्यान करे निज आतम का, वह मोक्ष महाफल पाता है।।
कल्याण मंदिर स्तोत्र के द्वारा, प्रभु के गुण हम गाते हैं।
पार्श्व प्रभु की अर्चा करके, पद में शीश झुकाते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं कल्याण मंदिर स्तोत्राराध्य श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पथ मिले हमें बाधाओं के, अब दूर करें वे बाधाएँ।
जग की उलझन में उलझ रहे, सब छोड़ विशद मुक्ती पाएँ।।
कल्याण मंदिर स्तोत्र के द्वारा, प्रभु के गुण हम गाते हैं।
पार्श्व प्रभु की अर्चा करके, पद में शीश झुकाते हैं।।9।।

ॐ ह्रीं कल्याण मंदिर स्तोत्राराध्य श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- कल्याण मंदिर स्तोत्र का, किया यहाँ गुणगान।
यही भावना है विशद, पाएँ शिव सोपान।।

शान्तये शान्तिधारा

दोहा- पार्श्वनाथ भगवान की, महिमा अपरम्पार।
भक्ती के फल से सभी, पाएँ सौख्य अपार।।

पुष्पांजलि क्षिपेत्

कल्याण मंदिर स्तोत्र

अभीप्सित कार्य सिद्धिदायक

कल्याणमन्दिर-मुदार-मवद्य-भेदि, भीता-भय-प्रदम-निन्दित-मङ्घ्रिपद्मं।
संसार सागर निमज्ज-दशेष जन्तु, पोतायमान मभिनम्य जिनेश्वरस्य।।1।।

शम्भू-छन्द

हे कल्याण धाम! पापों के, नाशक तुम हो प्रभो! उदार।
भयाक्रान्त जीवों में भय का, नाश किए? हो तुम उपकार।।
पारावार में डूब रहे जो, जीवों को प्रभु पोत समान।
ऐसे श्री जिन पार्श्वनाथ का, करते भाव सहित गुणगान।।1।।

ॐ ह्रीं भवसमुद्रपतज्जन्तुतारणाय क्लींमहाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / दीप प्रज्ज्वलनं करोमि।

सर्व सिद्धिदायक

यस्य स्वयं सुरगुरु-गरिमाम्बुराशेः,
स्तोत्रं सुविस्तृत-मतिर्-न विभुर्विधातुम्।
तीर्थेश्वरस्य कमठस्मय धूमकेतोस्,
तस्याह मेष किल संस्तवनं करिष्ये।।2।।

गुण गौरव सागर सा जिन का, शब्दों में ना होवे व्यक्त।
बृहस्पति भी गुण गा के हारे, बने आपका अतिशय भक्त।।
कमठासुर के मान भंग को, अग्नि सिखा सम हो जिनदेव!।
नाथ! आपकी स्तुति करते, विस्मय पूर्वक भक्त सदैव।।2।।

ॐ ह्रीं अनन्तगुणाय क्लींमहाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / दीप प्रज्ज्वलनं करोमि।

विशद जलभय निवारक

धृष्टोऽपि कौशिक शिशुर्-यदि वा दिवान्धो,
रूपं प्ररूपयति किं किल घर्मरश्मेः।।3।।

धृष्टोऽपि कौशिक शिशुर्-यदि वा दिवान्धो,
रूपं प्ररूपयति किं किल घर्मरश्मेः।।3।।

नाथ! आपका रूप सलौना, कैसे करें स्वरूप बखान।
मन्द बुद्धि असमर्थ रहे हम, करने में प्रभु तव गुणगान।।
प्रखर सूर्य की दिव्य कांति में, निज स्वरूप ना लखे उलूक।
वर्णन कैसे कर पाएगा, बैठेगा वह होके मूक।।3।।

ॐ ह्रीं चिद्रूपाय क्लींमहाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / दीप प्रज्ज्वलनं करोमि।

असमय निधन निवारक

मोह-क्षयादनुभवन्नपि नाथ! मर्त्यो,
नूनं गुणान् गणयितुं न तव क्षमेत्।
कल्पान्त-वान्त-पयसः प्रकटोऽपि यस्मान्,
मीयेत केन जलधेर्-ननु रत्नराशिः।।4।।

मोह कर्म का हो विनाश तब, निज अनुभव करते हैं लोग।
शक्ति भले कितनी हो उनकी, गुण वर्णन का पाते योग।।
प्रलय काल होने पर सागर, का जल बाहर तक जावे।
ढेर दिखे रत्नों का भारी, कोई ना जिनको गिन पावे।।4।।

ॐ ह्रीं गहनगुणाय क्लींमहाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / दीप प्रज्ज्वलनं करोमि।

प्रछन्न धन प्रदर्शक

अभ्युद्यतोऽस्मि तव नाथ! जडाशयोऽपि,
कर्तुं स्तवं लसदसंख्य-गुणाकरस्य।
बालोऽपि किं न निज- बाहु-युगं वितत्य,
विस्तीर्णतां कथयति स्वधियाम्बुराशेः।।5।।

मैं मतिहीन आप हैं ज्ञानी, गुण रत्नों के हो आगार।
स्तुति करते नाथ! आपकी, अपनी बुद्धी के अनुसार।।
यथा मंदबुद्धी का बालक, अपनी दोनों भुजा पसार।
उत्सुक होकर बतलाता है, कितना सागर का आकार।।5।।

ॐ ह्रीं परमोन्नतगुणाय क्लींमहाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / दीप प्रज्ज्वलनं करोमि।

संतान सम्पत्ति प्रदायक

ये योगिनामपि न यान्ति गुणास्तवेश!,
वक्तुं कथं भवति तेषु ममावकाशः।
जाता तदेव-मसमीक्षित-कारितेयं।
जल्पन्ति वा निजगिराननु पक्षिणोऽपि।।6।।

नाथ! आपके गुण हैं अनुपम, योगी कहने में असमर्थ।
अज्ञानी मुझसा अबोध क्या, कहने में हो सके समर्थ।।
फिर भी निज भक्ती से प्रेरित, हो गुण गाते बिना विचार।
पक्षी ज्यों बातें करते हैं, निज-निज भाषा के अनुसार।।6।।

ॐ ह्रीं अगम्य गुणाय क्लींमहाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / दीप प्रज्ज्वलनं करोमि।

अभीप्सित जनाकर्षक

आस्तामचिन्त्य-महिमा जिन! संस्तवस्ते,
नामापि पाति भवतो भवतो जगन्ति।
तीव्राऽऽतपो - पहत - पान्थ - जनान्निदाघे,
प्रीणाति पद्म-सरसः स-रसोऽनिलोऽपि।।7।।

है अचिन्त्य महिमा स्तुति की, हे जिन! करे कौन गुणगान।
मात्र आपका नाम जीव को, भव दुख से देता है त्राण।।
ग्रीष्म ऋतू में तीव्र ताप से, पीड़ित होकर होय अधीर।
पद्म सरोवर का क्या कहना, सुख पहुँचाए सरस समीर।।7।।

ॐ ह्रीं स्तवनार्हाय क्लींमहाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / दीप प्रज्ज्वलनं करोमि।

कुपितोपिदंश विनाशक

हृद्वर्तिनि त्वयि विभो! शिथिली भवन्ति,
जन्तोः क्षणेन निबिडा अपि कर्म-बन्धाः।
सद्यो भुजङ्गम-मया इव मध्य-भाग-,
मभ्यागते वन-शिखण्डिनि चन्दनस्य।।8।।

मन मंदिर में वास करें जब, श्री जिन पार्श्वनाथ भगवन्।
ढीले पड़ जाते कर्मों के, दृढ़तर कर्मों के बन्धन।।

चन्दन तरु पर लिपट रहे हों, काले नाग जहाँ विकराल।
वन में आते ही मयूर के, बन्धन ढीले हों तत्काल।।8।।

ॐ ह्रीं कर्मबन्धविनाशकाय क्लींमहाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / दीप प्रज्ज्वलनं करोमि।

सर्पवृश्चिकविष विनाशक

मुच्यन्त एव मनुजाः सहसा जिनेन्द्र!
रौद्रै-रुपद्रव-शतैस्त्वयि वीक्षितेऽपि।
गो-स्वामिनि स्फुरित-तेजसि दृष्टमात्रे,
चौरैरिवाऽऽशु पशवः प्रपलायमानैः।।9।।

हे जिनेन्द्र! तव दर्शन करके, विपदाओं का होय विनाश।
अन्धकार भग जाता जैसे, उदित सूर्य का होय प्रकाश।।
पशुओं को रात्री में जैसे, आकर घेर रहे हों चोर।
गौ स्वामी को देख भागते, डर के कारण होते भोर।।9।।

ॐ ह्रीं दुष्टोपसर्गविनाशकाय क्लींमहाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / दीप प्रज्ज्वलनं करोमि।

तस्कर भय विनाशक

त्वं तारको जिन! कथं भविनां त एव,
त्वामुद्वहन्ति हृदयेन यदुत्तरन्तः।
यद्वा दृतिस्तरति यज्जल मेष नून-,
मन्तर्गतस्यऽमरुतः स किलानुभावः।।10।।

तुमको हृदय बसाने वाला, हो जाता है भव से पार।
भवि जीवों के लिए आप हो, चिन्तन का अनुपम आधार।।
वायू पूरित मसक तैरकर, हो जाती है सागर पार।
मन मंदिर में तुम्हें बसाने, से जीवों का हो उद्धार।।10।।

ॐ ह्रीं सुध्येयाय क्लींमहाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / दीप प्रज्ज्वलनं करोमि।

जलाग्निभय विनाशक

यस्मिन् हर-प्रभृतयोऽपि हत-प्रभावाः,
सोऽपि त्वया रतिपतिः क्षपितः क्षणेन।

विध्यापिता हुतभुजः पयसाथ येन,
पीतं न किं तदपि दुर्धर-वाडवेन।।11।।

हरि-हर आदिक महापुरुष भी, कामदेव से हारे हैं।
कामदेव के बाण आपने, क्षण में जीते सारे हैं।।
दावानल का पानी जैसे, कर देता है पूर्ण विनाश।
उसी नीर का क्रोधित होकर, बड़वानल कर देता नाश।।11।।

ॐ ह्रीं अनंगमथनाय क्लींमहाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / दीप प्रज्ज्वलनं करोमि।

अग्नि भय विनाशक

स्वामिन्ननल्प - गरिमाणमपि प्रपन्नास्-,
त्वां जन्तवः कथमहो हृदये दधानाः।
जन्मोदधिं लघु तरन्त्यतिलाघवेन,
चिन्त्यो न हन्त महतां यदि वा प्रभावः।।12।।

अन्य किसी से जिनकी तुलना, करना सम्भव नहीं अरे!।
ऐसे प्रभु के गुण अनन्त का, कैसे कोइ गुणगान करे।।
प्रभु को हृदय बसाते हैं जो, भवसागर तिर जाते हैं।
है अचिन्त्य महिमा श्री जिन की, चिन्तन में न आते हैं।।12।।

ॐ ह्रीं अतिशयगुरवे क्लींमहाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / दीप प्रज्ज्वलनं करोमि।

जलमिष्टता कारक

क्रोधस्त्वया यदि विभो! प्रथमं निरस्तो,
ध्वस्तास्तदा वद कथं किल कर्मचौराः।
प्लोषत्यमुत्र यदि वा शिशिरापि लोके,
नीलद्रुमाणि विपिनानि न किं हिमानी।।13।।

सबसे पहले प्रभो! आपने, क्रोध शत्रु का नाश किया।
क्रोध बिना फिर कहो आपने, कैसे कर्म विनाश किया।।
बर्फ लोक में ठण्डा होकर, रक्षा कर झुलसाता है।
क्षमाजयी प्रभु तुमरे द्वारा, चेरी जीता जाता है।।13।।

ॐ ह्रीं जितक्रोधाय क्लींमहाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / दीप प्रज्ज्वलनं करोमि।

शत्रु स्नेह जनक

त्वां योगिनो जिन सदा परमात्मरूप-,
मन्वेष-यन्ति हृदयाम्बुज कोष-देशे।
पूतस्य निर्मल-रुचेर्-यदि वा किमन्य,
दक्षस्य संभव-पदं ननु कर्णिकायाः।।14।।

श्रेष्ठ महर्षी प्रभू आपकी, महिमा अनुपम गाते हैं।
हृदय कमल में ज्ञान नेत्र से, अन्वेषण कर ध्याते हैं।।
कमल कर्णिका श्रेष्ठ बीज का, है पवित्र उत्पत्ति स्थान।
हृदय कमल के मध्य भाग में, शुद्धातम का होता ध्यान।।14।।

ॐ ह्रीं महन्मृग्याय क्लींमहाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / दीप प्रज्ज्वलनं करोमि।

चोरिकागत द्रव्य दायक

ध्यानाज्जिनेश भवतो भविनः क्षणेन,
देहं विहाय परमात्म-दशां व्रजन्ति।
तीव्रानलादुपल-भावमपास्य लोके,
चामीकरत्वमचिरादिव धातु-भेदाः।।15।।

धातु शिला अग्नी को पाकर, तजती किट्ट कालिमा रूप।
पत्थर की पर्याय छोड़कर, हो जाता है स्वर्ण स्वरूप।।
ऐसे ही संसारी प्राणी, करें आपका निश्चल ध्यान।
पदमातम पद पाने वाले, बनें वीतरागी विज्ञान।। 15।।

ॐ ह्रीं कर्मकिट्टदहनाय क्लींमहाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / दीप प्रज्ज्वलनं करोमि।

गहन वन पर्वत भय विनाशक

अंतः सदैव जिन यस्य विभाव्यसे त्वं,
भव्यैः कथं तदपि नाशयसे शरीरम्।
एतत्स्वरूपमथ मध्य-विवर्तिनो हि,
यद्विग्रहं प्रशमयन्ति महानुभावाः।।16।।

जिस शरीर के मध्य बिठाकर, भविजन तुमको ध्याते हैं।
उस शरीर को आप जिनेश्वर, फिर क्यों नाश कराते हैं।।

राग-द्वेष से रहित जीव का, विग्रह ही स्वभाव रहा।
राग-द्वेष को शमित किया है, सत्पुरुषों ने पूर्ण अहा।।16।।

ॐ ह्रीं देहदेहिकलहनिवारकाय क्लींमहाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / दीप प्रज्ज्वलनं करोमि।

युद्ध विग्रह विनाशक

आत्मा मनीषिभिरयं त्वदभेद-बुद्ध्या,
ध्यातो जिनेन्द्र! भवतीह भवत्प्रभावः।
पानीयमप् - यमृत - मित् - यनुचिन्त्यमानं,
किं नाम नो विष-विकारमपा-करोति।।17।।

जब अभेद बुद्धी के द्वारा, योगी करें आपका ध्यान।
है प्रभाव यह प्रभू आपका, हो जाते हैं आप समान।।
यह अमृत है ऐसी श्रद्धा, करके जल पीते जो लोग।
विष विकार में मंत्रित जल से, होता है क्या नहीं वियोग।।17।।

ॐ ह्रीं संसारविषसुधोपमाय क्लींमहाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / दीप प्रज्ज्वलनं करोमि।

सर्प विष विनाशक

त्वामेव वीत - तमसं परवादिनोऽपि,
नूनं विभो! हरि - हरादि धिया प्रपन्नाः।
किं काच-कामलिभिरीश सितोऽपि शंखो,
नोगृह्यते विविध-वर्ण-विपर्ययेण।।18।।

अज्ञानी प्राणी कहते हैं, तुमको ब्रह्मा विष्णु महेश।
अन्यमतावलम्बी पूजा शुभ, करें आपकी श्रेष्ठ जिनेश!।।
निश्चित मानो प्यारे भाई, जिनको हुआ पीलिया रोग।
श्वेत शंख भी पीला दिखता, उस बीमारी के संयोग।।18।।

ॐ ह्रीं सर्वजनन्द्याय क्लींमहाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / दीप प्रज्ज्वलनं करोमि।दीप प्रज्जवलनं करोमि।

नेत्ररोग विनाशक

धर्मोपदेश - समये सविधानुभावा-,
दास्तां जनो भवति ते तरुरप्यशोकः।

अभ्युद्गते दिनपतौ समहीरुहोऽपि,
किं वा विबोधमुपयाति न जीव-लोकः।।19।।

धर्म देशना के अवसर पर, जो आ जाए तुमरे पास।
मानव की क्या बात शोक तरु, हो अशोक का पूर्ण विनाश।।
सूर्योदय होने पर केवल मानव, ही ना पाते बोध।
वनस्पति तरु भी निद्रा तजकर, पा लेती है पूर्ण विबोध।।19।।

ॐ ह्रीं अशोकवृक्षविराजमानाय क्लींमहाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / दीप प्रज्ज्वलनं करोमि।

उच्चाटन कारक

चित्रं विभो! कथम्वाङ्मुख-वृन्तमेव,
विष्वक-पतत्य-विरला सुर-पुष्प-वृष्टिः।
त्वद्गोचरे सुमनसां यदि वा मुनीश!
गच्छन्ति नूनमध एव हि बन्धनानि।।20।।

सघन पुष्प वृष्टी की जाती, देवों द्वारा अपरम्पार।
डण्ठल नीचे ऊर्ध्व पांखुड़ी, होती पुष्पों की शुभकार।।
मानो डण्ठल सूचित करते, आते हैं जो तुमरे पास।।
कर्मों के बन्धन भव्यों के, हो जाते हैं पूर्ण विनाश।।20।।

ॐ ह्रीं सुरपुष्पवृष्टिशोभिताय क्लींमहाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / दीप प्रज्ज्वलनं करोमि।

विशद ज्ञानवद्धि प्रदायक

स्थाने गभीर-हृदयोदधि-सम्भवायाः,
पीयूषतां तव गिरः समुदीरयन्ति।
पीत्त्वाः यतः परम-सम्मद-संग-भाजो,
भव्याव्रजन्ति तरसाप्य-जरा-मरत्वम्।।21।।

प्रभु गम्भीर हृदय के सागर, से मुखरित हैं दिव्य वचन।
सच है सुधा समान मानते, तीन लोक में सारे जन।।
अमृतवाणी पीके प्राणी, अक्षय सुख पा जाते हैं।
आकुलता को तजने वाले, अजर-अमर पद पाते हैं।।21।।

ॐ ह्रीं दिव्यध्वनिविराजिताय क्लींमहाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / दीप प्रज्ज्वलनं करोमि।

मधुर फल प्रदायक

स्वामिन्सुदूर - मवनम्य समुत्पतन्तो,
मन्येवदन्ति शुचयः सुर - चामरौघाः।
येऽस्मै नतिं विदधते मुनि - पुंगवाय,
ते-नून-मूर्ध्व-गतयः खलु शुद्ध-भावाः।।22।।

चँवर ढुराते देव तो पहले, नीचे फिर ऊपर जाते।
मानो जग जीवों को झुककर, विनय शीलता सिखलाते।।
'विशद' भाव से करते हैं जो, श्री जिनेन्द्र के चरण नमन।
कर्म नाशकर के वह प्राणी, जाते हैं फिर मोक्ष सदन।।22।।

ॐ ह्रीं सुरचामरसहितविराजमानाय क्लींमहाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / दीप प्रज्ज्वलनं करोमि।

राज्य सन्मानदायक

श्यामं गभीर - गिरमुज्ज्वल - हेम - रत्न,
सिंहासनस्थमिह भव्य - शिखण्डिनस्त्वाम्।
आलोकयन्ति - रभसेन नदन्तमुच्चै-,
श्चामीकराद्रि-शिरसीव नवाम्बुवाहम्।।23।।

सिंहासन स्वर्णिम कंचनमय, पर स्थित हैं श्री जिनेश।
दिव्य ध्वनि प्रगटाते अनुपम, श्यामल तन में प्रभा विशेष।।
होता स्वर्ण सुमेरू पर ज्यों, काले मेघों का गर्जन।
हर्षित होकर भव्य मोर ज्यों, करें आपका अवलोकन।।23।।

ॐ ह्रीं पीठत्रयनायकाय क्लींमहाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / दीप प्रज्ज्वलनं करोमि।

शुष्कवनोपवन विनाशक

उद्गच्छता तव शिति-द्युति-मण्डलेन,
लुप्त-च्छदच्छवि-रशोक - तरुर्बभूव।
सान्निध्यतोऽपि यदि वा तव वीतराग,
नीरागतां व्रजति को न सचेतनोऽपि।।24।।

भामण्डल दैदीप्यमान शुभ, सुर तरु की छवि लुप्त करे।
स्वयं अचेतन होकर भी जो, प्रभा दिखाए श्रेष्ठ अरे!।।
भव्य जीव हे नाथ! आपकी, स्वयं निकटता में आवे।
वीतराग हो भव्य जीव वह, मोक्ष निकेतन को पावे।।24।।

ॐ ह्रीं भामण्डमण्डिलाय क्लींमहाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / दीप प्रज्ज्वलनं करोमि।

विंशति दल कमल पूजा

भो भोः प्रमादमवधूय भजध्वमेन-,
मागत्य निर्वृति-पुरीं प्रति सार्थवाहम्।
एतन्निवेदयति देव जगत्त्रायाय,
मन्ये नदन्नभिनभः सुरदुन्दुभिस्ते।।25।।

दुन्दुभि नाद गगन में होवे देवों द्वारा।
मानो चिल्लाकर कहता लो चरण सहारा।।
मोक्षपुरी जाना चाहो तो प्रभु को ध्याओ।
तज प्रमाद हे प्राणी! तुम भी शिवपद पाओ।।25।।

ॐ ह्रीं देवदुन्दुभिनादान क्लींमहाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / दीप प्रज्ज्वलनं करोमि।

वचन सिद्धि प्रतिष्ठापक

उद्योतितेषु भवता भुवनेषुनाथ!,
तारान्वितो विधुरयं विहताधिकारः।
मुक्ता-कलाप-कलितोरु-सितातपत्र-,
व्याजात्त्रिधा धृत-तनुर्ध्रुवमभ्युपेतः।।26।।

तीन छत्र त्रिभुवन के नाथ! बताने वाले।
तारा गण की छवी युक्त हैं श्रेष्ठ निराले।।
त्रिविध रूप धारण कर जैसे चाँद दिखावे।
होकर भाव विभोर प्रभू सेवा को आवे।।26।।

ॐ ह्रीं छत्रत्रयमहिताय क्लींमहाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / दीप प्रज्ज्वलनं करोमि।

वैर-विरोध विनाशक

स्वेनप्रपूरित - जगत्त्रय - पिण्डितेन,
कान्ति - प्रताप - यशसामिव संचयेन।
माणिक्य - हेम - रजत - प्रविनिर्मितेन,
सालत्रयेण भगवन्नभितो विभासि।।27।।

सोना चाँदी माणिक से त्रय, कोट बनाए।
तीन लोक के पिण्ड सम्पदा, युक्त कहाए।।
कान्ति कीर्ति व तेज पुण्ज का, वर्तुल गाया।
पार्श्व प्रभू का समवशरण जगती पर आया।।27।।

ॐ ह्रीं शालत्रयाधिपतये क्लींमहाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / दीप प्रज्ज्वलनं करोमि।

विशद यशः कीर्तिप्रसारक

दिव्य-स्रजो जिन नमत्त्रिदशाधिपाना-,
मुत्सृज्य रत्न-रचितानपि मौलि-बन्धान्।
पादौ श्रयन्ति भवतो यदि वापरत्र,
त्वत्संगमे सुमनसो न रमन्त एव।।28।।

इन्द्रों के मुकुटों की दिव्य सुमन मालाएँ।
नमस्कार के समय चरण में जो गिर जाएँ।।
मानो वह तव चरणों में शुभ जगह बनाएँ।
पाद पद्म को छोड़ और अब कहीं न जाएँ।।28।।

ॐ ह्रीं भक्तजनानवनपतिराय क्लींमहाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / दीप प्रज्ज्वलनं करोमि।

विशद आकर्षण कारक

त्वं नाथ! जन्म जलधेर् विपराङ्मुखोऽपि,
यत्तारयस्य सुमतो निज-पृष्ठ-लग्नान्।
युक्तं हि पार्थिव-निपस्य सतस्तवैव,
चित्रं विभो! यदसि कर्म-विपाक-शून्या।।29।।

हुआ अधोमुख पक्व घड़ा, सागर में जावे।
गहन जलाशय से मानव को, पार करावे।।
भव सिंधू से हुए विमुख हैं, संत निराले।
भव्यों को भव तारक अतिशय, महिमा वाले।।29।।

ॐ ह्रीं निजपृष्ठलग्नभयतारकाय क्लींमहाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय
नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / दीप प्रज्ज्वलनं करोमि।

असंभव कार्यसाधक

विश्वेश्वरोऽपि जन-पालक दुर्गतस्त्वं,
किं वाऽक्षर - प्रकृतिरप् - यलिपिस्त्वमीश!
अज्ञानवत्यपि सदैव कथंचिदेव,
ज्ञानं त्वयि स्फुरति विश्व-विकास-हेतुः।।30।।

तीन लोक के नाथ आप, निर्धन कहलाए।
तीन काल के ज्ञाता हो, अज्ञानी गाए।।
तुम अक्षर स्वभावी, कोई लिख न पाए।
सर्व चराचर के ज्ञाता, प्रभु आप कहाए।।30।।

ॐ ह्रीं विस्मयनीयमूर्तये क्लींमहाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / दीप प्रज्ज्वलनं करोमि।

शुभाशुभ प्रश्नदर्शक

प्राग्भार-संभृत-नभांसि-रजांसि रोषा-,
दुत्थापितानि कमठेन शठेन यानि।
छायापि तैस्तव न नाथ! हता हताशो।
ग्रस्तस्त्वमीभिरयमेव परं दुरात्मा।।31।।

कुपित कमठ ने नभ मण्डल में धूल गिराई।
तव तन की छाया को भी वह छू न पाई।।
तिरस्कार की दृष्टी से जो कार्य कराया।
विफल मनोरथ हुआ कर्म का बन्धन पाया।।31।।

ॐ ह्रीं कमठोत्थापितधूल्युपद्रवजिताय क्लींमहाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / दीप प्रज्ज्वलनं करोमि।

दुष्टता प्रतिरोधी

यद्गर्जदूर्जित - घनौघमदभ्र - भीम -,
भ्रश्यत्तडिन् मुसल - मांसल - घोरधारम्।
दैत्येन मुक्तमथ दुस्तर - वारिदध्रे,
तेनैव तस्य जिन दुस्तर-वारि कृत्यम्।।32।।

गरजे मेघ चमकती बिजली खूब दिखाई।
जल की वृष्टी महा भयंकर वहाँ कराई।।

गरजे मेघ चमकती बिजली खूब दिखाई।
जल की वृष्टी महा भयंकर वहाँ कराई।।

ॐ ह्रीं कमठकृतजलधारोपसर्गनिवारकाय क्लींमहाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / दीप प्रज्ज्वलनं करोमि।

उल्कापातातिवृष्टयनावृष्टि निरोधक

ध्वस्तोर्ध्व-केश-विकृताकृति-मर्त्य-मुण्ड-,
प्रालम्बभृद् - भयदवक्त्र - विनिर्यदग्निः।
प्रेतव्रजः प्रति भवन्तमपीरितो यः,
सोऽस्याभवत्प्रति भवं भव-दुःख-हेतुः।।33।।

महा भयानक नर मुण्डन की धारी माला।
और वदन से निकल रही थी अग्नी ज्वाला।।
भंग तपस्या करने भूत-प्रेत दौड़ाए।
प्रभु का कुछ न बिगड़ा कर्म का बन्ध उपाए।।33।।

ॐ ह्रीं कमठकृतपैशाचिकोपद्रवजयनशीलाय क्लींमहाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / दीप प्रज्ज्वलनं करोमि।

भूत-पिशाच पीड़ा तथा शत्रुभय नाशक

धन्यास्त एव भुवनाधिप ये त्रिसंध्य-,
माराधयन्ति विधिवद्विधुतान्य-कृत्याः।
भक्त्योल्लसत्पुलक - पक्ष्मल - देह - देशाः,
पाद-द्वयं तव विभो! भुवि जन्मभाजः।।34।।

पुलकित होकर चरण शरण प्रभु का पा जाते।
तजकर माया जाल तीन कालों में आते।।
विधिवत् करें अर्चना हे जगतीपति! तेरी।
होगा जीवन धन्य मिटे भव-भव की फेरी।।34।।

ॐ ह्रीं धार्मिकवन्दिताय क्लींमहाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / दीप प्रज्ज्वलनं करोमि।

मृगी उन्माद अपस्मार विनाशक

अस्मिन्न पार-भव-वारि-निधौ मुनीश!
मन्ये न मे श्रवण-गोचरतां गतोऽसि।

आकर्णिते तु तव गोत्र-पवित्र-मंत्रे,
किं वा विपद्विषधरी सविधं समेति।।35।।

हे मुनीन्द्र! हम कई जन्मों से, दुःख उठाते आए हैं।
कानों से हम नाम आपका, फिर भी न सुन पाए हैं।।
मंत्रोच्चार पूर्वक स्वामी, सुने आपका जो भी नाम।
विपदा रूपी नागिन से वह, पा लेते क्षण में विश्राम।।35।।

ॐ ह्रीं पवित्रनामधेयाय क्लींमहाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / दीप प्रज्ज्वलनं करोमि।

सर्प वशीकरण

जन्मान्तरेऽपि तव-पाद-युगं न देव,
मन्ये मया महितमीहित-दान-दक्षम्।
तेनेह जन्मनि मुनीश पराभवानां,
जातो निकेतन महं मथिताशयानाम्।।36।।

चरण कमल में नाथ! आपके, कई जन्मों से ना आए।
मनवांछित फल देने वाले, पूजा तव न कर पाए।।
इसीलिए इस जग के प्राणी, करते हिय भेदी अपमान।
शरण आपकी पाई मैंने, पाएँगे हम फिर सम्मान।।36।।

ॐ ह्रीं पूतपादाय क्लींमहाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / दीप प्रज्ज्वलनं करोमि।

अनर्थ नाशक दर्शन

नूनं न मोह-तिमिरावृतलोचनेन,
पूर्वं विभो! सकृदपि प्रविलोकितोऽसि।
मर्मा विधो विधुरयन्ति हि मामनर्थाः,
प्रोद्यत्प्रबन्ध-गतयः कथमन्यथैते।।37।।

मोह महातम से आच्छादित, खोल सके न ज्ञान नयन।
निश्चय पूर्वक एक बार भी, किए आपके न दर्शन।
दुःख मर्म भेदी हे स्वामी! इसीलिए बहु सता रहे।
किये दर्श न पूर्व जन्म में, अतः कर्म के घात सहे।।37।।

ॐ ह्रीं दर्शनीयाय क्लींमहाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / दीप प्रज्ज्वलनं करोमि।

असंख्यकष्ट निवारक

आकर्णितोऽपि महितोऽपि निरीक्षितोऽपि,
नूनं न चेतसि मया विधृतोऽसि भक्त्या।
जातोऽस्मि तेन-जन-बान्धव दुःखपात्रं,
यस्मात्क्रियाः प्रतिफलन्ति न भाव-शून्याः।।38।।

प्रभू आपके चरणों की हम, दर्शन पूजन को आए।
यह निश्चय प्रभु नहीं आपको, हृदय में धारण कर पाए।।
भाव शून्य भक्ती करने से, हमने भारी दुःख सहे।
क्रिया भाव से रहित लोक में, फलदायी न कभी रहे।।38।।

ॐ ह्रीं भक्तिहीनजनमाध्यस्थाय क्लींमहाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / दीप प्रज्ज्वलनं करोमि।

सर्वज्वर शामक

त्वं नाथ! दुःखि जन-वत्सल! हे शरण्य!,
कारुण्य-पुण्य-वसते वशिनां वरेण्य!।
भक्त्या नते मयि महेश दयां विधाय,
दुःखांकुरोद्दलन-तत्परतां विधेहि।।39।।

नाथ! दुखी जन के वत्सल हे!, शरणागत को एक शरण।
करुणाकर हे इन्द्रिय जेता!, योगीश्वर! तव दोय चरण।।
हे महेश! हम भक्ती पूर्वक, झुका रहे हैं पद में शीश।
दूर करो मेरे दुख सारे, यही प्रार्थना दो आशीष।।39।।

ॐ ह्रीं भक्तजनवत्सलाय क्लींमहाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / दीप प्रज्ज्वलनं करोमि।

विषम ज्वर विघातक

निःसंख्य - सार - शरणं शरणं शरण्य,
मासाद्य सादित - रिपु प्रथितावदानम्।
त्वत्पाद - पंकजमपि प्रणिधान - वन्ध्यो,
वन्ध्योऽस्मि चेद्भुवन पावन हा हतोऽस्मि।।40।।

अशरण शरण शरण प्रतिपालक, जगपति जगती के ईश।
गुण अनन्त के धारी भगवन्, कर्म विजेता हे जगदीश!।।
तव पद पंकज में रहकर भी, ध्यान से हम प्रभु रहित रहे।
इसीलिए हे प्रभुवर! हमने, कर्मों के घनघात सहे।।40।।

ॐ ह्रीं सौभाग्यदायकपदकमलयुगाय क्लींमहाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / दीप प्रज्ज्वलनं करोमि।

अस्त्र-शस्त्र विघातक

देवेन्द्र - वन्द्य विदिताखिल - वस्तुसार!
संसार - तारक विभो! भुवनाधिनाथ।
त्रायस्व देव करुणा - ह्रद मां पुनीहि,
सीदन्तमद्य भयद-व्यसनाम्बु-राशेः।।41।।

अखिल विश्व के ज्ञाता दृष्टा, वन्दनीय इन्द्रों से नाथ!।
भव तारक हे प्रभू! आप हो, करुणाकर त्रैलोकी नाथ!।।
करुणा सागर हे जिनेन्द्र! प्रभु, दुखिया का उद्धार करो।
महा भयानक दुख सागर से, मुझको भी प्रभु पार करो।।41।।

ॐ ह्रीं सर्वपदार्थवेदिने क्लींमहाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / दीप प्रज्ज्वलनं करोमि।

स्त्री सम्बन्धि समस्त रोग शामक

यद्यस्ति नाथ! भवदङ्घ्रि-सरोरुहाणां,
भक्ते फलं किमपि सन्तत-सञ्चिताया:।
तन्मेत्वदेक - शरणस्य शरण्य भूया:,
स्वामी! त्वमेव भुवनेऽत्र भवान्तरेऽपि।।42।।

हे शरणागत के प्रतिपालक, शरण आपकी हम आए।
किंचित पुण्य कमाया हमने, भक्ति चरण की जो पाए।।
यही चाहते हम भव-भव में, स्वामी मेरे आप रहो।
हम बन सकें आपके जैसे, बनो मेरे आदर्श अहो।।42।।

ॐ ह्रीं पुण्यबहुजनसेव्याय क्लींमहाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / दीप प्रज्ज्वलनं करोमि।

बन्धन मोचक

इत्थं समाहित-धियो विधिवज्जिनेन्द्र!,
सान्द्रोल्लसत्पुलक - कंचुकितांगभागा:।
त्वद्बिम्ब-निर्मल-मुखाम्बुज-बद्ध-लक्ष्या,
ये संस्तवं तव विभो! रचयन्ति भव्या:।।43।।

हे जिनेन्द्र! सावधान बुद्धि से, भव्य पुरुष जो भी आते।
रोमांचित हो मुख अम्बुज के, लक्ष्य बना दर्शन पाते।।
विधी पूर्वक संस्तव रचना, करते हैं जो 'विशद' महान।।
स्वर्गों के सुख पाने वाले, अतिशीघ्र पाते निर्वाण।।43।।

ॐ ह्रीं जन्ममृत्युनिवारकाय क्लींमहाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / दीप प्रज्ज्वलनं करोमि।

अन्तिम मंगल (आर्या छन्द)

जन नयन 'कुमुदचन्द्र'-प्रभास्वराः स्वर्ग-संपदो भुक्त्वा।
ते विगलित-मल-निचया अचिरान्मोक्षं प्रपद्यन्ते।।44।।

जन-जन के शुभ नयन कमल को, विकसाने वाले चन्द्रेश।
स्वर्ग सम्पदा पाने हेतू, करते सहसा स्वर्ग प्रवेश।।
किंचित् काल भोग करके, नर मानव गति में आते हैं।
कर्म शृंखला शीघ्र नाशकर, मोक्ष निकेतन पाते हैं।।44।।

ॐ ह्रीं कुमुदचन्द्रयतिसेवितपादाय क्लींमहाबीजाक्षर सहिताय श्री पार्श्वनाथाय नमः
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / दीप प्रज्ज्वलनं करोमि।

समुच्चय जयमाला

दोहा- पार्श्वनाथ के चरण में, वन्दन करूँ त्रिकाल।
कल्याण मंदिर स्तोत्र की, गाता हूँ जयमाल।।

चौपाई छन्द

लोकालोक अनन्तानन्त, कहते केवल ज्ञानी संत।
चौदह राजू लोक महान, ऊँचा सप्त राजू पहिचान।।
राजू एक मध्य विस्तार, मध्य सुमेरू अपरम्पार।
दक्षिण दिशा रही मनहार, भरत क्षेत्र है मंगलकार।।
आर्य खण्ड में भारत देश, जिसमें भाई रहा विशेष।
उज्जैनी नगरी में जान, विक्रम राजा रहे महान।।
उसी नगर में भक्त प्रधान, गंगा में करने स्नान।
वृद्ध महर्षि आए एक, जिनमें गुण थे श्रेष्ठ अनेक।।
योग्य भक्त की रही तलाश, देख भक्त को जागी आश।
श्रेष्ठ वदन था कान्तीमान, सुन्दर दिखता आलीशान।।

धक्का उसे लगाया जोर, वाद-विवाद हुआ फिर घोर।
शिष्य बने जिसकी हो हार, शर्त रखी यह अपरम्पार।।
ग्वाल बाल निकला तब एक, निर्णायक माना वह नेक।
कई श्लोक सुनाए श्रेष्ठ, आगम वर्णित रहे यथेष्ठ।।
ग्वाला उससे था अनभिज्ञ, श्रेष्ठ महर्षि अनुपम विज्ञ।
वह दृष्टांत सुनाए नेक, ग्वाला मुग्ध हुआ यह देख।।
भक्त ने गुरु को किया प्रणाम, कुमुद चन्द रक्खा तब नाम।
क्षपणक जिनका था उपनाम, जिन भक्ति था जिनका काम।।
आप गये चित्तौड़ प्रदेश, दर्श पार्श्व के हुए विशेष।
था स्तंभ वहाँ पर एक, उसमें थे संकेत अनेक।।
उस कुटीर का खोला द्वार, शास्त्र मिला जिसमें मनहार।
एक पृष्ठ पढ़ने के बाद, बन्द हुआ फिर शीघ्र कपाट।।
अदृश वाणी हुई विशेष, भाग्य नहीं पढ़ने का शेष।
एक बार यौगिक ने आन, चमत्कार दिखलाए महान।।
क्षपणक को वह माने ही, बने आप थे ज्ञान प्रवीण।
चमत्कार दिखलाओ यथेष्ट, तब मानेंगे तुमको श्रेष्ठ।।
स्वीकारा क्षण में आह्वान, भक्ति करने लगे महान।
महाकालेश्वर के स्थान, किया कपिल ने यह ऐलान।।
भूप ने कीन्हा यही कथन, दिखने लगे पार्श्व भगवान।
देखा वही श्रेष्ठ स्तंभ, भरा हुआ लोगों का दम्भ।।
''आकर्णितोऽपि'' आदी यह श्रेष्ठ, गुरु ने बोला काव्य यथेष्ठ।
तेजोमय शुभ आभावान, गुरु का तन हो गया महान।।
लोग किए तब बारम्बार, जैनाचार्य की जय-जयकार।
जैन धर्म कीन्हा स्वीकार, लोगों ने मुनिवर के द्वार।।
कल्याण मन्दिर यह स्तोत्र, मिला धर्म का अनुपम स्रोत।

(धत्तानन्द छन्द)

जय-जय जिन त्राता मुक्तिदाता, पार्श्वनाथ जिनवर वन्दन।
जय मोक्ष प्रदाता भाग्य विधाता, तव चरणों में करूँ नमन्।।

ॐ ह्रीं कमठोपद्रव जिताय कालसर्प दोष शांतिकारक कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय समुच्चय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा- पुष्पांजलि यह नाथ!, करते हैं हम भाव से।
विशद झुकाएँ माथ, कल्याण मन्दिर स्तोत्र को।।

पुष्पांजलि क्षिपेत्

कल्याण मंदिर स्तुति

तर्ज - श्री सिद्धचक्र का पाठ....

श्री कल्याण मंदिर का पाठ करो, भवि घृत का दीप जलाई।
जो है शिव सौख्य प्रदायी।। टेक।।
श्री कुमुदचन्द आचार्य कहे, स्तोत्र प्रणेता आप रहे।
है पार्श्वप्रभू जी की पावन भक्ति प्रदायी-जो है .....।।1।।
इक यौगिक अतिशय दिखलाए, जो हीन क्षपक को बतलाए।
तब क्षपणक ने जिन भक्ती, हृदय जगाई-जो है.....।।2।।
आकर्णतोऽपि आदिक जानो, मुनिवर स्तोत्र पढ़े मानो।
तब पार्श्व प्रभू जी प्रकट हुए अतिशायी,-जो है.....।।3।।
सब प्रभु की जय-जयकार किए, शुभ जैन धर्म स्वीकार किए।
स्तोत्र रहा यह जग जन को शिवदायी,-जो है.....।।4।।
जो जिनवर का गुणगान करें, वे अपना निज कल्याण करें।
श्री जिन भक्ती है, 'विशद' मोक्ष पद दायी,-जो है.....।।5।।

पार्श्वनाथ चालीसा

दोहा - हरी-भरी खुशहाल हो, धरती चारों ओर।
चालीसा गाते यहाँ, होके भाव विभोर।।
पार्श्वनाथ जिनराज के, पद में करूँ प्रणाम।
विशद भावना है यही, पाएँ हम शिवधाम।।

चौपाई

जय-जय पार्श्वनाथ हितकारी, महिमा तुमरी जग में न्यारी।
तुम हो तीर्थंकर पदधारी, तीन लोक में मंगलकारी।।
काशी नगरी है मनहारी, सुखी जहाँ की जनता सारी।
राजा अश्वसेन कहलाए, रानी वामा देवी गाए।।
जिनके गृह में जन्में स्वामी, पार्श्वनाथ जिन अन्तर्यामी।
देवों ने तव रहस्य रचाया, पाण्डुक वन में न्हवन कराया।।
वन में गये घूमने भाई, तपसी प्रभु को दिया दिखाई।
पंचाग्नि तप करने वाला, अज्ञानी या भोला भाला।।

तपसी तुम क्यों आग जलाते, हिंसा करके पाप कमाते।
नाग युगल जलते हैं कारे, मरने वाले हैं बेचारे।।
तपसी ने ले हाथ कुल्हाड़ी, जलने वाली लकड़ी फाड़ी।
सर्प देख तपस्वी घबराया, प्रभु ने उनको मंत्र सुनाया।।
नाग युगल मृत्यु को पाएँ, पद्मावती धरणेन्द्र कहाए।
तपसी मरकर स्वर्ग सिधाया, संवर नाम देव ने पाया।।
प्रभु बाल ब्रह्मचारी गाए, संयम पाकर ध्यान लगाए।
पौष कृष्ण एकादशि पाए, अहिच्छत्र में ध्यान लगाए।।
इक दिन देव वहाँ पर आया, उसके मन में बैर समाया।
किए कई उपसर्ग निराले, मन को कम्पित करने वाले।।
फिर भी ध्यान मग्न थे स्वामी, बनने वाले थे शिवगामी।
धरणेन्द्र पद्मावती आये, प्रभु के पद में शीश झुकाए।।
पद्मावति ने फण फैलाया, उस पर प्रभु जी को बैठाया।
धरणेन्द्र ने माया दिखलाई, फण का छत्र लगाया भाई।।
चैत कृष्ण को चौथ बताई, विजय हुई समता की भाई।
प्रभु ने केवल ज्ञान जगाया, समवशरण देवेन्द्र रचाया।।
सवा योजन विस्तार बताए, धनुष पचास गंध कुटि पाए।
दिव्य देशना प्रभु सुनाए, भव्यों को शिवमार्ग दिखाए।
गणधर दश प्रभु के बतलाए, गणधर प्रथम स्वयंभू गाए।
गिरि सम्मेद शिखर प्रभु आए, स्वर्ण भद्र शुभ कूट बताए।।
योग निरोध प्रभु जी पाए, एक माह का ध्यान लगाए।
श्रावण शुक्ल सप्तमी आई, खड्गासन से मुक्ति पाई।।
श्रावक प्रभु के पद में आते, अर्चा करके महिमा गाते।
भक्ति से जो ढोक लगाते, भोगी भोग सम्पदा पाते।।
पुत्रहीन सुत पाते भाई, दुखिया पाते सुख अधिकाई।
योगी योग साधना पाते, आत्म ध्यान कर शिवसुख पाते।।
पूजा करते हैं नर-नारी, गीत भजन गाते मनहारी।
हम भी यह सौभाग्य जगाएँ, बार-बार जिन दर्शन पाएँ।।
पार्श्व प्रभु के अतिशयकारी, तीर्थ बने कई हैं मनहारी।
बड़ा गाँव चँवलेश्वर जानो, विराट नगर नैनागिर मानो।।
नागफणी ऐलोरा गाया, मक्सी अहिक्षेत्र बतलाया।
सिरपुर तीर्थ बिजौलिया भाई, बीजापुर जानो सुखदाई।।

तीर्थ अडिंदा भी कहलाए, भरत सिन्धु जहँ स्वर्ग सिधाए।
'विशद' तीर्थ कई हैं शुभकारी, जिनके पद में ढोक हमारी।।

दोहा- पाठ करें चालीस दिन, दिन में चालिस बार।
तीन योग से पार्श्व का, पावें सौख्य अपार।।
सुख-शांति सौभाग्य युत, तन हो पूर्ण निरोग।
'विशद' ज्ञान को प्राप्त कर, पावें शिव पद भोग।।

श्री पार्श्वनाथ भगवान की आरती

भजन (तर्ज– तुमसे लागी लगन...)

तुम हो तारण तरण, वीर संकट हरण, पारस प्यारे।
हम तो आये हैं चरणों तुम्हारे।
कृपा हम पर करो, कष्ट सारे हरो, जिन हमारे।
हम तो आये हैं चरणों तुम्हारे।।टेक।।
काशी नगरी में जन्म लिया है, वामादेवी को धन्य किया।
अश्वसेन कुँवर, धरी वन की डगर, संयम धारे।।
हम तो आये हैं चरणों तुम्हारे।।1।।
तुमने छोड़ा है धनधाम सारा, छोड़ा जग में सभी का सहारा।
तपसी से यह कहा, क्यों जलाते अहा, नाग कारें।।
हम तो आये हैं चरणों तुम्हारे।।2।।
मंत्र नागों को प्रभु ने सुनाया, जन्म स्वर्गों में जीवों ने पाया।
लिये उपकार जिन, पार्श्व जी स्वार्थ बिन, प्रभु हमारे।।
हम तो आये हैं चरणों तुम्हारे।।3।।
प्रभु पारस ने ध्यान लगाया, कमठ पापी ने उपसर्ग ढाया।
धरणेन्द्र पद्मावती, आए नागपति, सुर विचारे।।
हम तो आये हैं चरणों तुम्हारे।।4।।
फण को पद्मावती ने फैलाया, प्रभु पारस को ऊपर बैठाया।
धरणेन्द्र आया वहाँ, फण का छत्र बना, उपसर्ग टारे।।
हम तो आये हैं चरणों तुम्हारे।।5।।
केवलज्ञान प्रभु ने जगाया, 'विशद' जीवों ने उपदेश पाया।
शिखर सम्मेदगिरि, पाये मुक्तिश्री, जिन हमारे।।
हम तो आये हैं चरणों तुम्हारे।।6।।

श्री सम्मेदशिखर विधान

"माण्डला"

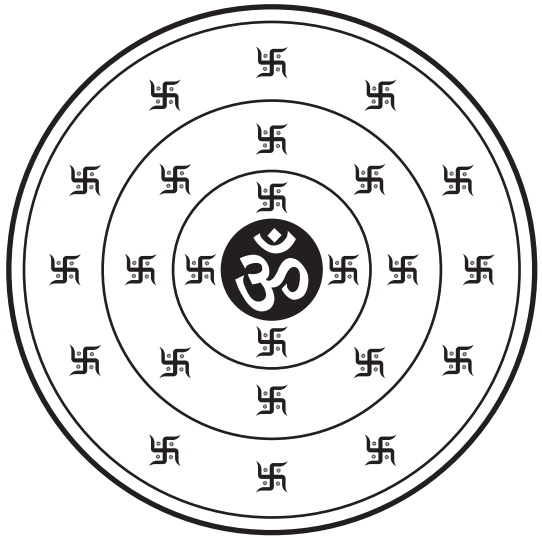

मध्य में - ॐ
प्रथम वलय - 4
द्वितीय वलय - 8
तृतीय वलय - 12
कुल वलय - 24 अर्घ्य

रचयिता :

प. पू. आचार्य विशदसागर जी महाराज

तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र श्री सम्मेदशिखर स्तवन

सोरठा - सम्मेदाचल धाम, शाश्वत तीरथराज है।
बारंबार प्रणाम, मंगलकारी जगत् में।।

श्री सम्मेद शिखर मंगलमय, शाश्वत तीर्थराज पावन।
भव्य जनों को मोक्ष प्रदायक, तीन लोक में मन भावन।।
जो त्रिकाल तीर्थंकर जिन का, मुनियों का है मुक्तीधाम।
उन सिद्धों के पद पंकज अरु, सिद्ध क्षेत्र को विशद प्रणाम।।1।।
तीर्थराज सम्मेद शिखर शुभ, सिद्ध क्षेत्र कहलाता है।
भव्य जीव तीर्थंकर आदिक, को शिवपुर पहुँचाता है।।
तीर्थंकर जिन भरत क्षेत्र के, यहाँ से मुक्ति पाते हैं।
स्वर्ग से आकर देव इन्द्र शुभ, प्रभु के चरण बनाते हैं।।2।।
तीर्थ वन्दना करने हेतू, जैन अजैन सभी जाते।
भाव शुद्धि से शक्ति हीन भी, चरणों के दर्शन पाते।।
बाल वृद्ध लूले लंगड़े भी, पर्वत पर चढ़ जाते हैं।
देव यहाँ भूले भटके को, रस्ता सही दिखाते हैं।।3।।
भाव सहित वन्दन करने से, दुर्गति से बच जाते हैं।
मोक्ष मार्ग में कारण है जो, ऐसा पुण्य कमाते हैं।।
रत्नत्रय को धारण कर जो, आतम ध्यान लगाते हैं।
अल्प काल में कर्म नाशकर, मोक्ष महल को जाते हैं।।4।।
हुण्डावसर्पिणी काल के कारण, बीस जिनेश्वर मोक्ष गये।
तीर्थराज सम्मेद शिखर पर, ध्यान लगाकर कर्म क्षये।।
तीव्र पाप का उदय हो जिनका, वह दर्शन न पाते हैं।
चक्रवात तूफान से घिरकर, अन्धे वत् हो जाते हैं।।5।।
अहंकार करने वाले कोई, गिरि पर न चढ़ पाते हैं।
कई बार कोशिश करके भी, नीचे ही रह जाते हैं।।
मोती बने ज्वार के दाने, नम्र भाव जिनने धारे।
किन्तू पापी और कषाई, दर्शन करने को हारे।।6।।
तीर्थराज की करो वन्दना, पुण्य सुफल अतिशय पाओ।
गिरि सम्मेद शिखर पर जाकर, भाग्य शीघ्र ही अजमाओ।।
मुनी आर्यिका बनकर भाई, या श्रावक के व्रत पाओ।
मुक्ती पाएँ तीर्थराज से, 'विशद' भावना यह भाओ।।7।।

दोहा - महिमा तीरथ राज की, को कर सके बखान।
शिवपद पाए जीव, या जाने भगवान।।

इत्याशीर्वाद

श्री सम्मेदशिखर पूजन

स्थापना

तीर्थ क्षेत्र सम्मेद गिरि, शाश्वत रहा महान।
विशद हृदय में आज हम, करते हैं आह्वान।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिन्! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं, अत्र मम् सन्निहितौ भव वषट् सन्निधिकरणं।

(मणुयानंद छन्द)

क्षीर सम नीर हम श्रेष्ठ भर लाए हैं, रोग जन्मादि के नाश को आए हैं।
तीर्थ की वन्दना आज करके सही, भावना मुक्ति की श्रेष्ठ मेरी रही।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिन् जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीर के साथ केशर घिसाई अहा, लक्ष्य भव ताप हरना हमारा रहा।
तीर्थ की वन्दना आज करके सही, भावना मुक्ति की श्रेष्ठ मेरी रही।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिन् संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

श्वेत अक्षत शुभ मुक्ताफल सम लिए, पूजा के भाव से यहाँ अर्पित किए।
तीर्थ की वन्दना आज करके सही, भावना मुक्ति की श्रेष्ठ मेरी रही।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिन् अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प केशर में अक्षत रंगाए हैं, काम के वाण विध्वंश को आए हैं।
तीर्थ की वन्दना आज करके सही, भावना मुक्ति की श्रेष्ठ मेरी रही।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिन् कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

शुद्ध नैवेद्य घृत के लिए यह भले, शीघ्र व्याधि क्षुधादि की मम गले।
तीर्थ की वन्दना आज करके सही, भावना मुक्ति की श्रेष्ठ मेरी रही।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिन् क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नमय दीप से, श्रेष्ठ ज्योती जले, मोहतम जो लगा, पूर्ण वह अब गले।
तीर्थ की वन्दना आज करके सही, भावना मुक्ति की श्रेष्ठ मेरी रही।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिन् मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप दश गंध से, यह बनाई सही, नाश हो कर्म का, प्राप्त हो शिव मही।
तीर्थ की वन्दना आज करके सही, भावना मुक्ति की श्रेष्ठ मेरी रही।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिन् अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीफलादि प्रभु के चरण में हम धरें, मोक्षफल शीघ्र ही प्राप्त हम अब करें।
तीर्थ की वन्दना आज करके सही, भावना मुक्ति की श्रेष्ठ मेरी रही।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिन् मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीर गंधादि के अर्घ्य हम लाए हैं, प्राप्त करने सुपद आज हम आए हैं।
तीर्थ की वन्दना आज करके सही, भावना मुक्ति की श्रेष्ठ मेरी रही।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिन् अनर्घपद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देते शांतिधार हम, दोषों का क्षय होय।
जिन पूजा व्रत में विशद, दोष लगे न कोय।।

शान्तये शांतिधारा...

जिन पूजा के भाव से, होवें कर्म विनाश।
जन्म मरण की श्रृंखला, का हो जाए नाश।।

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्...

अर्घ्यावलि

तीर्थराज सम्मेदगिरि, है अति महती महान।
पुष्पांजलि करते विशद, करने यहाँ विधान।।

मण्डलयोपरि पुष्पांजलि क्षिपेत्

चौबीस तीर्थंकरों के गणधरों की कूट

तीर्थंकर चौबीस हुए हैं, श्रेष्ठ ऋद्धि सिद्धी धारी।
पूजनीय गणनायक उनके, हुए जहाँ में अविकारी।।
चरण वन्दना करने हेतू, दीप जलाने लाए हैं।
अर्चा करने आज यहाँ पर, बहुत दूर से आए हैं।।1।।

दोहा - गण नायक तीर्थेश के, हुए प्रमुख चौबीस।
मुक्ती पद पाएँ 'विशद', झुका रहे हम शीश।।

ॐ ह्रीं श्री गौतम स्वामी आदि गणधर देवग्राम उद्यान से आदि भिन्न-भिन्न, स्थानों से निर्वाण पधारे हैं तिनके चरणारविन्द में प्रज्ज्वलित अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / दीप प्रज्ज्वलनं करोमि।

श्री कुन्थुनाथ जी की टोंक (ज्ञानधर कूट)

कुन्थुनाथ त्रय पद के धारी, बनकर कीन्हें कर्म विनाश।
कुन्थुनाथ त्रयपद के स्वामी!, किया आपने शिवपुर वास।।
चरण वन्दना करने हेतु, दीप जलाने लाए हैं।
अर्चा करने आज यहाँ पर, बहुत दूर से आए हैं।।2।।

दोहा - तीन लोक में श्रेष्ठतम, कुन्थुनाथ भगवान।
सारे कर्म विनाश कर, पाया पद निर्वाण।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित ज्ञानधरकूट से श्री कुन्थुनाथ तीर्थंकरादि छियानवे कोड़ा कोड़ी छियानवे करोड़ बत्तीस लाख, छियानवे हजार सात सौ बयालीस मुनि मोक्ष पधारे जिनके चरणारविन्द में प्रज्ज्वलित अर्घ्यं निर्व. स्वाहा/दीप प्रज्ज्वलनं करोमि।

(ज्ञानधर कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास)

श्री नमिनाथजी की टोंक (मित्रधर कूट)

गुण अनन्त को पाने वाले, नमीनाथ जी हुए महान्।
निज गुण पाने हेतु आपका, करते हैं हम भी गुणगान।।
चरण वन्दना करने हेतू, दीप जलाने लाए हैं।
अर्चा करने आज यहाँ पर, बहुत दूर से आए हैं।।3।।

दोहा - रत्नत्रय को धारकर, कर्म घातिया नाश।
नमि जिन मुक्ती पा लिए, करके ज्ञान प्रकाश।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित श्री नमिनाथ तीर्थंकरादि नौ कोड़ा कोड़ी एक अरब पैंतालिस लाख सात हजार नौ सौ बयालीस मुनि मोक्ष पधारे जिनके चरणारविन्द में प्रज्ज्वलित अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / दीप प्रज्ज्वलनं करोमि।

(मित्रधर कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास)

श्री अरहनाथजी की टोंक (नाटक कूट)

इस संसार सरोवर का कहीं, छोर नजर न आता है।
वियोग आपसे हे अर जिन! अब, और सहा न जाता है।।
चरण वन्दना करने हेतू, दीप जलाने लाए हैं।
अर्चा करने आज यहाँ पर, बहुत दूर से आए हैं।।4।।

दोहा - कर्मारीनाशे सभी, अरहनाथ भगवान।
त्रय पद के धारी हुए, शिवपुर किया प्रयाण।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित नाटक कूट से श्री अरहनाथ तीर्थंकरादि निन्यानवे करोड़ निन्यानवे लाख निन्यानवे हजार नौ सौ निन्यानवे मुनि मोक्ष पधारे जिनके चरणारविन्द में प्रज्ज्वलित अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / दीप प्रज्ज्वलनं करोमि।

(नाटक कूट के दर्शन का फल छियानवे करोड़ उपवास)

मल्लिनाथजी की टोंक (संबल कूट)

श्री मल्लिनाथ की महिमा का, कोई भी पार नहीं पाए।
गुण गाथा कौन कहे स्वामी, कहने वाला भी थक जाए।।
चरण वन्दना करने हेतू, दीप जलाने लाए हैं।
अर्चा करने आज यहाँ पर, बहुत दूर से आए हैं।।5।।

दोहा - जीते काम कषाय को, बने श्री के नाथ।
शिवपुर के राही बने, जग में मल्लीनाथ।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित संबलकूट से श्री मल्लिनाथ तीर्थंकरादि निन्यानवे करोड़ मुनि मोक्ष पधारे जिनके चरणारविन्द में प्रज्ज्वलित अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / दीप प्रज्ज्वलनं करोमि।

श्री श्रेयांसनाथजी की टोंक (संकुल कूट)

सर्व गुणों को पाने वाले, श्रेयनाथ जिन जग के ईश।
स्वर्ग लोक से इन्द्र चरण में, आकर यहाँ झुकाते शीश।।

चरण वन्दना करने हेतू, दीप जलाने लाए हैं।
अर्चा करने आज यहाँ पर, बहुत दूर से आए हैं।।6।।

दोहा - सर्व कर्म को नाशकर, शिवपुर किया प्रयाण।
श्रेयस पाने को 'विशद', करते हम गुणगान।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित संकुलकूट से श्री श्रेयांसनाथ तीर्थंकरादि छियानवे कोड़ा कोड़ी छियानवे करोड़ छियानवे लाख नौ हजार पाँच सौ बयालीस मुनि मोक्ष पधारे जिनके चरणारविन्द में प्रज्ज्वलित अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / दीप प्रज्ज्वलनं करोमि।

(संकुल नामक कूट के दर्शन का फल एक करोड़ प्रोषध उपवास)

श्री पुष्पदंतजी की टोंक (सुप्रभ कूट)

पुष्पदंत जिनराज आपका, दिनकर सा है रूप महान्।
रत्नत्रय को पाकर स्वामी, किया आपने निज कल्याण।।
चरण वन्दना करने हेतू, दीप जलाने लाए हैं।
अर्चा करने आज यहाँ पर, बहुत दूर से आए हैं।।7।।

दोहा - पुष्पदन्त जिन आप हैं, अविनाशी अविकार।
चरण वन्दना कर रहे, हे प्रभु! बारम्बार।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित सुप्रभकूट से श्री पुष्पदंत तीर्थंकरादि एक कोड़ा कोड़ी निन्यानवे लाख सात हजार चार सौ अस्सी मुनि मोक्ष पधारे जिनके चरणारविन्द में प्रज्ज्वलित अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / दीप प्रज्ज्वलनं करोमि।

(सुप्रभ कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास)

श्री पदमप्रभुजी की टोंक (मोहन कूट)

दर्श ज्ञान चारित्र पद्मप्रभ, पाकर पाये केवल ज्ञान।
कर्म कालिमा को विनाशकर, पाया शिवपुर में स्थान।।
चरण वन्दना करने हेतू, दीप जलाने लाए हैं।
अर्चा करने आज यहाँ पर, बहुत दूर से आए हैं।।8।।

दोहा - पद्म प्रभु के दर्श से, होता है अति हर्ष।
सद्गुण का भवि जीव के, होता है उत्कर्ष।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित मोहनकूट से श्री पदमप्रभु तीर्थंकरादि निन्यानवे कोड़ा कोड़ी सत्तासी लाख तियालीस हजार सात सौ सत्ताईस मुनि मोक्ष पधारे जिनके चरणारविन्द में प्रज्ज्वलित अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / दीप प्रज्ज्वलनं करोमि।

(मोहन कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास)

श्री मुनिसुव्रतनाथजी की टोंक (निर्जर कूट)

मुनिसुव्रत मुनिव्रत के धारी, हुए लोक में सर्व महान्।
कर्मदहन कर किया आपने, 'विशद' आत्मा का उत्थान।।
चरण वन्दना करने हेतू, दीप जलाने लाए हैं।
अर्चा करने आज यहाँ पर, बहुत दूर से आए हैं।।9।।

दोहा - शिवपुर जाके आपने, कीन्हा है विश्राम।
मुनिसुव्रत के पद युगल, करते चरण प्रणाम।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित निर्जरकूट से श्री मुनिसुव्रतनाथ तीर्थंकरादि निन्यानवे कोड़ा कोड़ी नौ करोड़ निन्यानवे लाख नौ सौ निन्यानवे मुनि मोक्ष पधारे जिनके चरणारविन्द में प्रज्ज्वलित अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / दीप प्रज्ज्वलनं करोमि।

(निर्जर नामक कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास)

श्री चन्द्रप्रभजी की टोंक (ललित कूट)

चन्द्र कान्ति सम चन्द्रनाथ जी, शोभित होते आभावान।
ललित कूट से मुक्ती पाए, शिवपुर दाता हैं भगवान।।
चरण वन्दना करने हेतू, दीप जलाने लाए हैं।
अर्चा करने आज यहाँ पर, बहुत दूर से आए हैं।।10।।

दोहा - उज्ज्वल गुण धरचन्द्र प्रभु, उज्ज्वलता के कोष।
सर्व कर्म क्षय कर हुए, प्रभू आप निर्दोष।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित ललितकूट से श्री चन्द्रप्रभु तीर्थंकरादि नौ सौ चौरासी अरब बहत्तर करोड़ अस्सी लाख चौरासी हजार पाँच सौ पचानवे मुनि मोक्ष पधारे जिनके चरणारविन्द में प्रज्ज्वलित अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / दीप प्रज्ज्वलनं करोमि।

(ललित कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास)

श्री आदिनाथजी की टोंक

आदिनाथ सृष्टी के कर्त्ता, हुए लोक में मंगलकार।
स्वयं बुद्ध हे नाथ! आपके, चरणों वन्दन बारम्बार।।
चरण वन्दना करने हेतू, दीप जलाने लाए हैं।
अर्चा करने आज यहाँ पर, बहुत दूर से आए हैं।।11।।

दोहा - आदिम तीर्थंकर हुए, भक्तों के भगवान।
अष्टापद से शिव गये, करने जग कल्याण।।

ॐ ह्रीं श्री कैलाश सिद्धक्षेत्र स्थित कूट से माघ सुदी चौदस को श्री आदिनाथ तीर्थंकरादि व असंख्यात मुनि मोक्ष पधारे जिनके चरणारविन्द में प्रज्ज्वलित अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / दीप प्रज्ज्वलनं करोमि।

श्री शीतलनाथजी की टोंक (विद्युतवर कूट)

जल चन्दन से भी अति शीतल, शीतल नाथ कहाए हैं।
हे नाथ! आपके चरण शरण, शीतलता पाने आए हैं।।
चरण वन्दना करने हेतू, दीप जलाने लाए हैं।
अर्चा करने आज यहाँ पर, बहुत दूर से आए हैं।।12।।

दोहा - शीतलता इस भक्त को, कर दो 'विशद' प्रदान।
शिव नगरी के ईश तुम, दो शिव पद का दान।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित विद्युतकूट से श्री शीतलनाथ तीर्थंकरादि अठारह कोड़ा कोड़ी बयालीस करोड़ बत्तीस लाख बयालीस हजार नौ सौ पाँच मुनि मोक्ष पधारे जिनके चरणारविन्द में प्रज्ज्वलित अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / दीप प्रज्ज्वलनं करोमि।

(विद्युतवर कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास)

श्री अनन्तनाथजी की टोंक (स्वयंप्रभ कूट)

गुण अनन्त के धारी हैं जो, जिन अनन्त है जिनका नाम।
गुण अनन्त पाने को यह जग, करता बारम्बार प्रणाम।।
चरण वन्दना करने हेतू, दीप जलाने लाए हैं।
अर्चा करने आज यहाँ पर, बहुत दूर से आए हैं।।13।।

दोहा - पूज्य हुए इस लोक में, हे अनन्त! जिन आप।
तव गुण पाने के लिए, करूँ नाम का जाप।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित स्वयंप्रभकूट से श्री अनन्तनाथ तीर्थंकरादि छियानवे कोड़ा कोड़ी सत्तर करोड़ सत्तर लाख सत्तर हजार सात सौ मुनि मोक्ष पधारे जिनके चरणारविन्द में प्रज्ज्वलित अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / दीप प्रज्ज्वलनं करोमि।

(स्वयंप्रभ कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास)

श्री संभवनाथजी की टोंक (धवल कूट)

हे सम्भव! जिन सम्भव कर दो, हमको शिवपुर मार्ग अहा।
जो पद पाया है प्रभु तुमने, पाने का मम् लक्ष्य रहा।।

चरण वन्दना करने हेतू, दीप जलाने लाए हैं।
अर्चा करने आज यहाँ पर, बहुत दूर से आए हैं।।14।।

दोहा - सम्भव जिन सम्भाव से, किये कर्म का नाश।
भ्रमण नाश मम हो प्रभू, हो शिवपुर में वास।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित धवलकूट से श्री सम्भवनाथ तीर्थंकरादि नौ कोड़ा कोड़ी बहत्तर लाख ब्यालीस हजार पाँच सौ मुनि मोक्ष पधार जिनके चरणारविन्द में प्रज्ज्वलित अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / दीप प्रज्ज्वलनं करोमि।

(धवल कूट के दर्शन का फल ब्यालीस लाख उपवास)

श्री वासुपूज्य भगवान की टोंक

है पूज्य लोक में जैन धर्म, जिन वासुपूज्य अपनाये हैं।
जिसने भी जैन धर्म पाया, वह शिवपदवी को पाये हैं।।
हम भक्त आपके गुण गाकर, चरणों में दीप जलाते हैं।
हे नाथ! आपके चरणों में हम, सादर शीश झुकाते हैं।।15।।

दोहा - जगत पूज्यता पा गये, वासुपूज्य भगवान।
चंपापुर में पाए हैं, प्रभु पाँचों कल्याण।।

ॐ ह्रीं श्री चम्पापुर सिद्धक्षेत्र से भादवा सुदी चौदस को श्री वासुपूज्य तीर्थंकरादि असंख्यात मुनि मोक्ष पधारे जिनके चरणारविन्द में प्रज्ज्वलित अर्घ्यं निर्व. स्वाहा/दीप प्रज्ज्वलनं करोमि।

श्री अभिनंदननाथजी की टोंक (आनन्द कूट)

हे अभिनन्दन! आनन्द धाम, आनन्द कूट से शिव पाए।
आनन्द प्राप्त करने प्रभु जी, हम भी तव चरणों में आए।।
हम भक्त आपके गुण गाकर, चरणों में दीप जलाते हैं।
हे नाथ! आपके चरणों में हम, सादर शीश झुकाते हैं।।16।।

दोहा - अभिनंदन तव चरण में, वन्दन मेरा त्रिकाल।
भक्त आपको पूजकर, होते मालामाल।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित आनंदकूट से श्री अभिनन्दन तीर्थंकरादि बहत्तर कोड़ा कोड़ी सत्तर करोड़ सत्तर लाख ब्यालीस हजार सात सौ मुनि मोक्ष पधारे जिनके चरणारविन्द में प्रज्ज्वलित अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / दीप प्रज्ज्वलनं करोमि।

(आनन्द कूट के दर्शन का फल एक लाख उपवास)

श्री धर्मनाथजी की टोंक (सुदत्तवर कूट)

हे धर्म शिरोमणि धर्मनाथ!, तुम धर्म ध्वजा के धारी हो।
तुम मंगलमय हो इस जग में, प्रभु अतिशय मंगलकारी हो।।
हम भक्त आपके गुण गाकर, चरणों में दीप जलाते हैं।
हे नाथ! आपके चरणों में हम, सादर शीश झुकाते हैं।।17।।

दोहा - धर्म धुरन्धर धर्मधर, धर्मनाथ भगवान।
जग जीवों को आपने, दिया धर्म का ज्ञान।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित सुदत्तवरकूट से श्री धर्मनाथ तीर्थंकरादि उनतीस कोड़ा कोड़ी उन्नीस करोड़ नौ लाख नौ हजार सात सौ पंचानवे मुनि मोक्ष पधारे जिनके चरणारविन्द में प्रज्ज्वलित अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / दीप प्रज्ज्वलनं करोमि।

(सुदत्तवर कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास)

श्री सुमतिनाथजी की टोंक (अविचल कूट)

हे सुमतिनाथ! तुमने जग को, शुभ मति दे शिवपद दान किया।
भक्तों को तुमने करुणामय, होकर सौभाग्य प्रदान किया।।
हम भक्त आपके गुण गाकर, चरणों में दीप जलाते हैं।
हे नाथ! आपके चरणों में हम, सादर शीश झुकाते हैं।।18।।

दोहा - कुमति विनाशक आप हो, सुमति नाथ भगवान।
हमको भी हे नाथ! अब, कर दो सुमति प्रदान।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित अविचलकूट से श्री सुमतिनाथ तीर्थंकरादि एक कोड़ा कोड़ी चौरासी करोड़ बहत्तर लाख इक्यासी हजार सात सौ मुनि मोक्ष पधारे जिनके चरणारविन्द में प्रज्ज्वलित अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / दीप प्रज्ज्वलनं करोमि।

(अविचल कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास)

श्री शान्तिनाथजी भगवान की टोंक (कुन्दप्रभ कूट)

हे शांतिनाथ! शांती दाता, जन-जन को शांति प्रदान करो।
भवि जीवों के उर में स्वामी, अब 'विशद' भावना आप भरो।।
हम भक्त आपके गुण गाकर, चरणों में दीप जलाते हैं।
हे नाथ! आपके चरणों में हम, सादर शीश झुकाते हैं।।19।।

दोहा - शान्ती का दरिया बहे, शान्तिनाथ के द्वार।
सद्भक्ती से भक्त का, होता बेड़ा पार।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित कुन्दप्रभकूट से श्री शांतिनाथ तीर्थंकरादि नौ कोड़ा कोड़ी नौ लाख नौ हजार नौ सौ निन्यानवे मुनि मोक्ष पधारे जिनके चरणारविन्द में प्रज्ज्वलित अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / दीप प्रज्ज्वलनं करोमि।

(कुन्दप्रभ कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास)

श्री महावीर स्वामी की टोंक

तत्त्वों का सार दिया तुमने, जग को सन्मार्ग दिखाया है।
प्रभु दर्शन करके मन मेरा, गद्गद् होकर हर्षाया है।।
हम भक्त आपके गुण गाकर, चरणों में दीप जलाते हैं।
हे नाथ! आपके चरणों में हम, सादर शीश झुकाते हैं।।20।।

दोहा - महावीर हे वीर! जिन, सन्मति हे अतिवीर!।
वर्धमान पावापुरी, से पाए भव तीर।।

ॐ ह्रीं श्री पावापुर सिद्धक्षेत्र से कार्तिक वदी अमावस को श्री वर्द्धमान तीर्थंकरादि व असंख्यात मुनि मोक्ष पधारे जिनके चरणारविन्द में प्रज्ज्वलित अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / दीप प्रज्ज्वलनं करोमि।

श्री सुपार्श्वनाथजी की टोंक (प्रभास कूट)

जिनवर सुपार्श्व ने संयम धर, निज को निहाल कर डाला है।
प्रभु के चरणाम्बुज का दर्शन, शुभ शिव पद देने वाला है।।
हम भक्त आपके गुण गाकर, चरणों में दीप जलाते हैं।
हे नाथ! आपके चरणों में हम, सादर शीश झुकाते हैं।।21।।

दोहा - जिसने सुपार्श्व का भाव से, किया 'विशद' गुणगान।
अल्प समय में जीव वह, होवें प्रभू समान।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित प्रभासकूट से श्री सुपार्श्वनाथ तीर्थंकरादि उनचास कोड़ा कोड़ी चौरासी करोड़ बहत्तर लाख सात हजार सात सौ ब्यालीस मुनि मोक्ष पधारे जिनके चरणारविन्द में प्रज्ज्वलित अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / दीप प्रज्ज्वलनं करोमि।

(प्रभास कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास)

श्री विमलनाथ जी की टोंक (सुवीर कूट)

हैं विमलनाथ मल रहित विमल, निर्मलता श्रेष्ठ प्रदान करें।
जो शरणागत बनकर आते, भक्तों का कल्मष पूर्ण हरें।।

हम भक्त आपके गुण गाकर, चरणों में दीप जलाते हैं।
हे नाथ! आपके चरणों में हम, सादर शीश झुकाते हैं।।22।।

दोहा - विमलनाथ तव चरण में, पाएँ हम विश्राम।
हमको शुभ आशीष दो, बारम्बार प्रणाम।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित सुवीरकूट से श्री विमलनाथ तीर्थंकरादि सत्तर कोड़ा कोड़ी साठ लाख छः हजार सात सौ ब्यालीस मुनि मोक्ष पधारे जिनके चरणारविन्द में प्रज्ज्वलित अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / दीप प्रज्ज्वलनं करोमि।

(सुवीर कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास)

श्री अजितनाथजी की टोंक (सिद्धवर कूट)

प्रभु अजितनाथ हैं कर्मजयी, तुमने कर्मों का नाश किया।
पाकर के केवलज्ञान प्रभु, इस जग में ज्ञान प्रकाश किया।।
हम भक्त आपके गुण गाकर, चरणों में दीप जलाते हैं।
हे नाथ! आपके चरणों में हम, सादर शीश झुकाते हैं।।23।।

दोहा - रहे अपावन भक्त हम, पावन हो प्रभु आप।
अजितनाथ का दर्श कर, कट जाते हैं पाप।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित सिद्धवरकूट से श्री अजितनाथ तीर्थंकरादि एक अरब अस्सी करोड़ चौवन लाख मुनि मोक्ष पधारे जिनके चरणारविन्द में प्रज्ज्वलित अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / दीप प्रज्ज्वलनं करोमि।

(सिद्धवर कूट के दर्शन का फल बत्तीस करोड़ उपवास)

श्री नेमिनाथ की टोंक

हे नेमिनाथ! करुणा निधान, सब पर करुणा बरसाते हो।
जो शरणागत बन जाते हैं, उनको भव पार लगाते हो।।
हम भक्त आपके गुण गाकर, चरणों में दीप जलाते हैं।
हे नाथ! आपके चरणों में हम, सादर शीश झुकाते हैं।।24।।

दोहा - राज्य तजा राजुल तजी, छोड़ा सब धन धाम।
गिरनारी से शिव गये, तव पद 'विशद' प्रणाम।।

ॐ ह्रीं श्री गिरनार सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित कूट से आषाढ़ सुदी सातै को श्री नेमिनाथ तीर्थंकरादि व बहत्तर करोड़ सात सौ मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में प्रज्ज्वलित अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / दीप प्रज्ज्वलनं करोमि।

श्री पार्श्वनाथजी की टोंक (स्वर्णभद्र कूट)

उपसर्गों में सघर्षों में, तुमने समता को धारा है।
कर्मों का शत्रू दल आगे, हे पार्श्व! आपके हारा है।।
हम भक्त आपके गुण गाकर, चरणों में दीप जलाते हैं।
हे नाथ! आपके चरणों में हम, सादर शीश झुकाते हैं।।25।।

दोहा - ध्यान लीन होकर प्रभू, सुतप किया दिन रैन।
समता धारे पार्श्व जिन, हुए नहीं बैचेन।।

ॐ ह्रीं सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित स्वर्णभद्रकूट से श्री पार्श्वनाथ तीर्थंकरादि ब्यासी करोड़ चौरासी लाख पैंतालीस हजार सात सौ ब्यालिस मुनि मोक्ष पधारे जिनके चरणारविन्द में प्रज्ज्वलित अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / दीप प्रज्ज्वलनं करोमि।

(स्वर्णभद्र कूट के दर्शन का फल सोलह करोड़ उपवास)

श्री पार्श्वनाथजी का अर्घ (चौपड़ा कुण्ड)

पार्श्वनाथ! करुणा निधान, तव महिमा है मंगलकारी।
शांतिदूत! जिनवर प्रधान, हे वीतराग! जग हितकारी।।
जो नत होकर तव चरणों में, श्रद्धा से दीप जलाता है।
सौभाग्य प्राप्त कर लेता वह, अन्तिम शिवपुर को जाता है।।
हम भक्ती करने हेतु नाथ!, तव चरण शरण में आये हैं।
यह अर्घ्य बनाकर प्रासुक शुभ, प्रभु यहाँ चढ़ाने लाए हैं।।

ॐ ह्रीं श्री चौपड़ा कुण्ड विराजित चिंतामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जिनके चरणारविन्द में प्रज्ज्वलित अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / दीप प्रज्ज्वलनं करोमि।

सिद्धपरमेष्ठी का अर्घ

प्रभु अशुभ भाव की ज्वाला यह, सदियों से जलाती आई है।
उसमें ही जलते रहे 'विशद', चेतन की सुधि न पाई है।।
दीप जलाकर हम भी, वसु गुण प्रकटाने आए हैं।
पाने अनर्घ अविनाशी पद, यह दीप जलाकर लाए हैं।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः, श्री सम्मत्तणाण वीर्य सुहमं अवग्गहणं अगुरुलघु अव्वावाहं अष्ट गुण संयुक्तेभ्यो जिनके चरणारविन्द में प्रज्ज्वलित अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / दीप प्रज्ज्वलनं करोमि।

जयमाला

दोहा- शाश्वत तीरथ राज है, गिरि सम्मेद महान।
जयमाला गाते यहाँ, करने जिन गुण गान।।

(शम्भू छंद)

तीर्थराज सम्मेद शिखर शुभ, सिद्ध क्षेत्र कहलाता है।
भव्य जीव तीर्थंकर आदी, को शिवपुर पहुँचाता है।।
तीर्थंकर जिन भरत क्षेत्र के, यहाँ से मुक्ति पाते हैं।
स्वर्ग से आकर देव इन्द्र शुभ, प्रभु के चरण बनाते हैं।।1।।
तीर्थ वन्दना करने हेतू, जैन अजैन सभी जाते।
भाव शुद्धि से शक्ति हीन भी, चरणों के दर्शन पाते।।
बाल वृद्ध लूले लंगड़े भी, पर्वत पर चढ़ जाते हैं।
देव यहाँ भूले भटके को, रस्ता सही दिखाते हैं।।2।।
भाव सहित वन्दन करने से, दुर्गति से बच जाते हैं।
मोक्ष मार्ग में कारण है जो, ऐसा पुण्य कमाते हैं।।
रत्नत्रय को धारण कर जो, आतम ध्यान लगाते हैं।
अल्प काल में कर्म नाशकर, मोक्ष महल को जाते हैं।।3।।
हुण्डावसर्पिणी काल के कारण, बीस जिनेश्वर मोक्ष गये।
तीर्थराज सम्मेद शिखर पर, ध्यान लगाकर कर्म क्षये।।
तीव्र पाप का उदय हो जिनका, वह दर्शन न पाते हैं।
चक्रवात तूफान से घिरकर, अन्धे वत् हो जाते हैं।।4।।
अहंकार करने वाले कोई, गिरि पर न चढ़ पाते हैं।
कई बार कोशिश करके भी, नीचे ही रह जाते हैं।।
मोती बने ज्वार के दाने, नम्र भाव जिनने धारे।
किन्तू पापी और कषाई, दर्शन करने को हारे।।5।।
तीर्थराज की करो वन्दना, पुण्य सुफल अतिशय पाओ।
गिरि सम्मेद शिखर पर जाकर, भाग्य शीघ्र ही अजमाओ।।
मुनि आर्यिका बनकर भाई, या श्रावक के व्रत पाओ।
मुक्ति पाएँ तीर्थराज से, 'विशद' भावना यह भाओ।।6।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिन् पूर्णार्घ्यं निर्व.स्वाहा।

दोहा- महिमा तीरथ राज की, को कर सके बखान।
शिवपद पाए जीव जो, जाने वह भगवान।।

इत्याशीर्वाद पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्...

श्री सम्मेदशिखर चालीसा

दोहा - शाश्वत तीरथराज है, शिखर सम्मेद महान्।
भक्ति भाव से कर रहे, यहाँ विशद गुणगान।।
नव कोटी से देव नव, का करते हम ध्यान।
जाकर तीरथ राज से, पाएँ हम निर्वाण।।

(चौपाई)

शाश्वत तीर्थराज शुभकारी, गिरि सम्मेद शिखर मनहारी।।1।।
कण कण पावन जिसका पाया, मुनियों ने जहाँ ध्यान लगाया।।2।।
संत यहाँ आकर तप कीन्हें, निज चेतन में चित् जो दीन्हें।।3।।
सौ सौ इन्द्र यहाँ पर आते, प्रभु के पद में शीश झुकाते।।4।।
हर युग के तीर्थंकर आते, मुक्तिवधू को यहाँ से पाते।।5।।
कालदोष के कारण जानो, इस युग का अन्तर पहिचानो।।6।।
बीस जिनेश्वर यहाँ पे आए, गिरि सम्मेद से मुक्ती पाए।।7।।
इन्द्रराज स्वर्गों से आए, रत्न कांकिणी साथ में लाए।।8।।
चरण उकेरे जिन के भाई, जिनकी महिमा है सुखदायी।।9।।
प्रथम टोंक गणधर की जानो, चौबिस चरण बने शुभ मानो।।10।।
द्वितीय कूट ज्ञानधर भाई, कुन्थुनाथ जिनवर की गाई।।11।।
कूट मित्रधर नमि जिन पाए, कर्म नाश कर मोक्ष सिधाए।।12।।
नाटककूट रही मनहारी, अरहनाथ की मंगलकारी।।13।।
संबलकूट की महिमा गाते, मल्लिनाथ जहाँ पूजे जाते।।14।।
संकुल कूट श्रेष्ठ कहलाए, श्री श्रेयांस मुक्ती पद पाए।।15।।
सुप्रभ कूट की महिमा न्यारी, पुष्पदंत जिन की मनहारी।।16।।
मोहन कूट पद्म प्रभु पाए, जन-जन के मन को जो भाए।।17।।
पूज्य कूट निर्जर फिर आए, मुनिसुव्रत जी शिवपद पाए।।18।।
ललितकूट चन्द्रप्रभु स्वामी, हुए यहाँ से अन्तर्यामी।।19।।
विद्युतवर है कूट निराली, शीतल जिन की महिमा शाली।।20।।
कूट स्वयंप्रभ आगे आए, जिन अनन्त की महिमा गाए।।21।।
धवलकूट फिर आगे जानो, संभव जिन की जो पहिचानो।।22।।
आनन्द कूट पे बन्दर आते, अभिनन्दन जिन के गुण गाते।।23।।
कूट सुदत्त श्रेष्ठ शुभ गाते, धर्मनाथ जिन पूजे जाते।।24।।
अविचल कूट पे प्राणी जाते, सुमतिनाथ पद पूज रचाते।।25।।
कुन्दकूट पर प्राणी सारे, शान्तिनाथ पद चिह्न पखारे।।26।।

कूट प्रभास है महिमाशाली, जिन सुपार्श्व पद चिन्हों वाली।।27।।
कूट सुवीर पे जो भी जाए, विमलनाथ पद दर्शन पाए।।28।।
सिद्धकूट पर सुर-नर आते, अजितनाथ पद शीश झुकाते।।29।।
कूट स्वर्णप्रभ मंगलकारी, पार्श्वप्रभु का है मनहारी।।30।।
पक्षी भी तन्मय हो जाते मानो प्रभु की महिमा गाते।।31।।
मोक्ष मार्ग दर्शाने वाले, जीवन सफल बनाने वाले।।32।।
दूर-दूर से श्रावक आते, शुद्ध भाव से महिमा गाते।।33।।
नंगे पैरों चढ़ते जाते, प्रभु के पद में ध्यान लगाते।।34।।
भाँति-भाँति की भजनावलियाँ, वीतराग भावों की कलियाँ।।35।।
पुण्यवान ही दर्शन पावें, नरक पशु गति बंध नशावें।।36।।
तीर्थ वन्दना करने जावें, कर्मों के बन्धन कट जावें।।37।।
देव वन्दना करने आवें, चमत्कार कई इक दिखलावें।।38।।
भूले को भी राह दिखावें, दुखियों के सब दुःख मिटावें।।39।।
कभी स्वान बनकर आ जाते, डोली वाले बनकर आते।।40।।
गिरवर तुमरी बलिहारी, भाव सहित गाते हैं सारी।।41।।
तुमरे गुण सारा जग गांए, सूर्य चाँद महिमा दिखलाए।।42।।
सन्त सुमुनि अर्हन्त निराले, शिव पदवी को पाने वाले।।43।।
गिरि सम्मेद शिखर की महिमा, बतलाने आये हैं गरिमा।।44।।
तुम हो सबके तारणहारे, दीन हीन सब पापी तारे।।45।।
आप स्वर्ग मुक्ती के दाता, ज्ञानी अज्ञानी के त्राता।।46।।
तुमरी धूल लगाकर माथे, भाव सहित तव गाथा गाते।।47।।
मेरी पार लगाओ नैया, भव-सिन्धु के आप खिवैया।।48।।
हमको मुक्ती मार्ग दिखाओ, जन्म मरण से मुक्ति दिलाओ।।49।।
सेवक बनकर के हम आए, पद में सादर शीश झुकाए।।50।।

दोहा - 'विशद' भाव से जो पढ़े, चालीसा चालीस।
सुख-शांती पावे अतुल, बने श्री का ईश।।
महिमा शिखर सम्मेद की, गाएँ मंगलकार।
उसी तीर्थ से ही स्वयं, पावे मुक्ती द्वार।।

जाप – ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं अर्हं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्रेभ्यो नमः।

श्री सम्मेदशिखर की आरती

(तर्ज – आनन्द अपार है.....)

भक्ती का प्रसार है, महिमा अपरम्पार है।
श्री सम्मेद शिखर पर्वत की, हो रही जय-जयकार है।। टेक।।
दूर-दूर से भक्त यहाँ पर, वन्दन करने आते हैं।।-2
तीर्थ वन्दना करने वाले, जय-जयकार लगाते हैं।-2
शाश्वत तीर्थ क्षेत्र की बन्धू, महिमा का न पार है।।
श्री सम्मेद.....।।1।।
बीस जिनेश्वर इस चौबीसी, के शिव पदवी पाए हैं।-2
कर्म नाशकर अन्य मुनीश्वर, शिवपुर धाम बनाए हैं।-2
शाश्वत तीर्थराज मुक्ती का, मानो अनुपम द्वार है।।
श्री सम्मेद.....।।2।।
जीव अनन्तानन्त यहाँ से, आगे मुक्ती पाएँगे।-2
हम भी उनके साथ में बन्धु, सिद्ध शिला पर जाएँगे।-2
स्वप्न सजाते हैं ऐसा जो, हो जाता साकार है।
श्री सम्मेद.....।।3।।
भाव सहित वन्दन करने से, नरक पशू गति नश जाए।-2
दुष्कृत दुर्गती अल्प आयु भी, वह प्राणी फिर ना पाए।-2
जन-जन के जीवन में गिरि का, 'विशद' बड़ा उपकार है।।
श्री सम्मेद.....।।4।।
तीर्थ वन्दना करने को हम, आज यहाँ पर आए हैं।-2
पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, यह सौभाग्य जगाए हैं।-2
'विशद' आत्मा का हमको भी, करना अब उद्धार है।।
श्री सम्मेद.....।।5।।

निर्वाण क्षेत्र सम्मेदशिखर की आरती

करूँ आरती तीर्थराज की, भव तारक पावन जहाज की।
तीर्थंकर जिनवर गणधर की, अगणित मुक्त हुए मुनिवर की।।
करूँ आरती.....।।टेक।।

भव-भव के दुःख मैटनहारी, बनते प्राणी संयमधारी।
तीर्थराज है मंगलकारी, जिसकी महिमा जग से न्यारी।।
करूँ आरती.....

अष्टापद में आदि नाथ की, गिरनारी पर नेमिनाथ की।
चम्पापुर में वासुपूज्य की, पावापुर में वीर नाथ की।।
करूँ आरती.....

ज्ञान कूट पर कुन्थुनाथ की, मित्र कूट पर नमीनाथ की।
नाट्य कूट पर अरहनाथ की, संवर कूट पर मल्लिनाथ की।।
करूँ आरती.....

संकुल कूट पर श्री श्रेयांस की, सुप्रभ कूट पर पुष्पदंत की।
मोहन कूट पर पद्म प्रभु की, निर्जर कूट पर मुनिसुव्रत की।।
करूँ आरती.....

ललित कूट पर चन्द्र प्रभु की, विद्युत कूट पर शीतल जिन की।
कूट स्वयंभू श्री अनंत की, धवल कूट पर संभव जिन की।।
करूँ आरती.....

कूट सुदत्त पर धर्मनाथ की, आनंद कूट पर अभिनंदन की।
अविचल कूट पर सुमतिनाथ की, शांति कूट पर शांतिनाथ की।।
करूँ आरती.....

कूट प्रभास पर श्री सुपार्श्व की, अरु सुबीर पर विमलनाथ की।
सिद्ध कूट पर अजितनाथ की, स्वर्णभद्र पर पार्श्वनाथ की।।
करूँ आरती.....

चरण कमल में श्री जिनवर की, दिव्य दीप से सूर्य प्रखर की।
'विशद' भाव से श्री गिरवर की, सिद्ध क्षेत्र जो है उन हर की।।
करूँ आरती.....

जिन प्रभु स्तवन

तर्ज-गगन मण्डण में उड़

प्रभू की भक्ति कर आएँ-2।
तीन लोक के सब तीर्थों की, अर्चा हम पाएँ
प्रभू की भक्ति कर आएँ-2...।।टेक।।
श्री सम्मेद शिखर पर्वत पर, वन्दन को जाएँ।
बीस टोंक पर बीस जिनेश्वर, को पूजें ध्याएँ।।प्रभू...।।1।।
फिर मंदार सुगिर चंपापुर, वासुपूज्य ध्यायें।
प्रभु के पंच कल्याण भू पे, अर्चा कर आएँ।।प्रभू...।।2।।
ऊर्जयन्त गिरनार सुगिर को, सीढ़ी चढ़ जाएँ।
नेमिनाथ निर्वाण क्षेत्र की, पाँच टोंक ध्याएँ।।प्रभू...।।3।।
पद्म सरोवर पावापुर के, जल मंदिर जाएँ।
हर्षित होके वीर प्रभु की, हम महिमा गाएँ।।प्रभू...।।4।।
गिरि कैलाश शिखर अष्टापद, पे उड़ के जाएँ।
ऋषभ देव की अर्चा करके, मन में हर्षाएँ।।प्रभू...।।5।।
गर्भ जन्म तप ज्ञान मोक्ष की, भूमी को ध्याएँ।
अतिशय क्षेत्रों की अर्चाकर, अतिशयता पाएँ।।प्रभू...।।6।।
पंचमेरु गजदन्त कुलाचल, तरुँ की शाखाएँ।
रजताचल वक्षार सुगिर के, श्री जिनको ध्याएँ।।प्रभू...।।7।।
इष्वाकार मानुषोतर कुण्डल, नंदीश्वर पाएँ।
रुचक सुगिर तेरह द्वीपों की, ध्याएँ प्रतिमाएँ।।प्रभू...।।8।।
सम्यक् दर्श ज्ञान चरित पा, मुनि पदवी पाएँ।
'विशद' आत्म स्वभाव निरत हो, शिव पद प्रगटाएँ।।प्रभू...।।9।।
अधोलोक में भावन व्यन्तर, के जिनगृह ध्यायें।
सप्त कोटि अरु लाख बहत्तर, मंदिर प्रतिमाएँ।।प्रभू...।।10।।
लाख चुरासी सहस सत्यानवें, तेईस गृह ध्याएँ।
ऊर्ध्व लोक के जिनगृह की हम, ध्यायें प्रतिमाएँ।।प्रभू...।।11।।

दोहा - भक्ती से त्रयलोक में, करके स्वयं विहार।
भाव वन्दना हम करें, पाने भवदधि पार।।

चौंसठ ऋद्धि विधान

"माण्डला"

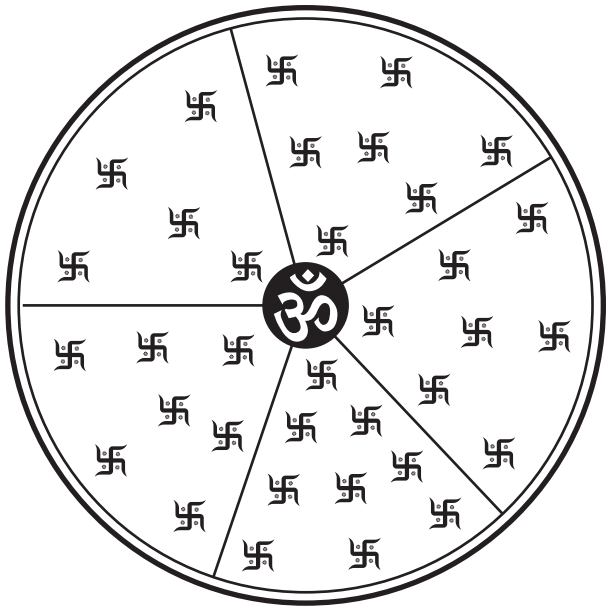

बीच में - ॐ
प्रथम कोष्ठ - 7 अर्घ्य
द्वितीय कोष्ठ - 5 अर्घ्य
तृतीय कोष्ठ - 7 अर्घ्य
चतुर्थ कोष्ठ - 9 अर्घ्य
पंचम कोष्ठ - 9 अर्घ्य
कुल - 35 अर्घ्य

रचयिता :

प. पू. आचार्य विशदसागर जी महाराज

64 ऋद्धि का माहात्म्य, लक्षण व फल

दोहा- मंगलमय मंगल करण, मंगल जिन अर्हन्त।
चौंसठ ऋद्धीधर मुनी, तीन काल के संत।।

(शम्भू छन्द)

श्रेष्ठ तपस्या करने वाले, संत ऋद्धियाँ पाते हैं।
करने से एकाग्र ध्यान शुभ, मंत्र सिद्ध हो जाते हैं।।
मिथ्यावादी श्रावक कोई, मंत्र की सिद्धी करते हैं।
किन्तु ऋद्धी परम तपस्वी, जैन मुनी ही धरते हैं।।1।।
सिद्धी सर्व शुभाशुभ करने, वाली जग में कही विशेष।
ऋद्धी सबका हित करती है, ऐसा कहते वीर जिनेश।।
मुनिवर निज के हेतु कभी न, करते ऋद्धी का उपयोग।
जन-जन को सुख देने वाली, ऋद्धी मेटे भव का रोग।।2।।
गणधर त्रेसठ श्रेष्ठ ऋद्धियाँ, पाने वाले कहे ऋशीष।
केवल ऋद्धी पाते अर्हत्, होते जगती पति जगदीश।।
श्रेष्ठ ऋद्धी की शक्ति पाकर, भी न करते मान कभी।
परमेष्ठी को ध्याने वाले, करते जिन का ध्यान सभी।।3।।
ऋद्धीधारी मुनिवर जग में सर्व सिद्धियाँ पाते हैं।
उस भव में या अन्य भवों में, परम मोक्ष को जाते हैं।।
बहुविधि सिद्धी पाने वाले, का कुछ निश्चित नहीं कहा।
मुक्ती पावें या न पावें, ऐसा निश्चित नहीं रहा।।4।।
जानके ऋद्धी की महिमा का, विशद हृदय श्रद्धान करें।
ऋद्धीधारी जिन संतों का, हृदय कमल में ध्यान करें।।
मोक्ष मार्ग के राही हैं जो, उनकी महिमा हम गाएँ।
चरण-कमल में वंदन की शुभ, विशद भावना हम भाएँ।।5।।

(इति पुष्पांजलि क्षिपेत्)

चौंसठ ऋद्धि पूजा

स्थापना

बुद्धि ऋद्धि के भेद अठारह, चारण ऋद्धी के नौ भेद।
ऋद्धि विक्रिया ग्यारह भेदी, तप्त ऋद्धी के सप्त प्रभेद।।
अष्ट भेद औषधि ऋद्धी के, बल ऋद्धी है तीन प्रकार।
भेद कहे छह रस ऋद्धी के, अक्षीण ऋद्धियाँ दो शुभकार।।

दोहा- पुण्य प्रदायी ऋद्धियाँ, चौंसठ हैं अभिराम।
आह्वानन् को हम यहाँ, करते विशद प्रणाम।।

ॐ ह्रीं चतु:षष्ठि ऋद्धि धारक सर्व ऋषि समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनं, अत्र मम् सन्निहितौ भव वषट् सन्निधिकरणं।

(चाल छन्द)

यह नीर है मंगलकारी, जन्मादिक रोग निवारी।
हम चौंसठ ऋद्धी ध्यायें, ऋषिवर पद पूज रचाएँ।।1।।

ॐ ह्रीं चतु:षष्ठि ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नम: जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन भवताप निवारी, जो अतिशय खुसबूकारी।
हम चौंसठ ऋद्धी ध्यायें, ऋषिवर पद पूज रचाएँ।।2।।

ॐ ह्रीं चतु:षष्ठि ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नम: चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत अक्षय फलकारी, हैं मोती के उन्हारी।
हम चौंसठ ऋद्धी ध्यायें, ऋषिवर पद पूज रचाएँ।।3।।

ॐ ह्रीं चतु:षष्ठि ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नम: अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

ये पुष्प हैं खुशबूकारी, जो काम रोग विनिवारी।
हम चौंसठ ऋद्धी ध्यायें, ऋषिवर पद पूज रचाएँ।।4।।

ॐ ह्रीं चतु:षष्ठि ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नम: पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य सरस मनहारी, है क्षुधा रोग परिहारी।
हम चौंसठ ऋद्धी ध्यायें, ऋषिवर पद पूज रचाएँ।।5।।

ॐ ह्रीं चतु:षष्ठि ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नम: नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यह दीपक तिमिर विनाशी, है मोह महातम नाशी।
हम चौंसठ ऋद्धी ध्यायें, ऋषिवर पद पूज रचाएँ।।6।।

ॐ ह्रीं चतु:षष्ठि ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नम: दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित है धूप निराली, जो कर्म नशाने वाली।
हम चौंसठ ऋद्धी ध्यायें, ऋषिवर पद पूज रचाएँ।।7।।

ॐ ह्रीं चतु:षष्ठि ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नम: धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल ताजे रस मय भाई, हैं मोक्ष महाफलदाई।
हम चौंसठ ऋद्धी ध्यायें, ऋषिवर पद पूज रचाएँ।।8।।

ॐ ह्रीं चतु:षष्ठि ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नम: फलं निर्वपामीति स्वाहा।

यह अर्घ्य विशद मनहारी, है शाश्वत पद कर्त्तारी।
हम चौंसठ ऋद्धी ध्यायें, ऋषिवर पद पूज रचाएँ।।9।।

ॐ ह्रीं चतु:षष्ठि ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा- देते शांती धार, शांती पाने हम यहाँ।
पा के पद अनगार, मोक्ष महाफल पाएँ हम।।

।। शान्त्ये शांतिधारा ।।

सोरठा- पुष्पांजलि मनहार, करते भक्ती भाव से।
वन्दन बारम्बार, देव शास्त्र गुरु के चरण।।

।। पुष्पांजलि क्षिपेत् ।।

जयमाला

दोहा- चौंसठ ऋद्धी पूजते, जो भवि चित्त लगाए।
धन सम्पत्ती घर बसे, सकल विघ्न नश जाय।।

(चौपाई)

जय जय चौंसठ ऋद्धीधारी, तव पूजा करते नर नारी।
मुनि ने रत्नत्रय को धारा, शत्-शत् वंदन नमन हमारा।।1।।
पुण्यकर्म से नर भव पाया, जिसने जैन धर्म अपनाया।
मुनिवर सम्यक् तप बलधारी, शिवपथ के गणधर अधिकारी।।2।।
चौंसठ ऋद्धी धारें कोई, ताको आवागमन न होई।
बुद्धि ऋद्धि धारें मुनि सोई, उनके ज्ञान वृद्धि नित होई।।3।।
विक्रिया ऋद्धी बहु तन धारें, उसकी भक्ती हृदय उतारें।
चारण मुनि को पूजें भाई, भव- भव के आताप नशाई।।4।।

चारण मुनि करुणा नित पालें, जल पर चलते जल ना हालें।
तप करके सब करम खिपावें, तप से शुक्ल ध्यान उपजावें।।5।।
कर्म निर्जरा तप से होई, तप से शिव सुख संपद सोई।
बलधारी मुनि भव दुखहारी, अनुपम सुखकर मुनि बल धारी।।6।।
जय जय औषधि ऋद्धी धारी, सकल व्याधि क्षण में तुम हारी।
जो भी नाम तिहारे गावें, शिव स्वरूपमय हो सुख पावें।।7।।
रोग-क्षुधा रस ऋद्धि निवारें, सब प्रकार अमृत बरसावें।
मुनि अक्षीण महानस धारें, भव सागर से पार उतारें।।8।।
मुनि की भक्ति सदा हम गाएँ, भव-भव के सब पाप नशाएँ।
मन वच तन मुनिवर को ध्याएँ, सुख संपद जय सौख्य कराएँ।।9।।
सम्यक् दर्शन ज्ञान जगाएँ, सम्यक् तप जीवन में पाएँ।
यही भावना रही हमारी, पूर्ण करो तुम हे त्रिपुरारी!।।10।।
पूजा करके जिनगुण गाते, पद में सादर शीश झुकाते।
'विशद' ज्ञान हम भी प्रगटाएँ, कर्म नाश कर शिव पुर जाएँ।।11।।

दोहा- चौंसठ ऋद्धीधर मुनी, तीन लोक सुखदाय।
तिनको पूजें अर्घ्य ले, केवल ज्ञान जगाय।।

ॐ ह्रीं चतु:षष्ठि ऋद्धिधारक मुनीभ्य: जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- चौंसठ ऋद्धीधर ऋषी, संयम तप के ईश।
उनके गुण पाने विशद, चरण झुकाते शीश।।

।। इत्याशीर्वाद: पुष्पांजलि क्षिपेत ।।

चौंसठ ऋद्धि अर्घ्यावली

दोहा- तपकर चौंसठ ऋद्धियाँ, पाते हैं ऋषिराज।
करके जिनकी वन्दना, होंय सफल सब काज।।

पुष्पांजलिं क्षिपेत्

(चौपाई)

अवधिज्ञान ऋद्धीधर ज्ञानी, होते जग-जन के कल्याणी।
ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।1।।

ॐ ह्रीं अवधिज्ञान ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नम: अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

ऋद्धि मन:पर्यय जो पाते, पर के मन की बात बताते।
ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।2।।

ॐ ह्रीं मन:पर्यय ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नम: अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

केवलज्ञान ऋद्धि के धारी, अनन्त चतुष्टय धर शिवकारी।
ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।3।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञान ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नम: अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

बीज भूत मुनि ऋद्धि जगावें, सर्व ग्रन्थ का सार बतावें।
ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।4।।

ॐ ह्रीं बीजभूत ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नम: अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

रत्न कोष्ठ में भिन्न दिखावें, कोष्ठ बुद्धि मुनिवर त्यों पावें।
ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।5।।

ॐ ह्रीं कोष्ठ बुद्धि ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नम: अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

पदानुसारिणी ऋद्धी पावें, पद सुन ग्रन्थ का सार बतावें।
ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।6।।

ॐ ह्रीं पदानुसारिणी ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नम: अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

संभिन्न संश्रोत ऋद्धी धारी, होते सब ध्वनि के उच्चारी।
ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।7।।

ॐ ह्रीं संभिन्न संश्रोत ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नम: अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

दूर स्पर्श ऋद्धि मुनि पाएँ, दूर स्पर्श की शक्ति जगाएँ।
ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।8।।

ॐ ह्रीं दूर स्पर्श ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नम: अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

दूरास्वाद ऋद्धि प्रगटावें, स्वाद दूर वस्तू का पावें।
ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।9।।

ॐ ह्रीं दूरास्वाद ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नम: अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

दूर घ्राण ऋद्धी जो पावें, दूर घ्राण की शक्ति जगावें।
ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी॥10॥

ॐ ह्रीं दूर घ्राण ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

दूर श्रवण ऋद्धी धर जानो, दूर वस्तु के श्रोता मानो।
ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी॥11॥

ॐ ह्रीं दूर श्रवण ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

दूरावलोकन ऋद्धि जगावें, दूर वस्तु अवलोकन पावें।
ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी॥12॥

ॐ ह्रीं दूरावलोकन ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

अष्टांग महानिमित्त के ज्ञाता, अष्ट निमित्त के अर्थ प्रदाता।
ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी॥13॥

ॐ ह्रीं अष्टांग महानिमित्त ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

प्रज्ञा श्रमण ऋद्धि के धारी, सूक्ष्मत्व ऋद्धि के रहे प्रचारी।
ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी॥14॥

ॐ ह्रीं प्रज्ञा श्रमण ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

ऋषि प्रत्येक बुद्धि के धारी, संयम ज्ञान निरूपणकारी।
ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी॥15॥

ॐ ह्रीं प्रत्येक बुद्धि ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

दश पूर्वित्व ऋद्धि धर ज्ञानी, साधू कहे अटल श्रद्धानी।
ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी॥16॥

ॐ ह्रीं दश पूर्वित्व ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

ऋषी चतुर्दश पूर्वी जानो, अंग पूर्व श्रुतधारी मानो।
ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी॥17॥

ॐ ह्रीं चतुर्दश पूर्वी ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

ऋषी प्रवादित्व ऋद्धी पाएँ, वाद कुशल की शक्ति जगाएँ।
ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी॥18॥

ॐ ह्रीं प्रवादित्व ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

अणिमा ऋद्धीधर ऋषि जानो, अणु सम देह बनावे मानो।
ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी॥19॥

ॐ ह्रीं अणिमा ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

महिमा ऋद्धी जो ऋषि पावें, उच्च मेरु सम देह बनावें।
ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी॥20॥

ॐ ह्रीं महिमा ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

ऋषिवर लघिमा ऋद्धि जगावें, आक तूल सम देह बनावें।
ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी॥21॥

ॐ ह्रीं लघिमा ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

मुनिवर गरिमा ऋद्धी धारी, देह बनाते हैं जो भारी।
ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी॥22॥

ॐ ह्रीं गरिमा ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

आप्ति ऋद्धि धर भूपर होवें, सूर्य चंद को भी जो छूवें।
ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी॥23॥

ॐ ह्रीं आप्ति ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

ऋषि प्राकम्य ऋद्धि प्रगटावें, जल पे भू सम चलते जावें।
ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी॥24॥

ॐ ह्रीं प्राकम्य ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

ऋषि ईशत्व ऋद्धि जो पावें, वे त्रेलोक्य अधिपति हो जावें।
ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी॥25॥

ॐ ह्रीं ईशत्व ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

ऋषिवर ऋद्धि वशित्व जगावें, प्राणी सब वश में हो जावें।
ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।26।।

ॐ ह्रीं वशित्व ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

अप्रतिघात ऋद्धि जो पावें, घुसकर गिरि के बाहर जावें।
ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।27।।

ॐ ह्रीं अप्रतिघात ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

अन्तर्धान ऋद्धि ऋषि पाते, क्षण में ही अदृश हो जाते।
ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।28।।

ॐ ह्रीं अन्तर्धान ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

कामरूप ऋद्धी के धारी, रूप बनावें कई प्रकारी।
ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।29।।

ॐ ह्रीं कामरूप ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

नभ चारण ऋद्धी के धारी, ऋषिवर होते गगन विहारी।
ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।30।।

ॐ ह्रीं नभ चारण ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

जल चारण शुभ ऋद्धि जगावें, हिंसा बिन जल पर चल जावें।
ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।31।।

ॐ ह्रीं जल चारण ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

जंघा चारण ऋद्धि जगावें, जांघ उठाए बिन चल जावें।
ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।32।।

ॐ ह्रीं जंघा चारण ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

अग्नि शिखा ऋद्धी प्रगटावें, अग्नि शिखा पर चलते जावें।
ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।33।।

ॐ ह्रीं अग्नि शिखा ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

पुष्प चारण ऋद्धी मुनि पाते, फूल पे हल्के हो चल जाते।
ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।34।।

ॐ ह्रीं पुष्प चारण ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

मेघ चारण ऋद्धी मुनि पाएँ, मेघ पर गमन शक्ति जगावें।
ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।35।।

ॐ ह्रीं मेघ चारण ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

तन्तू चारण ऋद्धी धारी, तन्तू पे चलते अविकारी।
ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।36।।

ॐ ह्रीं तन्तू चारण ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

ज्योतिष चारण ऋद्धी धारी, गगन गमन करते अविकारी।
ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।37।।

ॐ ह्रीं ज्योतिष चारण ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

मरुचारण ऋद्धीधर ज्ञानी, चलें वायु पे हो ना हानी।
ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।38।।

ॐ ह्रीं मरुचारण ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

दीप्त ऋद्धि जो मुनिवर पावें, देह कांति ऋषिवर विकशावें।
ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।39।।

ॐ ह्रीं दीप्त ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

तप्त ऋद्धि ऋषिवर प्रगटाते, उनके धातू मल छय जाते।
ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।40।।

ॐ ह्रीं तप्त ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

महा उग्र तप ऋद्धी पावें, घोर सुतप की शक्ति जगावें।
ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।41।।

ॐ ह्रीं उग्र तप ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

ऋद्धि घोर तप पाने वाले, विशद घोर तपि ऋषी निराले।
ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।42।।

ॐ ह्रीं घोर तप ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

घोर पराक्रम ऋद्धि जगावें, भू को ऊपर ऋषी उठावें।
ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।43।।

ॐ ह्रीं पराक्रम ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

महोपवास की शक्ति प्रदायी, परम घोर तप ऋद्धि बताई।
ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।44।।

ॐ ह्रीं महोपवास ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

घोर बह्मचर्य तप धर होवें, स्वप्न में भी बह्मचर्य ना खोवें।
ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।45।।

ॐ ह्रीं ब्रह्मचर्य तप ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

मनबल ऋद्धी धर अनगारी, द्वादशांग श्रुत चिन्तनकारी।
ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।46।।

ॐ ह्रीं मन बल ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

ऋषी वचन बल ऋद्धी पावें, सब श्रुत पाठ की शक्ति जगावें।
ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।47।।

ॐ ह्रीं वचन बल ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

ऋषी काय बल पाएँ ऋद्धी, तन में होवे बल की वृद्धी।
ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।48।।

ॐ ह्रीं काय बल ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

आमर्षौषधि ऋद्धी धारी, जन-जन के हों रोग निवारी।
ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।49।।

ॐ ह्रीं आमर्षौषधि ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

क्ष्वेलौषधि धर का कफ आदी, का स्पर्श नशाए व्याधी।
ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।50।।

ॐ ह्रीं क्ष्वेलौषधि ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

जलौषधी ऋद्धी के धारी, का जल्ल गाया रोग निवारी।
ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।51।।

ॐ ह्रीं जल्लौषधी ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

मलौषधि ऋद्धी ऋषि पावें, उनका मल सब रोग नशावें।
ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।52।।

ॐ ह्रीं मलौषधि ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

विडौषधि ऋषि का मल जानो, रोग नशाए ऐसा मानो।
ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।53।।

ॐ ह्रीं विडौषधि ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

सर्वौषधि ऋद्धी मुनि पावें, वायु स्पर्श से रोग बिलावें।
ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।54।।

ॐ ह्रीं सर्वौषधि ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

आशीर्विष ऋद्धी प्रगटावें, वचन बोलते जहर चढ़ावें।
ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।55।।

ॐ ह्रीं आशीर्विष ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

दृष्टी निर्विष ऋद्धी पावें, दृष्टि डालते रोग नशावें।
ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।56।।

ॐ ह्रीं दृष्टि निर्विष ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

आश्र्याविष औषधि के धारी, जिनके वचन हैं रोग निवारी।
ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।57।।

ॐ ह्रीं आश्र्याविष ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

दृष्टी विष ऋद्धी जो पाते, दृष्टि डालते जहर चढ़ाते।
ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।58।।

ॐ ह्रीं दृष्टी विष ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

क्षीर स्रावि ऋद्धी प्रगटावें, नीरस भोजन क्षीर सा पावें।
ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।59।।

ॐ ह्रीं क्षीर स्रावि ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

घृत स्रावी रस ऋद्धी भाई, घृत सम भोजन हो सुखदायी।
ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।60।।

ॐ ह्रीं घृत स्रावी रस ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

कर में मधु स्रावी के जानो, भोजन मधु सम होवे मानो।
ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।61।।

ॐ ह्रीं मधु स्रावी ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

अमृतस्रावी ऋद्धि जगावें, अमृत सा भोजन ऋषि पावें।
ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।62।।

ॐ ह्रीं अमृतस्रावी ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

अक्षीण संवास ऋद्धी पावें, चक्रवर्ति की सैन्य समावें।
ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।63।।

ॐ ह्रीं अक्षीण संवास ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

अक्षीण महानस ऋद्धि उपावें, सेना चक्री की जिम जावें।
ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।64।।

ॐ ह्रीं अक्षीण महानस ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

चौंसठ ऋद्धि भावना भायें, विशद शांति सुख प्राणी पाएँ।
ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।65।।

ॐ ह्रीं चौंसठ ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

जयमाला

दोहा- मंगलमय मंगल परम, मंगलमयी त्रिकाल।
चौंसठ हैं शुभ ऋद्धियाँ, गाते हैं जयमाल।।

।। शम्भू छन्द ।।

श्रेष्ठ तपस्या करने वाले, संत ऋद्धियाँ पाते हैं।
करने से एकाग्र ध्यान शुभ, मंत्र सिद्ध हो जाते हैं।।
मिथ्यावादी श्रावक कोई, मंत्र की सिद्धी करते हैं।
किन्तु ऋद्धी परम तपस्वी, जैन संत ही धरते हैं।।1।।
सिद्धी सर्व शुभाशुभ करने, वाली बड़ी विशेष कही।
ऋद्धी सबका हित करती है, मंगलमय जो श्रेष्ठ रही।।
मुनिवर निज के हेतु कभी न, करते ऋद्धी का उपयोग।
जन-जनको सुख देने वाली, ऋद्धी मैटे भव का रोग।।2।।
गणधर त्रेसठ श्रेष्ठ ऋद्धियाँ, पाने वाले कहे ऋशीष।
केवल ऋद्धी पाते अर्हत्, होते जगती पति जगदीश।।
श्रेष्ठ ऋद्धि की शक्ती पाकर, भी न करते मान कभी।
परमेष्ठी को ध्याने वाले, करते जिनका ध्यान सभी।।3।।
ऋद्धीधारी मुनिवर जग में, सर्व सिद्धियाँ पाते हैं।
उस भव में या अन्य भवों में, परम मोक्ष को जाते हैं।।
बहुविधि सिद्धी पाने वाले, का कुछ निश्चित नहीं कहा।
मुक्ती पावें या न पावें, ऐसा निश्चित नहीं रहा।।4।।
जानके ऋद्धी की महिमा का, विशद हृदय श्रद्धान करें।
ऋद्धीधारी जिन संतों का, हृदय कमल में ध्यान करें।।
मोक्ष मार्ग के राही हैं जो, उनकी महिमा हम गाएँ।
चरण-कमल में वंदन की शुभ, विशद भावना हम भाएँ।।5।।

दोहा- पूज्य हैं तीनों लोक में, ऋषिवर ऋद्धीवान।
भाव सहित जिनका 'विशद', करते हैं गुणगान।।

ॐ ह्रीं चतुः षष्ठी ऋद्धि धारक मुनीश्वरेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमाला
पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- सम्यक् तप से जीव यह, पाए ऋद्धि प्रधान।
जिनकी अर्चा कर मिले, हमको शिव सोपान।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

चौंसठ ऋद्धि चालीसा

दोहा- नवदेवों को नमन कर, नव कोटी के साथ।
तीर्थंकर चौबीस के, चरण झुकाते माथ।।
चौंसठ ऋद्धी का विशद, चालीसा शुभकार।
गाते हैं हम भाव से, नत हो बारम्बार।।

।। चौपाई ।।

पुण्योदय प्राणी का आवे, पावन मानव जीवन पावे।।1।।
देव-शास्त्र-गुरु का श्रद्धानी, होवे अनुपम सम्यक् ज्ञानी।।2।।
संयम धार बने अनगारी, अन्तर बाह्य सुतप का धारी।।3।।
साधक अपने कर्म खिपावें, पावन केवलज्ञान जगावें।।4।।
अवधिज्ञान ऋद्धी के धारी, मनःपर्यय ज्ञानी अविकारी।।5।।
केवलज्ञान ऋद्धि मुनि पाएँ, कोष्ठ ऋद्धि अनुपम प्रगटाएँ।।6।।
ऋषिवर बीज ऋद्धि जो पावें, सर्व शास्त्र का सार बतावें।।7।।
संभिन्न संश्रोत ऋद्धी धारी, होते सब ध्वनि के उच्चारी।।8।।
पदानुसारणी ऋद्धी भाई, दूर स्पर्श ऋद्धि शुभ गाई।।9।।
दूर श्रवण ऋद्धी के धारी, ऋषिवर दूरास्वादन कारी।।10।।
दूर घ्राणत्व ऋद्धि मुनि पावें, दूरावलोकन ऋद्धि जगावें।।11।।
प्रज्ञा श्रमण ऋद्धि शुभ गाई, प्रत्येक बुद्धि ऋद्धि बतलाई।।12।।
ऋषि प्रत्येक बुद्धि के धारी, सम्यक् ज्ञान निरूपण कारी।।13।।
दश पूर्वित्व ऋद्धिधर ज्ञानी, साधू कहे अटल श्रद्धानी।।14।।
ऋषी चतुर्दश पूर्वी जानो, अंग पूर्व श्रुत धारी मानो।।15।।
ऋषी प्रवादित्व ऋद्धी, पाएँ, वाद कुशल की शक्ति जगाएँ।।16।।
अष्टांग महानिमित्त के ज्ञाता, अष्ट निमित्त के अर्थ प्रदाता।।17।।
जंघा चारण ऋद्धी धारी, अग्नि शिखा चारण शुभकारी।।18।।
श्रेणी चारण ऋद्धी पावें, ऋषि फल चारण ऋद्धि जगावें।।19।।

जल चारण जल पे चल जावें, तन्तू चारण तन्तु पे जावें।।20।।
पुष्प ऋद्धिधर पुष्प विहारी, बीजांकुर शुभ ऋद्धि धारी।।21।।
नभ चारण ऋषि नभ में जावें, अणिमा से लघु रूप बनावें।।22।।
ऋषि महिमा धर महिमा शाली, लघिमा ऋद्धि हल्की वाली।।23।।
गरिमा ऋद्धी से हों भारी, मन वच काय ऋद्धि बल धारी।।24।।
कामरूपणी है कई रूपी, अन्तर्धान से होय अरूपी।।25।।
ईशत्व ऋद्धी ईश बनाए, वश में ऋद्धि वाशित्व कराए।।26।।
ऋद्धि प्राकाम्य है इच्छाकारी, आप्ति ऋद्धि है उच्च प्रकारी।।27।।
अप्रतिघात घात परिहारी, तप्त ऋद्धि मल मूत्र निवारी।।28।।
दीप्त ऋद्धि शुभ दीप्ति बढ़ावे, महा उग्र तप शक्ति जगावे।।29।।
ऋद्धि घोर तप क्लेश निवारी, घोर पराक्रम ऋद्धी धारी।।30।।
परम घोर तप ऋद्धि जगावें, घोर ब्रह्मचर्य ऋद्धी पावें।।31।।
आमर्षौषधि ऋद्धि जगावें, सर्वौषधि ऋद्धी ऋषि पावें।।32।।
आशीर्विष ऋद्धि के धारी, मुनि दृष्टि निर्विष अविकारी।।33।।
क्ष्वेलौषधि ऋद्धी प्रगटावें, विडौषधी ऋद्धि मुनि पावें।।34।।
जल्लौषधि मल्लौषधि धारी, आशीर्विष ऋषिवर अनगारी।।35।।
दृष्टीविष रस ऋद्धि जगावें, क्षीर स्रावि रस ऋद्धी पावें।।36।।
घृत स्रावी मधु स्रावी जानो, अमृत स्रावी ऋषिवर मानो।।37।।
अक्षीण संवास ऋद्धि जगाएँ, अक्षीण महानस ऋद्धि पावें।।38।।
मुनिवर उत्तम संयम धारी, कहे ऋद्धियों के अधिकारी।।39।।
जो भी ऋषियों के गुण गावें, 'विशद' ऋद्धियों का फल पावें।।40।।

दोहा- चालीसा चालीस यह, पढ़े सुने जो पाठ।
जीवन मंगलमय बने, होवें ऊँचे ठाठ।।
दुख दारिद्र को नाशकर, जीवन होय निरोग।
ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य मय, पाए 'विशद' शिव भोग।।

जाप्य : ॐ ह्रीं चतुषष्ठी ऋद्धीभ्यो नमः।

चौंसठ ऋद्धि आरती

तर्ज- ॐ जय.....

ॐ जय चौंसठ ऋद्धि महाँ, स्वामी चौंसठ ऋद्धि महाँ।
आरति करते हम मुनियों की, होवें जहाँ - जहाँ।।
ॐ जय चौंसठ ऋद्धि महाँ
प्रथम आरती बुद्धि ऋद्धिधर, की करने आए।
स्वामी .....
ऋद्धि विक्रिया की करने को, दीप जला लाए।
ॐ जय चौंसठ ऋद्धि महाँ
मुनि चारण ऋद्धी धारी के, चरणों सिर नाते।
स्वामी .....
तप ऋद्धीधारी मुनियों के, अतिशय गुण गाते।।
ॐ जय चौंसठ ऋद्धि महाँ
बल ऋद्धीधारी मुनियों के, बल का पार नहीं।
स्वामी .....
औषधि ऋद्धीधारी मुनिवर, मिलते कहीं-कहीं।।
ॐ जय चौंसठ ऋद्धि महाँ
रस ऋद्धीधारी मुनियों की, महिमा शुभकारी।
स्वामी .....
अक्षीण महानश ऋद्धीधारी,मुनिवर अविकारी।।
ॐ जय चौंसठ ऋद्धि महाँ
ऋद्धीधर मुनियों की आरति, मंगलरूप कही।
स्वामी .....
'विशद' आरती करने वाले, पावें मार्ग सही।
ॐ जय चौंसठ ऋद्धि महाँ

णमोकार मंत्र विधान (लघु)

"माण्डला"

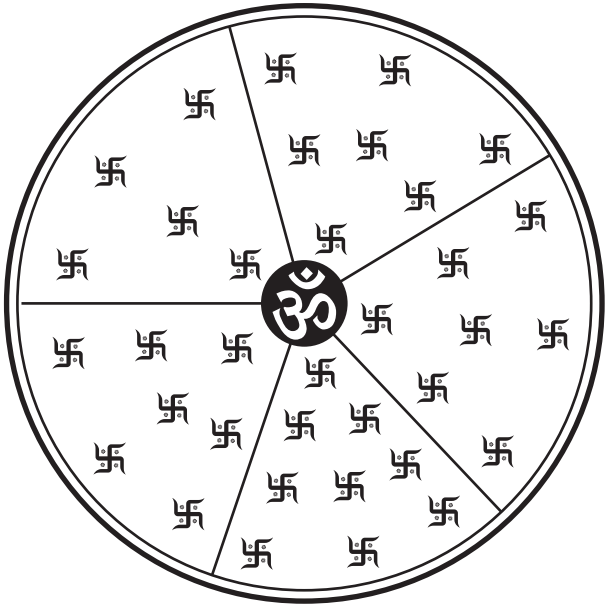

बीच में - ॐ
प्रथम कोष्ठ - 7 अर्घ्य
द्वितीय कोष्ठ - 5 अर्घ्य
तृतीय कोष्ठ - 7 अर्घ्य
चतुर्थ कोष्ठ - 9 अर्घ्य
पंचम कोष्ठ - 9 अर्घ्य
कुल - 35 अर्घ्य

रचयिता :
प. पू. आचार्य विशदसागर जी महाराज

महामन्त्र की अर्चना

तर्ज - जहाँ डाल डाल पर सोने की चिड़ियाँ

श्री महामन्त्र के सुमरण से, कटता भव-भव का फेरा।
है वन्दन उनको मेरा, है चरणों वन्दन मेरा।।
जहाँ धर्म ध्यान और मोक्ष मार्ग का, रहता निश दिन डेरा।
है वन्दन उनको मेरा, है चरणों वन्दन मेरा।। 1।।
अर्हन्त-घातियाँ कर्म रहित, हैं सिद्ध प्रभू अविकारी-2।
पंचाचारी आचार्य कहे, हैं उपाध्याय श्रुतधारी-2।।
है ज्ञान ध्यान तप लीन मुनी जो, ध्यान से करें सवेरा।
है वन्दन उनको मेरा, है चरणों वन्दन मेरा।। 2।।
जिनके पद पंकज में झुकती, इस जग की जनता सारी-2।
जिनके दर्शन से कट जाती है, भव-भव की बीमारी-2।।
हर भक्त जहाँ में होता है, जिनके चरणों का चेरा।
है वन्दन उनको मेरा, है चरणों वन्दन मेरा।। 3।।
जिनकी महिमा सुर-नर विद्याधर, आके निश दिन गाते-2।
जिनके चरणों में सूर्य चन्द्र भी, नत हो शीश झुकाते-2।।
जिनके चरणों में विद्वानों का, रहता सदा बसेरा।
है वन्दन उनको मेरा, है चरणों वन्दन मेरा।। 4।।
जो मोक्ष मार्ग के नेता हैं, जग को शिव राह दिखाते-2।
जो चलें स्वयं ही शिव पथ पर, जीवों को आप चलाते-2।।
इस 'विशद' स्वार्थ मय जग में ना, है कोई सहारा तेरा।
है वन्दन उनको मेरा, है चरणों वन्दन मेरा।। 5।।
श्री महामन्त्र के सुमरण से, कटता भव-भव का फेरा।
है वन्दन उनको मेरा, है चरणों वन्दन मेरा।। टेक।।

णमोकार मंत्र विधान (लघु)

स्थापना

दोहा- काल अनादि अनन्त है, महामंत्र नवकार।
आह्वानन् करके हृदय, वंदन बारम्बार।।

ॐ ह्रीं अनादि निधन पंचनमस्कार मन्त्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(चाल छन्द)

है जल की महिमा न्यारी, त्रय रोग निवारण कारी।
हम णमोकार को ध्याते, त्रय योग से महिमा गाते।।1।।

ॐ ह्रीं अनादि निधन पंचनमस्कार मन्त्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन है खुशबूकारी, भव रोग प्रणाशन कारी।
हम णमोकार को ध्याते, त्रय योग से महिमा गाते।।2।।

ॐ ह्रीं अनादि निधन पंचनमस्कार मन्त्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत अक्षय पद दायी, अक्षत की पूजा भाई।
हम णमोकार को ध्याते, त्रय योग से महिमा गाते।।3।।

ॐ ह्रीं अनादि निधन पंचनमस्कार मन्त्राय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

यह पुष्प लिए मनहारी, जो काम रोग विनिवारी।
हम णमोकार को ध्याते, त्रय योग से महिमा गाते।।4।।

ॐ ह्रीं अनादि निधन पंचनमस्कार मन्त्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य सरस शुभकारी, है क्षुधा रोग क्षय कारी।
हम णमोकार को ध्याते, त्रय योग से महिमा गाते।।5।।

ॐ ह्रीं अनादि निधन पंचनमस्कार मन्त्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है दीप प्रकाशन कारी, जो मोह महातम हारी।
हम णमोकार को ध्याते, त्रय योग से महिमा गाते।।6।।

ॐ ह्रीं अनादि निधन पंचनमस्कार मन्त्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

है धूप दशांगी न्यारी, जो अष्ट कर्म क्षयकारी।
हम णमोकार को ध्याते, त्रय योग से महिमा गाते।।7।।

ॐ ह्रीं अनादि निधन पंचनमस्कार मन्त्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल सरस लिए अघहारी, है मोक्ष सुपद कर्तारी।
हम णमोकार को ध्याते, त्रय योग से महिमा गाते।।8।।

ॐ ह्रीं अनादि निधन पंचनमस्कार मन्त्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

यह अर्घ्य अनर्घ्य प्रदायी, हम चढ़ा रहे हैं भाई।
हम णमोकार को ध्याते, त्रय योग से महिमा गाते।।9।।

ॐ ह्रीं अनादि निधन पंचनमस्कार मन्त्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा - शांति प्रदायक नीर है, कर्मों का क्षयकार।
विशद भाव से दे रहे, जिन पद शांतीधार।।

शान्तये शांतिधारा

दोहा - पुष्पांजलि करके विशद, पाएँ शिव सोपान।
भाव सहित करते यहाँ, श्री जिन का गुणगान।।

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

अर्घ्यावली

दोहा- महामंत्र णवकार के, बीजाक्षर पैंतीस।
अर्चा करते हम यहाँ, झुका भाव से शीश।।

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

णमो अरहंताणं

(चाल छन्द)

'ण' बीज वर्ण तम नाशी, है केवल ज्ञान प्रकाशी।
हम अरहंतों को ध्याते, नत सादर शीश झुकाते।।1।।

ॐ ह्रीं ''**ण**'' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'मो' बीज है मोक्ष प्रदायी, जो अनुपम शिव सुखदायी।
हम अरहंतों को ध्याते, नत सादर शीश झुकाते।।2।।

ॐ ह्रीं ''**मो**'' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अ' बीजाक्षर अविकारी, पद दायक मंगलकारी।
हम अरहंतों को ध्याते, नत सादर शीश झुकाते।।3।।

ॐ ह्रीं ''**अ**'' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'र' बीज रम्य शुभकारी, रवि सम जो आभाकारी।
हम अरहंतों को ध्याते, नत सादर शीश झुकाते।।4।।

ॐ ह्रीं ''**र**'' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'हं' बीज वर्ण को ध्याए, मन का कल्मष खो जाए।
हम अरहंतों को ध्याते, नत सादर शीश झुकाते।।5।।

ॐ ह्रीं ''**हं**'' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ता' है तामस परिहारी, अन्तश् का मोह निवारी।
हम अरहंतों को ध्याते, नत सादर शीश झुकाते।।6।।

ॐ ह्रीं ''**ता**'' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'णं' बीज वर्ण मनहारी, जो राग द्वेष विनिवारी।
हम अरहंतों को ध्याते, नत सादर शीश झुकाते।।7।।

ॐ ह्रीं ''**णं**'' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

णमो सिद्धाणं

ण-सद् श्रद्धान प्रदायी, मिथ्या तम नाशक भाई।
हम परम सिद्ध को ध्याएँ, जिनको निज हृदय बसाएँ।।1।।

ॐ ह्रीं ''**ण**'' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'मो' मोह तिमिर विनशाए, जो भेद ज्ञान प्रगटाए।
हम परम सिद्ध को ध्याएँ, जिनको निज हृदय बसाएँ।।2।।

ॐ ह्रीं ''**मो**'' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सि' बीज है सिद्धि प्रदायी, जिसकी महिमा अतिशायी।
हम परम सिद्ध को ध्याएँ, जिनको निज हृदय बसाएँ।।3।।

ॐ ह्रीं ''**सि**'' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'द्धा' धर्म की धार बहाए, जो अतिशय शांति दिलाए।
हम परम सिद्ध को ध्याएँ, जिनको निज हृदय बसाएँ।।4।।

ॐ ह्रीं ''**द्धा**'' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'णं' बीजाक्षर शिवकारी, है दुर्गति पंथ निवारी।
हम परम सिद्ध को ध्याएँ, जिन को निज हृदय बसाएँ।।5।।

ॐ ह्रीं ''**णं**'' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

णमो आइरियाणं

'ण' बीज है बोध प्रकाशी, अज्ञान महातम नाशी।
आचार्य हैं पंचाचारी, जिनके पद ढोक हमारी।।1।।

ॐ ह्रीं ''**ण**'' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'मो' बीजाक्षर बतलाए, मौनी हो ध्यान लगाए।
आचार्य हैं पंचाचारी, जिनके पद ढोक हमारी।।2।।

ॐ ह्रीं ''**मो**'' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'आ' बीज है आनन्दकारी, पद दायक जो अविकारी।
आचार्य हैं पंचाचारी, जिनके पद ढोक हमारी।।3।।
ॐ ह्रीं ''**आ**'' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'इ' बीज रम्य अतिशायी, है पंचम ज्ञान प्रदायी।
आचार्य हैं पंचाचारी, जिनके पद ढोक हमारी।।4।।
ॐ ह्रीं ''**इ**'' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'रि' बीजाक्षर शुभ जानो, पापों का नाशी मानो।
आचार्य हैं पंचाचारी, जिनके पद ढोक हमारी।।5।।
ॐ ह्रीं ''**रि**'' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'या' बीज है शांतीकारी, इस जग में विस्मयकारी।
आचार्य हैं पंचाचारी, जिनके पद ढोक हमारी।।6।।
ॐ ह्रीं ''**या**'' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'णं' पाप पंक परिहारी, सद् संयम के आधारी।
आचार्य हैं पंचाचारी, जिनके पद ढोक हमारी।।7।।
ॐ ह्रीं ''**णं**'' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

णमो उवज्झायाणं

(चौपाई)

'ण' बीजाक्षर बोध प्रदायी, भवि जीवों को शिव सुखदायी।
उपाध्याय को जो भी ध्याते, प्राणी वे सद्ज्ञान जगाते।।1।।
ॐ ह्रीं ''**ण**'' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'मो' है बीज वर्ण तम नाशी, अनुपम सम्यक्ज्ञान प्रकाशी।
उपाध्याय को जो भी ध्याते, प्राणी वे सद्ज्ञान जगाते।।2।।
ॐ ह्रीं ''**मो**'' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'उ' है उत्तम मार्ग प्रदायी, जो है उभय लोक सुखदायी।
उपाध्याय को जो भी ध्याते, प्राणी वे सद्ज्ञान जगाते।।3।।
ॐ ह्रीं ''**उ**'' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'वज' है बीज विरोध निवारी, तन मन में शुभ शांतीकारी।
उपाध्याय को जो भी ध्याते, प्राणी वे सद्ज्ञान जगाते।।4।।
ॐ ह्रीं ''**वज**'' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'झा' बीजाक्षर लक्ष्य प्रदायी, जो पुरुषार्थ कराए भाई।
उपाध्याय को जो भी ध्याते, प्राणी वे सद्ज्ञान जगाते।।5।।
ॐ ह्रीं ''**झा**'' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'या' बीजाक्षर यत्न कराए, मुक्ती पथ की राह दिखाए।
उपाध्याय को जो भी ध्याते, प्राणी वे सद्ज्ञान जगाते।।6।।
ॐ ह्रीं ''**या**'' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'णं' है बीज कर्म संहारी, ध्याने वाले हों शिवकारी।
उपाध्याय को जो भी ध्याते, प्राणी वे सद्ज्ञान जगाते।।7।।
ॐ ह्रीं ''**णं**'' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

णमो लोए सव्वसाहूणं

'ण' से अपने कर्म नशाएँ, ध्या के अजर अमर पद पाएँ।
साधू रत्नत्रय को पाएँ, जिनकी अतिशय महिमा गाएँ।।1।।
ॐ ह्रीं ''**ण**'' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'मो' है बीज वर्ण अतिशायी, भवि जीवों को मोक्ष प्रदायी।
साधू रत्नत्रय को पाएँ, जिनकी अतिशय महिमा गाएँ।।2।।
ॐ ह्रीं ''**मो**'' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'लो' बीजाक्षर जग कल्याणी, जिसको ध्याते हैं सद्ज्ञानी।
साधू रत्नत्रय को पाएँ, जिनकी अतिशय महिमा गाएँ।।3।।
ॐ ह्रीं ''**लो**'' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ए' एकत्व ध्यान करवाए, अन्य का जो परिहार कराए।
साधू रत्नत्रय को पाएँ, जिनकी अतिशय महिमा गाएँ।।4।।
ॐ ह्रीं ''**ए**'' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सठ' संसार भावना कारी, तीन योग से हो अविकारी।
साधू रत्नत्रय को पाएँ, जिनकी अतिशय महिमा गाएँ।।5।।
ॐ ह्रीं ''**सठ**'' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'व' बीजाक्षर बोध जगाए, पर का जो परिहार कराए।
साधू रत्नत्रय को पाएँ, जिनकी अतिशय महिमा गाएँ।।6।।
ॐ ह्रीं ''**व**'' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सा' शुभ साधु समाधि दिलाए, अल्प समय में शिव पहुचाए।
साधू रत्नत्रय को पाएँ, जिनकी अतिशय महिमा गाएँ।।7।।
ॐ ह्रीं ''**सा**'' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'हू' बीजाक्षर संवर कारी, कर्म निर्जरा कर शिवकारी।
साधू रत्नत्रय को पाएँ, जिनकी अतिशय महिमा गाएँ।।8।।
ॐ ह्रीं ''**हू**'' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'णं' बीजाक्षर मद परिहारी, अशुचि देह चेतन चित्कारी।
साधू रत्नत्रय को पाएँ, जिनकी अतिशय महिमा गाएँ।।9।।

ॐ ह्रीं ''**णं**'' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षर पद मात्राएँ जानो, पैंतिस पाँच अट्ठावन मानो।
णमोकार को पूजे ध्याएँ, विशद जाप कर पुण्य कमाएँ।।

ॐ ह्रीं अनादि निधन णमोकार समस्त बीजाक्षरेभ्यः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

जाप :- ॐ ह्रीं अनादि निधन णमोकार महामन्त्राय नमः।

जयमाला

दोहा- पूज्य अनादि अनन्त है, तीनों लोक त्रिकाल।
महामंत्र णमोकार की, गाते हैं जयमाल।।

(राधिका-छन्द)

शुभ णमोकार महामंत्र, जगत में भाई-2,
भवि जीवों को है, उभय लोक सुखदायी-2।।
जो लाखा चुरासी, मंत्रों का है राजा।
जिसको ध्याते हैं, सुर नर मुनि अधिराजा।।1।।
जो सर्व मंगलों में शुभ, प्रथम कहाए।
जग के सब मंगल, जिसमें आन समाए।।
है सर्वश्रेष्ठ उत्तम, इस जग में भाई।
जो उभय लोक जीवों, को सौख्य प्रदायी।।2।।
शुभ तीन लोक में, अनुपम शरण कहाए।
ना अन्य शरण, कोई भी प्राणी पाए।।
अरहंत घातिया कर्मों, के हैं नाशी।
हैं अनन्त चतुष्टय धारी, ज्ञान प्रकाशी।।3।।
प्रभु दोष अठारह रहित, कहे अविनाशी।
हैं सिद्ध आठ गुण, धारी शिवपुर वासी।।
आचार्य लोक में, गाए पंचाचारी।
शुभ शिक्षा दीक्षा, दाता संयम धारी।।4।।
श्रुत अंग पूर्व के, ज्ञाता पाठक जानो।
मुनियों को ज्ञान, प्रदायी पावन मानो।।

हैं विषयाशा के, त्यागी मुनि अनगारी।
शुभ रत्नत्रय धर, ज्ञान-ध्यान तप धारी।।5।।
सुन महामंत्र को श्वान, ऋषभ फण-धारी।
गज अज आदिक पशु, हुए देव पद धारी।।
पैंतिस सोलह छह, पंच चार दो भाई।
इक अक्षर कृत जो ध्याएँ, मोक्ष प्रदायी।।6।।
पैंतिस अक्षर के, पैंतिस व्रत हों जानो।
पाँचे सातें नौमी, चौदस के मानो।।
शुभ महामंत्र यह, विष का अमृत कारी।
है ऋद्धि सिद्धि सौभाग्य 'विशद' कर्तारी।।7।।

दोहा - महिमा जिसकी है अगम, गरिमा रही विशाल।
महामंत्र णवकार को, वन्दन करें त्रिकाल।।

ॐ ह्रीं अनादि निधन पंच नमस्कारक णमोकार मन्त्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा - मंगल उत्तम है शरण, महामंत्र णवकार।
पूजें ध्याएँ जीव सब, जिसको बारम्बार।।

(इत्याशीर्वादः)

श्री णमोकार चालीसा

दोहा- तीन लोक से पूज्य हैं, अर्हतादि नव देव।
मन वच तन से पूजते, उनको विनत सदैव॥
णमोकार महामंत्र है, काल अनादि अनन्त।
श्रद्धा भक्ती जाप से, बनें जीव अर्हन्त॥

चौपाई

णमोकार शुभ मंत्र कहाया, काल अनादि अनन्त बताया॥1॥
मंत्रराज जानो शुभकारी, अपराजित अनुपम मनहारी॥2॥
परमेष्ठी वाचक यह जानो, महिमाशाली जो पहिचानो॥3॥
जिनने कर्म घातिया नाशे, अनुपम केवलज्ञान प्रकाशे॥4॥
छियालिस मूलगुणों के धारी, मंगलमय पावन अविकारी॥5॥
सर्व चराचर के हैं ज्ञाता, भवि जीवों के भाग्य विधाता॥6॥

दोष अठारह रहित बताए, चौंतिस अतिशय जो प्रगटाए।7।।
अनन्त चतुष्टय जिनने पाए, प्रातिहार्य आ देव रचाए।।8।।
सारा जग ये महिमा गाए, पद में सादर शीश झुकाए।।9।।
समवशरण आ देव बनाते, शत् इन्द्रों से पूजे जाते।।10।।
कल्याणक शुभ पाने वाले, सारे जग में रहे निराले।11।।
अष्ट कर्म जिनके नश जाते, जीव सिद्धपद अनुपम पाते।।12।।
जो शरीर से रहित बताए, सुख अनन्त के भोगी गाए।।13।।
फैली है जग में प्रभुताई, अनुपम सिद्धों की शुभ भाई।।14।।
आठ मूलगुण जिनके गाए, सिद्धशिला पर धाम बनाए।।15।।
सिद्ध सुपद हम पाने आए, अतः सिद्ध गुण हमने गाए।।16।।
आचार्यों के हम गुण गाते, पद में नत हो शीश झुकाते।।17।।
पंचाचार के धारी गाए, इस जग को सन्मार्ग दिखाए।।18।।
शिक्षा-दीक्षा देने वाले, जिन शासन के हैं रखवाले।।19।।
आवश्यक पालन करवाते, प्रायश्चित दे दोष नशाते।।20।।
छत्तिस मूलगुणों के धारी, नग्न दिगम्बर हैं अविकारी।।21।।
द्रव्य भाव श्रुत के जो ज्ञाता, भवि जीवों के भाग्य विधाता।।22।।
ज्ञानाभ्यास करें अतिशायी, संतों को शिक्षा दें भाई।।23।।
द्वादशांग के ज्ञाता जानो, पच्चिस गुणधारी पहिचानो।।24।।
रत्नत्रय धारी कहलाए, मुक्ती पथ के नेता गाए।।25।।
दर्शन-ज्ञान-चारित के धारी, साधू होते हैं अनगारी।।26।।
विषयाशा के त्यागी जानो, संगारम्भ रहित पहिचानो।।27।।
ज्ञान ध्यान तप में रत रहते, जो उपसर्ग परीषह सहते।।28।।
हैं अट्ठाईस मूलगुणधारी, करें साधना मंगलकारी।।29।।
पंचमहाव्रत धारी जानो, पंचसमितियाँ पाले मानो।।30।।
पंचेन्द्रिय जय करने वाले, आवश्यक के हैं रखवाले।।31।।
णमोकार में इनकी भाई, अतिशयकारी महिमा गाई।।32।।
महामंत्र को जिसने ध्याया, उसने ही अनुपम फल पाया।।33।।

अंजन बना निरंजन भाई, नाग युगल सुर पदवी पाई।।34।।
सेठ सुदर्शन ने भी ध्याया, सूली का सिंहासन पाया।।35।।
सीता सती अंजना नारी, ने पाया इच्छित फल भारी।।36।।
श्वानादिक पशु स्वर्ग सिधाए, णमोकार को मन से ध्याए।।37।।
महिमा इसकी को कह पाए, लाख चौरासी मंत्र समाए।।38।।
भाव सहित इसको जो ध्याए, इस भव के सारे सुख पाए।।39।।
अपने सारे कर्म नशाए, अन्त में शिव पदवी को पाए।।40।।

दोहा- चालीसा चालीस दिन, पढ़े भाव के साथ।
'विशद' गुणों को प्राप्त कर, बने श्री का नाथ।।
धूप अग्नि में होमकर, करें मंत्र का जाप।
अन्त समय में जीव के, कटते सारे पाप।।

णमोकार मंत्र की आरती

(तर्ज : आज मंगलवार है...)

महामंत्र नवकार है, मुक्ती का यह द्वार है।
ध्यान जाप आरति कर प्राणी, होता भव से पार है।।
होता भव से पार है।। टेक।।
महामंत्र के पंच पदों में, परमेष्ठी को ध्याया है।
अर्हत् सिद्धाचार्य उपाध्याय, सर्व साधु गुण गाया है।।
महामंत्र नवकार.....।।1।।
मूलमंत्र अपराजित आदिक, मंत्रराज कई नाम रहे।
श्रेष्ठ अनादिऽनिधन मंत्र के, और अनेकों नाम कहे।।
महामंत्र नवकार.....।।2।।
महामंत्र को जपने वाले, अतिशय पुण्य कमाते हैं।
सुख शांति आनन्द प्राप्त कर, निज सौभाग्य जगाते हैं।।
महामंत्र नवकार.....।।3।।
काल अनादी से जीवों ने, सत् श्रद्धान जगाया है।
महामंत्र का ध्यान जापकर, स्वर्ग मोक्ष पद पाया है।।
महामंत्र नवकार.....।।4।।

सुनकर नाग नागिनी जिसको, पद्मावति धरणेन्द्र भये।
अंजन हुए निरंजन पढ़कर, अन्त समय में मोक्ष गये।।
महामंत्र नवकार.....।।5।।
प्रबल पुण्य के उदय से हमने, महामंत्र को पाया है।
अतिशय पुण्य कमाने का शुभ, हमने भाग्य जगाया है।।
महामंत्र नवकार.....।।6।।
महामंत्र का ध्यान जाप कर, आरति करने आए हैं।
'विशद' भाव का दीप जलाकर, आज यहाँ पर लाए हैं।।
महामंत्र नवकार.....।।7।।

विशद सिद्धिदायक स्तोत्र

विशिष्ट सिद्धिदायकम्, अभीष्ट फल प्रदायकम्।
अलोक लोक ज्ञायकम्, जिनेन्द्र! विश्वनायकम्।।
अभीष्ट ज्ञानवान हो, सौख्य के निधान हो।
मोक्ष के सोपान को, प्रणाम है प्रणाम है।।1।।
सुरेन्द्र पूज्य आप हो, खगेन्द्र पूज्य आप हो।
शतेन्द्र पूज्य आप हो, नरेन्द्र पूज्य आप हो।।
जिनेन्द्र नाम जाप हो, वहाँ कभी ना पाप हो।
मोक्ष के सोपान को, प्रणाम हो प्रणाम हो।।2।।
अहिपति से पूज्य हो, महीपति से पूज्य हो।
ऋषि यती से पूज्य हो, मुनिपति से पूज्य हो।।
यतीन्द्रपति आप हो, फणीन्द्र पति आप हो।
मोक्ष के सोपान को, प्रणाम हो प्रणाम हो।।3।।
अनन्त ज्ञानवंत हो, विमुक्ति के सुकंत हो।
सुदर्श में अनन्त हो, सुज्ञान में अनन्त हो।।
सुवीर्य में अनन्त हो, अनन्त सौख्यवंत हो।
मोक्ष के सोपान को, प्रणाम हो प्रणाम हो।।4।।
प्रभात सुप्रभात हो, जहाँ जिनेन्द्र साथ हो।
हे जिनेन्द्र! आप तीन, लोक के सुनाथ हो।।
'विशद' गुण निधान हो, अनन्त दान वान हो।
मोक्ष के सोपान को, प्रणाम हो प्रणाम हो।।5।।
दोहा - मंगलम् भगवान सिद्धा, मंगलम् तीर्थेश्वराः।
आचार्योपध्याय साधुभ्याः, जैन धर्मोस्तु मंगलम्।।

विशद समाधि भावना

(तर्ज-मेरा अन्तिम समय समाधि तेरे दर पे हो....)

णमोकार का उच्चारण कर, मरण समाधी हो।
जीवन रहे निरोग कोई ना, आधी व्याधी हो।।टेक।।
श्रुत ज्ञान के द्वारा भगवन्, तव अवलोकन हो।
प्रभु अर्हन्त अवस्था का शुभ, हमको दर्शन हो।।
नाश आपके ध्यान से मेरी, गति नरकादी हो।
णमोकार का..।।1।।
शास्त्राभ्यास जिनेन्द्र स्तवन, सज्जन संगति हो।
जीवों में हित-मित-प्रिय वाणी, की मेरी मति हो।।
मुक्ती की है प्रबल भावना, ना स्वर्गादी हो।
णमोकार का..।।2।।
जिनवर कथित मार्ग में श्रद्धा, मेरी विशद जगे।
श्री जिन की स्तुति गाने में, मम उपयोग लगे।।
निष्कलंक निर्मल वाणी उर, सम्यक्त्वादी हो।
णमोकार का..।।3।।
ऋषि मुनि गणधर आदिक के मैं, पाद मूल पाऊँ।
हो सन्यास मरण मेरा प्रभु, तुमको नित ध्याऊँ।।
सिद्ध प्रभू को ध्याऊँ निश दिन, काल अनादी जो।
णमोकार का...।।4।।
जिन अर्चा से कोटि जन्म के, पाप नाश होते।
जन्म-जरा-मृत्यू के कारण, भी क्षण में खोते।।
शुद्ध चेतना पा जाएँ हम, यही उपाधी हो।
णमोकार कर....।।5।।
बाल्यावस्था से अब तक जो, पुण्य बीज बोया।
कल्प लता सम तुम चरणों की, सेवा में खोया।।
उसके फल से अन्त समय में, मरण समाधी हो।
णमोकार का...।।6।।

दोनों चरण आपके मेरे, हृदय बसें स्वामी।
मेरा हृदय आपके चरणों, का हो अनुगामी॥
हे जिनेन्द्र! तुमको ही ध्याकर, निर्वाणादी हो।
णमोकार का...॥7॥

हो कर्त्तव्य परायण श्रावक, दुर्गति ना पाए।
मोक्ष लक्ष्मी भव्य जीव को, क्षण में दिलवाए॥
पुण्य से पूरित हो भक्तों की, गति स्वर्गादी हो।
णमोकार का..॥8॥

ऋषभादिक चौबीस जिनेश्वर, को हम नित ध्याएँ।
रत्नत्रय परमेष्ठी पाँचों, के हम गुण गाएँ॥
चारणादि ऋषियों के चरणों, मम गमनादी हो।
णमोकार का...॥9॥

शुद्ध आत्मा के स्वरूप का, जिनने कथन किया।
परम सिद्ध परमेष्ठी का भी, जिनने मनन किया॥
बीजाक्षर अर्हं में भगवन्, मम श्रद्धादी हो।
णमोकार का...॥10॥

मोक्ष लक्ष्मी के आलय हैं, अष्ट कर्म नाशी।
सम्यक्त्वादिक गुण के धारी, हैं शिवपुर वासी॥
परम सिद्धपद हो अब मेरा, ना उपमादी हो।
णमोकार का...॥11॥

अन्य शरण ना कोई लोक में, आप शरण पाएँ।
'विशद' भाव से नाथ! आपको, नितप्रति हम ध्याएँ॥
सिद्ध शुद्ध पद पाएँ अनुपम, नहीं उपाधी हो।
णमोकार का...॥12॥

AmMm` Ir 108 {deXgmJaOr _hmamO H$s AmaVr

(तर्ज:- माई री माई मुंडेर पर तेरे बोल रहा कागा.....)

जय-जय गुरुवर भक्त पुकारे, आरति मंगल गावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे॥
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.....

ग्राम कुपी में जन्म लिया है, धन्य है इन्दर माता।
नाथूराम जी पिता आपके, छोड़ा जग से नाता॥
सत्य अहिंसा महाव्रती की.....2, महिमा कहीं न जाये।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे॥
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.....

सूरज सा है तेज आपका, नाम रमेश बताया।
बीता बचपन आयी जवानी, जग से मन अकुलाया॥
जग की माया को लखकर के.....2, मन वैराग्य समावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे॥
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.....

जैन मुनि की दीक्षा लेकर, करते निज उद्धारा।
विशद सिंधु है नाम आपका, विशद मोक्ष का द्वारा॥
गुरु की भक्ति करने वाला.....2, उभय लोक सुख पावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे॥
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.....

धन्य है जीवन धन्य है तन-मन, गुरुवर यहाँ पधारे।
सगे स्वजन सब छोड़ दिये हैं, आतम रहे निहारे॥
आशीर्वाद हमें दो स्वामी.....2, अनुगामी बन जायें।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे॥
गुरुवर के चरणों में नमन्...4 मुनिवर के... जय...जय॥